

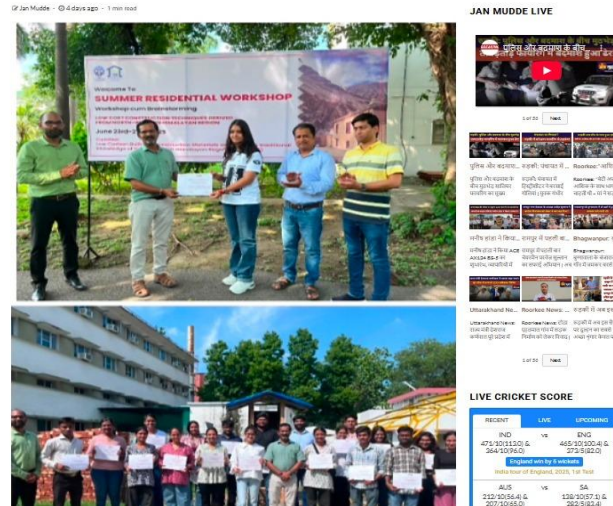


Mediaclips of June 27, 2025

# सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में 'कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर कार्यशाला का समापन



सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में 'कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर कार्यशाला का समापन



Spread the love



आरिफ़ नियाजी।

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित 'उत्तर-पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र की कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर केंद्रित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन शुक्रवार को ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, सीएसआईआर-सीबीआरआई परिसर में हुआ। यह कार्यशाला 23 जून से प्रारंभ हुई थी, जिसमें विभिन्न अभियंता, वास्तुविद, शोधकर्ता और तकनीकी पेशेवर शामिल हुए। इसमें ऐसे निर्माण तरीकों पर चर्चा की गई जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, किफायती और पर्यावरण के अनुकूल हों। प्रस्तुतियों और प्रायोगिक सत्रों के माध्यम से पारंपरिक हिमालयी तकनीकों को आधुनिक निर्माण विधियों के साथ जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया। समापन सत्र में कार्यशाला के प्रमुख बिंदुओं की संक्षिप्त समीक्षा की गई। वक्ताओं ने ऐसे निर्माण समाधान अपनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल हों और प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर सके, विशेषकर ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में। इस अवसर पर सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूंगो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक शोध और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर निर्माण क्षेत्र की कई समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। उन्होंने बताया कि संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी तकनीकों के विकास के लिए कार्य करता रहेगा। इसके पूर्व प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों को डॉ.कानूंगो , डॉ.ताबिश आलम, आर्किटेक्ट अनूप कुमार प्रसाद, और डॉ.नवीन निशांत द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ.ताबिश आलम द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी वक्ताओं, आयोजकों और उपस्थितजनों का सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। यह कार्यशाला निर्माण तकनीकों की समझ और अनुभव साझा करने का अवसर बनी, जिससे क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान तैयार करने में सहयोग मिल सकता है।

Previous

लंदौरा गाधारोना मार्ग पर नाला निर्माण को लेकर जिलाधिकारी पूर्व राज्य मंत्री मनोहर लाल शर्मा की श्रद्धांजलि सभा में उमड़ा से मिले नगर पंचायत चेयरमैन डॉ नसीम, जल्द होगा नाला जनसैलाब, विभिन्न दलों के नेता और जनप्रतिनिधि भी हुए शामिल

Next

## WEATHER

HARIDWAR  
WEATHER



27°C  
overcast clouds

Tue

Wed

Thu

Fri

Sat

Sun

Mon















35°C  
26°C

38°C  
27°C

37°C  
26°C

33°C  
26°C

33°C  
26°C

32°C  
27°C

33°C  
27°C

## POLLS

How Is My Site?

- ☐ Good
- ☐ Excellent
- ☐ Bad
- ☐ Can Be Improved
- ☐ No Comments

View Results

Polls Archive

## TRENDING POSTS CAROUSEL



Media clips of June 23, 2025

## उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों”



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, रुड़की द्वारा आयोजित “उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों” पर पांच दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 23 जून 2025 को शुरू हुआ और यह 27 जून 2025 तक जारी रहेगा, जिसमें विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को क्षेत्रीय रूप से टिकाऊ और लागत प्रभावी निर्माण विधियों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ लाया जाएगा। उद्घाटन सत्र की शुरुआत कार्यशाला के उद्देश्यों के विस्तृत अवलोकन के साथ हुई। अनूप कुमार प्रसाद ने पुष्प के साथ निदेशकों महोदय का स्वागत किया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक सुरेंद्र कुमार नेगी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, रुड़की ने कम लागत वाले समाधानों के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में निर्माण चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए उद्घाटन भाषण दिया।



## Media clips of June 6, 2025



सीबीआरआई रुड़की अपने कार्यों के लिए भारत के साथ-साथ विदेश में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं भारत सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों को धरातल पर उतरने के लिए रोजाना नए आयाम स्थापित और प्रयास करती रहती है प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण उदय भारत की एक साथ तस्वीर है सी बी आर आई विभिन्न क्षेत्रों में शोध करके कार्यों को जमीन से जुड़े हुए कार्यों को आम आदमी तक पहुंचाने के कार्य करती है यहां के वैज्ञानिक और रोजाना नए शोध कर करके भारत को एक नई पहचान देते हैं

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पीएमएवाई-जी, एमओआरडी के तहत क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में गोवा के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत ने मुख्य अतिथि के रूप में और मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री पेम्मासानी चंद्रशेखर ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया।

कार्यशाला में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने, नवीन समाधानों की खोज करने और पीएमएवाई-जी योजना के लिए आगे का रास्ता तय करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

कार्यशाला के दौरान ग्रामीण आवास महानिदेशक और रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पीएमएवाई-जी मिशन की सफलता में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अपार योगदान को स्वीकार किया और उसकी सराहना की। 2016 में कार्यक्रम की स्थापना के बाद से, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने निम्नलिखित में महत्वपूर्ण योगदान दिया है:



1 लाख ग्रामीण राजमिस्ती का प्रशिक्षण

50 लाख से अधिक घरों में सीएसआईआर-सीबीआरआई आवास प्रकारों को अपनाना

बहु-खतरनाक प्रतिरोधी, किफायती ग्रामीण (एआर) अनुरूप डिजाइनों का विकास।

3डी आरामदायक आवास विकल्पों को बढ़ावा देना

ग्रामीण आवास समर्थानों में वृद्धिशील ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज विस्तार को सक्षम करना।

हम अपनी टीम के सदस्यों के उल्लेखनीय प्रयासों को बधाई देते हैं और उनकी सराहना करते हैं:

एआर. एस के नेगी, डॉ अजय चौरासिया, एर। आशीष पिप्पल, अर. नवीन निशांत, अर. आकाश पांडे, अर. उदित तनेजा, अर. विभव बाजपेयी, अर. पूरे भारत में ग्रामीण आवास को बदलने में निरंतर उत्कृष्टता और प्रभाव के लिए मस्कन, श्री महेंद्र सिंह, श्री सुखबीर शर्मा और श्री राजीव बंसल ने अपनी समर्पित टीमों के साथ मिलकर अपनी निरंतर उत्कृष्टता और प्रभाव डाला।

## Media clips of June 5, 2025

# पर्यावरण संरक्षण हम सब की जिम्मेदारी, नरेंद्र पन्त डीएसपी



रुड़की सी बी आर आई परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पहुंचे श्री नरेंद्र पंत , डीएसपी रुड़की और विश्व पर्यावरण दिवस के मुख्य अतिथि, डॉ डी पी कानूनगो जी, आज के कार्यवाहक निदेशक सीबीआरआई, डॉ आर के वर्मा, समिति के अध्यक्ष, सभी वरिष्ठ वक्ताओं और छात्रों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए व्याख्यान दिए

कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना और हरित भारत के संकल्प को साकार करना था। इस अवसर पर फलदार, छायादार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया, जिनमें पीपल, नीम, आम, बेल, अशोक और तुलसी प्रमुख रहे।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते प्रदूषण के बीच हमें प्रकृति के संरक्षण की ओर गंभीरता से ध्यान देना होगा। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से अपील की कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल भी करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण मिल सके।

उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि प्रकृति हमारी ज़िम्मेदारी है। वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन देने वाला प्रयास है।

कार्यक्रम का समापन देश के पर्यावरण की रक्षा हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए किया गया

## Media clips of Valedictory ceremony May 15, 2025

### स्वच्छता सबका दायित्व'प्रो. आर. प्रदीप कुमार , निदेशक सी बी आर आई



By Sahara Live News

© MAY 15, 2025



"स्वच्छता सबका दायित्व" थीम के तहत भारत सरकार की पहल स्वच्छता पखवाड़ा 2025 चल रहे उत्सव के हिस्से के रूप में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने अपने दो सप्ताह के स्वच्छता अभियान (1-15 मई, 2025) का समापन 15 मई, 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित एक समापन समारोह के साथ किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. लीना चौरसिया और डॉ. नीरज जैन ने किया। डॉ. लीना चौरसिया ने सम्मानित सभा का स्वागत किया और पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत किया, जिसमें वृक्षारोपण अभियान, सीएसआईआर-सीबीआरआई सदस्यों के लिए एक नारा प्रतियोगिता, सीएसआईआर-सीबीआरआई कर्मचारियों और बाल विद्या मंदिर स्कूल के छात्रों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, बिजली के उपकरणों की सफाई और पूरे संस्थान में व्यापक सफाई अभियान आदि शामिल थे। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और सभी सम्मन्वयकों, प्रतिभागियों और सहयोगी कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने सतत विकास के महत्व पर जोर दिया, युवाओं को अपशिष्ट प्रबंधन के लिए अभिनव समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया और बाहरी सफाई के साथ-साथ मानसिक शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "स्वच्छता पखवाड़े के बाद हमारे स्थान पर है।"



## Media clips of May 13, 2025

**समाज पर तकनीकी का बड़ा प्रभाव, निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार सीबीआरआई**

By Sahara Live News  
© MAY 13, 2025

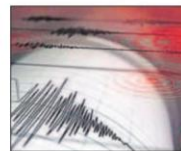



सीबीआईआर - केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की  
CBRI - Central Building Research Institute, Roorkee  
National Technology Day  
13 May, 2025

सीबीआईआर-सीबीआईआर ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025 का तकनीकी हस्तारण एवं नवाचार प्रदर्शनी के साथ किया उत्सव  
रुड़की, 13 मई 2025

## आधुनिक उपकरणों का प्रयोग जरूरी

### चर्चा



रुड़की, कार्यालय संवाददाता। 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में सीबीआईआर में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। खंडहर से लचीलापन सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी राय दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि भूकंप और भूस्खलन के जनहानि से बचने के लिए आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करना होगा। हेल्थ और एजुकेशन सेंटर को और मजबूत करना होगा। कार्यक्रम की शुरुआत सीबीआईआर के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने की। इसके बाद पैनल चर्चा हुई। चर्चा का मुख्य निष्कर्ष यह

निकला कि स्थानीय इंजीनियरों, राजमिस्त्रों और अधिकारियों के बीच क्षमता निर्माण को मजबूत करने की तत्काल आवश्यकता है। भूकंप सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम को संशोधित करना है। विशेषज्ञों ने कमजोर इमारतों, विशेष रूप से स्कूलों, अस्पतालों और विरासत संरचनाओं को फिर से तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। पैनल ने भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के जोखिमों को नियोजन में सम्मिलित करते हुए, बहु-खतरे जोखिम

क्षेत्रीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भारतीय मानकों (आईएस कोड) को नियमित रूप से अपडेट करने और गैर-संरचनात्मक तत्वों जैसे कि इन्फिल दीवारों और फिक्स्चर पर अधिक ध्यान देने का भी आह्वान किया। जीआईएस, ड्रोन और त्वरित ऑकलन जैसे आधुनिक उपकरणों के उपयोग को भविष्य की तैयारियों के लिए आवश्यक माना गया।

कार्यक्रम का संचालन सीबीआईआर के वैज्ञानिक एसके नेगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया। इस दौरान आशीष पिप्लव, मिनी दलबेहरा, डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, आशीष कपूर, समीर यादव, अमित कुश, प्रो. सीवी आर मूर्ति, प्रो. डी श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, अनुप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेण गोस्वामी आदि शामिल रहे।

**CBRI ने किया पोर्टेबल हाउस तैयार**

NEWS 18  
उत्तराखंड

TOP 10  
पहाड़

8

NEWS UPDATE

टैंपो और बाइक की आमने-सामने टक्कर

चैनल यहां देखें > Digital-358, Mishra Cable Network-259 • Blue Sky Network-32

**CBRI ने किया पोर्टेबल हाउस तैयार**

NEWS 18  
उत्तराखंड

TOP 10  
पहाड़

8

NEWS UPDATE

चैनल यहां देखें > work-218, Om Sai Cable Network-311 • Skynexus-144, Firozab.

**CBRI ने किया पोर्टेबल हाउस तैयार**

NEWS 18  
उत्तराखंड

TOP 10  
पहाड़

8

NEWS UPDATE



## सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर की चर्चा

Jan Mudde · 3 days ago · 1 min read



### आरिफ़ नियाज़ी।

रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं।

## खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 के नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक सीएसआईआर-सीबीआरआई में हुई परीचर्चा

गोल्डन टाइम्स रुड़की (आरिफ़ नियाज़ी) रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं। दरअसल 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने 13 मई, 2025 को "खंडहर से लचीलापन" के पुनर्निर्माण के लिए एक कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर



सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर प्रदीप कुमार के अध्यक्षीय सम्बोधन से हुई, जिसके बाद डॉ. अजय चौरसिया ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तहत नेपाल में स्कूलों और अस्पतालों के पुनर्निर्माण में सीबीआरआई के योगदान पर प्रस्तुति दी। इन प्रयासों को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष वृत्तचित्र फिल्म, "खंडहर से लचीलापन" भी जारी की गई। इस कार्यक्रम में भारत और नेपाल के प्रमुख विशेषज्ञ, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और नीति निर्माता पुनर्निर्माण प्रयासों पर विचार करने और सुरक्षित बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सबक साझा करने के लिए एक साथ आए। पैनल में प्रो. सी.वी. आर. मूर्ति, प्रो. डी. श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, श्री अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, श्री जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रुपेन गोस्वामी, डॉ. अजय चौरसिया, श्री एसके नेगी और डॉ. डीपी कानूनगो जैसे प्रसिद्ध विशेषज्ञ शामिल थे। शेष पृष्ठ 2 पर.....

**KHABAR UPDATE**
**खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से**
**NAI AAWAZ**

**आरिफ़ नियाज़ी**

**BREAKING NEWS**
**सेना के साहस को सलाम करने आदमपुर एयरबेस पहुंचे पीएम मोदी**

# ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदमःपंत

## कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सरलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसे चुनौतियों से निपटने का बादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्डीसल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजिनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

## सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनों की केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिज़ाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, चिंशिट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसेवाह केरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। (हिन्दुस्तान)

# ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदमःपंत

## कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सरलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसे चुनौतियों से निपटने का बादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्डीसल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजिनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

## सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनों की केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिज़ाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, चिंशिट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसेवाह केरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

## ई ट्रैक्टर, ई टिलर का डेमो

TOP 10 पहाड़



## ई ट्रैक्टर, ई टिलर का डेमो

TOP 4 पहाड़





## आधुनिकीकरण व विरासत संरक्षण के बीच संतुलन जरूरी

[illegible][illegible][illegible][illegible]



## सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की में सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और पुनरुद्धार पर चल रही चार दिवसीय कार्यशाला और प्रदर्शनी “भगवान एक खोज”

उत्खनन अब केवल खुदाई नहीं है-यह विज्ञान के माध्यम से सभ्यता को डिक्कोड कर रहा है, सिनेली उत्खनन पर प्रो. (डॉ.) संजय मंजुल

रुड़की (हैपिनेस हास) : भारत की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने के लिए सांस्कृतिक विरासत और विज्ञान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की में सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और पुनरुद्धार पर चार दिवसीय कार्यशाला और प्रदर्शनी “भगवान एक खोज” के आयोजन का शुभारंभ हुआ। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) संजय मंजुल ने बताया कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है।

प्रो. मंजुल ने कहा कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है।

कार्यशाला में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) संजय मंजुल ने बताया कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है।



कार्यशाला में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) संजय मंजुल ने बताया कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है।

कार्यशाला में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) संजय मंजुल ने बताया कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है।

कार्यशाला में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) संजय मंजुल ने बताया कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और पुनरुद्धार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो विज्ञान और इतिहास के बीच के संबंध को दर्शाता है।

Media Print of March 26, 2025

## सीमेंट निर्माण में होने वाले प्रदूषण में कमी लाएगी तकनीक

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने विकसित फ्लाइंग ऐश (उड़न राख)-जियस आधारित प्लास्टर की तकनीक का हस्तंतरण किया है। इस तकनीक से सीमेंट निर्माण में होने वाले पर्यावरण प्रदूषण में कमी आएगी और फ्लाइंग ऐश के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।

मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डा. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि इस तकनीक में फ्लाइंग ऐश को बड़ी मात्रा में उपयोग करके जियस एवं अन्य अवयवों के साथ मिलकर सस्ते एवं टिकाऊ प्लास्टर को तैयार हो में विकसित किया गया। यह पैमाने पर द्रव प्लास्टर के निर्माण व प्रयोग के लिए इस तकनीक का हस्तंतरण किया गया है। उन्होंने बताया कि द्रव प्लास्टर के सीमेंट के विकल्प के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। जिससे सीमेंट निर्माण में होने वाले पर्यावरण प्रदूषण में कमी आएगी और फ्लाइंग ऐश के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा। जैक थर्मल प्लांट से निकलने वाले अपशिष्ट हैं और पर्यावरण के लिए एक बड़ी समस्या है। उन्होंने बताया कि द्रव प्लास्टर के उपयोग से फ्लाइंग ऐश के निपटारे में मदद के साथ-साथ सीमेंट निर्माण में प्रयोग होने



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने विकसित फ्लाइंग ऐश (उड़न राख)-जियस आधारित प्लास्टर की तकनीक का हस्तंतरण किया है।

वाले प्राकृतिक संसाधनों जैसे लव्डस्टोन, कोयला आदि को भी बचकर कामें फुटडिस्ट को कम किया जा सकेगा। परीक्षण प्रमुख एवं प्रमुख विज्ञानी डा. नेमाज जैन ने बताया कि द्रव प्लास्टर के निर्माण में 40-50 प्रतिशत फ्लाइंग ऐश का प्रयोग किया गया है। जिससे कि उनकी लागत सीमेंट प्लास्टर की तुलना में कम होगी व प्लास्टर की कमी के लिए प्रयोग होने वाले पानी को भी बचाया जा सकेगा।

उन्होंने बताया कि फ्लाइंग ऐश जियस कम्पोजिट प्लास्टर एक हल्के वजन वाला प्लास्टर है। जिससे कम की मोटी दीवारें दृश्यमान बनाई जा सकेगी। जियस का प्रयोग होने के कारण ये प्लास्टर ध्वनिरोधी, तापमान प्रतिरोधी, अधिक फ्लेवट वाले, सस्ते, टिकाऊ व प्रदूषण रहित प्लास्टर है। इनकी सब कारणों से द्रव प्लास्टर का उपयोग बड़े पैमाने पर करने

की आवश्यकता है। ताकि भारत को नेट जीरो इमिशन का लक्ष्य प्राप्त करने में आसानी हो सके। इस दौरान संस्थान के निदेशक ने एमएससी स्टेशन एंड पावर लिमिटेड रायदा, छत्रोसाह के डीजीएम डा. संजय परीदार को तकनीक का हस्तंतरण किया। इस मौके पर प्रमुख विज्ञानी डा. एस्के पाणिग्राही डा. आरक यमा, डा. सोनु, डा. लीन चौरसिया, हनुमद, डा. श्रीनिवास आदि थे।

# मिश्रित प्लास्टर तकनीक हस्तांतरित की

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई रुड़की ने आंतरिक अनुप्रयोगों के लिए उच्च मात्रा फ्लाइ ऐश (40-50 प्रतिशत) जिप्सम मिश्रित प्लास्टर के विकास पर एक तकनीक मंगलवार को हस्तांतरित की है। तकनीक एमएसपी स्टील्स एंड पॉवर्स लिमिटेड रायगढ़ छत्तीसगढ़ को हस्तांतरित की गई है। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने तकनीक हस्तांतरित की।

इस तकनीक के मुख्य प्रवर्तक डॉ. नीरज जैन, डॉ. सौमित्र मैती और डॉ. आर के वर्मा हैं। उन्होंने बताया कि इस तकनीक में फ्लाइ ऐश की उच्च मात्रा यानी 40 से 50 प्रतिशत का उपयोग साधारण पोर्टलैंड सीमेंट और प्लास्टर ऑफ पेरिस के साथ निश्चित मात्रा में



रुड़की सीबीआरआई ने मंगलवार को आंतरिक अनुप्रयोगों के लिए उच्च मात्रा फ्लाइ ऐश जिप्सम मिश्रित प्लास्टर के विकास पर एक तकनीक हस्तांतरित की। • हिन्दुस्तान एडिटिव्स के साथ किया जाता है। मिश्रण को समान रूप से मिश्रित प्लास्टर बनाने के लिए रिबन मिश्रण में मिश्रित किया जाता है। इस प्लास्टर का उपयोग इमारतों के अंदरूनी हिस्सों में सीमेंट प्लास्टर के प्रतिस्थापन के लिए प्रीमिक्स प्लास्टर के रूप में रेत के साथ सिंगल कोट या डबल कोट के रूप में किया जा सकता है। तकनीक सरकार के शुद्ध शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त करने और कोयले जैसे प्राकृतिक संसाधनों की बचत में मदद करेगी।

# इंजीनियरों को दी इमारतों के लिए अग्नि सुरक्षा उपायों की जानकारी

## सीबीआरआई में तीन दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों और इमारतों के लिए अग्नि सुरक्षा उपायों का डिजाइन विषय पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। 21 मार्च तक चलने वाला यह आयोजन सीएसआईआर एकीकृत कौशल पहल के तहत किया जा रहा है।

उद्घाटन सत्र में निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूकता और बिल्डिंग सेक्टर में फायर सेफ्टी को महत्व देने पर जोर दिया। साथ ही लीडरशिप क्वालिटी को बढ़ावा देने की बात कही। कार्यक्रम में देशभर से लगभग 40 इंजीनियर और छात्र हिस्सा ले रहे हैं। इसमें उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और नागालैंड जैसे विभिन्न राज्य अग्निशमन सेवाओं के साथ-साथ एमईएस, बैंक,



सीबीआरआई में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते निदेशक। - संवाद

अस्पताल आदि से जुड़े हुए हैं।

वक्ताओं ने कहा कि शहरीकरण की गति तेजी से बढ़ रही है। पिछले दो दशकों में इमारतों के निर्माण में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। हाल ही में आग लगने की कई घटनाएं हुई हैं जिसने ऐसे महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों में अग्नि सुरक्षा के बारे में चिंताएं बढ़ा दी हैं। इस दौरान जीवन रक्षा

के तहत बनाई गई सक्रिय प्रणालियों, निष्क्रिय प्रणालियों के लिए अग्नि कोड एवं डिजाइन आदि की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का समन्वयन वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. शोब जैन ने किया। इस मौके पर मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद डॉ. ताबिश, डॉ. चंदन, डॉ. राज कुमार, भावना, संस्कृति आदि मौजूद रहीं।



# Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई में पुष्प प्रदर्शनी का भव्य आयोजन, पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के महत्व को किया रेखांकित

Manoj kumar 2 hours ago

0 86 1 minute read



इस अवसर पर सीबीआरआई परिवार के बच्चों द्वारा फैसी ड्रेस प्रस्तुति, श्रीमती प्रियंका द्वारा गीत गायन और रोचक किज भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम का सफल आयोजन एस के नेगी और डॉ. डी. पी. कानूनगो जी ने किया।

## पर्यावरण संरक्षण व हरित क्षेत्र के महत्व पर जोर

**रुड़की (एसएनबी)।** सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पुष्प प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया। इसमें प्रकृति प्रेम, रचनात्मकता और सामुदायिक सोहार्द का अद्भुत संगम देखने को मिला। मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर करुण प्रताप सिंह, कमांडेंट बीईजी तथा उनकी निधि सिंह, निदेशक, परिवार कल्याण संगठन, रुड़की सैन्य स्टेशन का स्वागत सीबीआरआई निदेशक द्वारा किया गया। सीबीआरआई निदेशक ने प्रोग्राम और सीबीआरआई में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी के बारे में बताया।

सीबीआरआई निदेशक ने पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के महत्व को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि ने शहरी परिदृश्य में हरित विकास को बढ़ावा दिए जाने और इसका महत्व बताया। इसके बाद मुख्य अतिथि एवं निधि सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। उन्होंने पुष्प प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। सभी अतिथियों ने पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इसके बाद विजेताओं को सम्मानित किया गया। समाजसेवी मनीषा बत्रा, मेयर अनीता अग्रवाल, आईआईटी रुड़की निदेशक को पत्नी हेमा पंत, पूर्णिमा परिदा और सारला श्री ने विभिन्न श्रेणियों में विजेताओं को पुरस्कृत किया।



रुड़की : पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन करते सीबीआरआई निदेशक व अन्य।

इस अवसर पर सीबीआरआई परिवार के बच्चों ने फैसी ड्रेस प्रस्तुति, प्रियंका ने गीत गायन की प्रस्तुति दी। इस दौरान रोचक किज भी आयोजित हुई। कार्यक्रम का संचालन डा. चन्दन स्वरूप मीना व सामूहिक प्रस्तुति ने माहौल को देशभक्ति से भर दिया।

सीबीआरआई ने पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन

अमन ने किया। डा. लीना ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों आयोजकों का धन्यवाद व्यक्त किया। अंत में राष्ट्रीय गान को देशभक्ति से भर दिया।

दुधौरा  
6-26 AM 06-32 PM

राष्ट्रीय  
6-26 AM 06-32 PM

राष्ट्रीय  
6-26 AM 06-32 PM

राष्ट्रीय  
6-26 AM 06-32 PM

## सीबीआरआई ने किया भव्य पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन

मदरलैण्ड संवाददाता



रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पुष्प प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया। इसमें प्रकृति प्रेम, रचनात्मकता और सामुदायिक सोहार्द का अद्भुत संगम देखने को मिला। मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर करुण प्रताप सिंह, कमांडेंट बीईजी तथा उनकी निधि सिंह, निदेशक, परिवार कल्याण संगठन, रुड़की सैन्य स्टेशन का स्वागत सीबीआरआई निदेशक द्वारा किया गया। सीबीआरआई निदेशक ने प्रोग्राम और सीबीआरआई में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी के बारे में बताया। सीबीआरआई निदेशक ने पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के महत्व को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि ने शहरी परिदृश्य में हरित विकास को बढ़ावा दिए जाने और इसका महत्व बताया। इसके पश्चात, मुख्य अतिथि एवं श्रीमती निधि सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए और उन्होंने पुष्प प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन किया।

सभी अतिथियों ने पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन किया, जहाँ विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्पों और रचनात्मक बागवानी के शानदार नमूने प्रदर्शित किए गए। इसके उपरान्त पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न श्रेणियों के विजेताओं को सम्मानित किया गया। समाजसेवी मनीषा बत्रा, मेयर अनीता अग्रवाल, आईआईटी रुड़की निदेशक को पत्नी हेमा पंत, पूर्णिमा परिदा और सारला श्री ने विभिन्न श्रेणियों में विजेताओं को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर सीबीआरआई परिवार के बच्चों ने फैसी ड्रेस प्रस्तुति, प्रियंका ने गीत गायन की प्रस्तुति दी। इस दौरान रोचक किज भी आयोजित हुई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. चन्दन स्वरूप मीना व अमन ने किया। डॉ. लीना ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों और आयोजकों का धन्यवाद व्यक्त किया। अंत में राष्ट्रीय गान की सामूहिक प्रस्तुति ने माहौल को देशभक्ति से भर दिया।

सीबीआरआई रुड़की में पुष्प प्रदर्शनी 2025 का आयोजन किया गया • सागर-संस्थान

## पुष्प प्रदर्शनी में दिखा प्रकृति प्रेम और रचनात्मकता का संगम

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में पुष्प प्रदर्शनी 2025 का आयोजन किया गया। जिसमें प्रकृति प्रेम, रचनात्मकता और सामुदायिक सोहार्द का अद्भुत संगम देखने को मिला। संस्थान परिसर में मंगलवार को आयोजित पुष्प प्रदर्शनी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बीईजी के कमांडेंट ब्रिगेडियर करुण प्रताप सिंह और परिवार कल्याण संगठन, रुड़की सैन्य स्टेशन की निदेशक निधि सिंह ने शहरी परिदृश्य में हरित विकास को बढ़ावा दिए जाने के महत्व के बारे में बताया। वहीं सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने

संस्थान में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी के बारे में बताते हुए पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के महत्व को रेखांकित किया। इसके बाद अतिथियों ने पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन किया। जहाँ विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्पों और रचनात्मक बागवानी के शानदार नमूने प्रदर्शित किए गए। वहीं संस्थान के स्टाफ सदस्यों के बच्चों ने फैसी ड्रेस प्रस्तुति दी। रोचक किज भी आयोजित किया गया। वहीं प्रियंका ने गीत गायन किया। कार्यक्रम का संचालन डा. चन्दन स्वरूप मीना और अमन ने किया। इस मौके पर महापौर अनीता अग्रवाल, हेमा पंत, पूर्णिमा परिदा, सारला श्री, डा. लीना आदि उपस्थित रहे।







इस अवसर पर सीवीआरआई परिवार के बच्चों द्वारा फैसी ड्रेस प्रस्तुति, श्रीमती प्रियंका द्वारा गीत गायन और रोचक किज भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम का सफल आयोजन एस के नेगी और डॉ. डी. पी. कानूनगो जी ने किया।



जिसके बाद डॉ. लीना ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों और आयोजकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के अंत में, राष्ट्रीय गान की सामूहिक प्रस्तुति ने माहौल को देशभक्ति से भर दिया।

**Media print of March 16, 2025**



## शून्य से कम तापमान वाले क्षेत्रों में सौर ऊर्जा से मिलेगा गर्म पानी

जगरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की की ओर से हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के गांव कल्पा में नौ हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित बालिका आश्रम को सौर तापीय ऊर्जा से गर्म पानी की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इसके लिए संस्थान ने अत्यधिक ठंडे मौसम के लिए ऊर्जा-कुशल सौर-सहायता प्राप्त हीट पंप तकनीक विकसित की है। इस तकनीक से पर्वतीय क्षेत्रों को काफी मदद मिलेगी।



बालिका आश्रम में लगाया गया सौर सहायता प्राप्त हीट पंप • सहाय संस्थान

संस्थान के निदेशक आर प्रदीप कुमार एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक एसके नेगी ने बताया कि उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्ष भर गर्म पानी की आवश्यकता रहती है। वहीं, पारंपरिक वाटर हीटर अत्यधिक ऊर्जा की खपत करते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए तकनीक विकसित की गई है। यह प्रणाली शून्य और इससे कम तापमान से कुशलतापूर्वक ऊष्मा स्थानांतरण में सक्षम है। जिससे ठंडे मौसम में भी लगातार गर्म पानी की आपूर्ति सुनिश्चित होगी। इस तकनीक में एक नवीन वाष्पीकरण ट्यूब का भी

इस्तेमाल किया है, जिससे इसकी दक्षता में सुधार हुआ है। इसमें बिजली की खपत को 60 से 75 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। यह तकनीक आवासीय उपयोग के अलावा व्यवसायिक अपार्टमेंट और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए भी उपयुक्त है। यह तकनीक कार्बन उत्सर्जन को कम करने और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को भी कम करती है। तकनीक विकसित करने में विज्ञानी डा. चंदन स्वरूप मीना और उनके साथी भी शामिल रहे।



हिन्दुस्तान

www.livehindustan.com

अपना रुड़की

## ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सौर ऊर्जा से पानी गर्म करना होगा आसान

रुड़की, संवाददाता। ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्ष भर गर्म पानी की आवश्यकता और पारंपरिक वाटर हीटर की वजह से अत्यधिक ऊर्जा की खपत की समस्या का सीबीआरआई (सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट) रुड़की ने समाधान निकाल लिया है। सीबीआरआई ने अत्यधिक ठंडे मौसम के लिए ऊर्जा कुशल सौर सहायता प्राप्त हीट पंप तकनीक विकसित की है। यह प्रणाली

■ सीबीआरआई ने ऊर्जा कुशल सौर सहायता प्राप्त हीट पंप तकनीक विकसित की  
■ ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्ष भर गर्म पानी की आवश्यकता को देखते हुए किया रिसर्च  
■ तकनीक का पहला परीक्षण हिमाचल के कल्पा स्थित बालिका आश्रम में किया गया



सीबीआरआई रुड़की ने सौर ऊर्जा से पानी गर्म करने की नई तकनीक विकसित की।

तकनीक का एकीकृत स्वरूप है। इस प्रणाली के संचालन के लिए एक नवीन वाष्पीकरण ट्यूब का भी इस्तेमाल किया गया है। जिससे इसकी दक्षता में सुधार हुआ है।

इस तकनीक का पहला क्षेत्रीय परीक्षण हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के कल्पा स्थित बालिका आश्रम में किया गया। यह आश्रम नौ हजार फीट की ऊंचाई पर है। जहां

का तापमान अक्सर शून्य से नीचे चला जाता है। यह कार्य सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार और एफईई रिसर्च ग्रुप के प्रमुख एसके नेगी के निरीक्षण

में किया गया। इस तकनीक के उचित इस्तेमाल से बिजली की खपत को 60 प्रतिशत से 75 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। भविष्य में उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए इसे आर्थिक रूप से लाभदायक विकल्प बनाती है। आवासीय उपयोग के अलावा, यह तकनीक व्यवसाय अपार्टमेंट और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए भी उपयुक्त है। यह तकनीक कार्बन उत्सर्जन को कम करने और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करता है। इस तकनीक को सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना और उनके साथियों ने तैयार किया है।

## 9000 फीट की ऊंचाई पर स्थित बालिका आश्रम में सौर ऊर्जा से मिलेगा गर्म पानी

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। सीबीआरआई (केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान) रुड़की की ओर से हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के गांव कल्पा में 9000 फीट की ऊंचाई पर स्थित बालिका आश्रम को सौर तापीय ऊर्जा से गर्म पानी की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इसके लिए संस्थान ने अत्यधिक ठंडे मौसम के लिए ऊर्जा-कुशल सौर-सहायता प्राप्त हीट पंप तकनीक विकसित की है।

संस्थान के निदेशक आर प्रदीप कुमार एवं वैज्ञानिक एसके नेगी ने बताया कि उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्ष भर गर्म पानी की आवश्यकता रहती है। वहीं, पारंपरिक वाटर हीटर अत्यधिक ऊर्जा की खपत करते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए तकनीक विकसित की गई है। यह प्रणाली शून्य और इससे कम तापमान से कुशलतापूर्वक ऊष्मा स्थानांतरण में सक्षम है। इससे ठंडे मौसम में भी लगातार गर्म



सीबीआरआई की ओर से हिमाचल में लगाया गया सौर ऊर्जा आधारित प्लांट। स्रोत : संस्थान

पानी की आपूर्ति सुनिश्चित होगी। इस तकनीक में एक नवीन वाष्पीकरण ट्यूब का भी इस्तेमाल किया है गया जिससे इसकी दक्षता में सुधार हुआ है।

इसमें बिजली की खपत को 60 से 75 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। यह तकनीक आवासीय उपयोग के

अलावा व्यवसायिक अपार्टमेंट और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए भी उपयुक्त है। यह तकनीक कार्बन उत्सर्जन को कम करने और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को भी कम करती है। तकनीक विकसित करने में वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना और उनके साथी भी शामिल रहे।



## Media Print of National Science Day- March 01, 2025

### Roorkee: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन, मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में भारतीय विज्ञान और अनुसंधान के महत्व को किया रेखांकित



Manoj kumar · 2 days ago

0 213 3 minutes read



**रुड़की।** सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह सफलता के साथ संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, छात्रों, शोधकर्ताओं, पेशेवरों और विज्ञान के प्रति उत्साही लोगों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई।



इस उत्सव में विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के प्रति गहरी समझ और सराहना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आकर्षक गतिविधियों की एक श्रृंखला प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत बाल विद्या मंदिर स्कूल में नए भवन के उद्घाटन से हुई, जिसके बाद विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व हेतु भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना विषय पर चर्चित प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुतियां दी गईं।



इससे पूर्व कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. एम.के. गोयल और संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार और महाप्रबन्धी डॉ. अजय चौरसिया, एस.के. नेगी और कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश चंद्र थपलियाल के द्वारा संयुक्त रूप से दीया प्रचलन से हुआ। इसके बाद संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण दिया, जिसमें उन्होंने विज्ञान और नवाचार के बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डाला। इस अवसर 'एक स्वास्थ्य, एक विश्व' (OHOW 2025) विवरणिका का विमोचन डॉ. अजय चौरसिया द्वारा विस्तृत जानकारी के साथ किया गया। इसी के साथ डॉ. किशोर ने जलवायु अनुकूल भवन डिज़ाइन दिशानिर्देश विवरणिका का विमोचन मुख्य अतिथि द्वारा किया। यह पुस्तक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में टिकाऊ, ऊर्जा-कुशल इमारतों के निर्माण, पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक प्रगति के साथ मिश्रित करने के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य कर सकती है।



इसके बाद, आशीष और चंद्रभान पटेल ने भी गुणवत्ता ऑडिट टैगबोर्ड प्रहरी का उद्घाटन मुख्य अतिथि द्वारा किया गया इसके अलावा, संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के द्वारा दो नवीन तकनीकों को लोकजगत के क्षेत्र में उतारने के लिए प्रस्तुत किया जिनमें एक (1) टेक्नोलॉजी उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए मंड ब्लॉक मशीन और जिसकी विस्तृत जानकारी डॉ. रवींद्र बिष्ट द्वारा दी गई और उन्होंने बताया कि उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए 'मंड ब्लॉक मशीन' तकनीक दूरस्थ, पहाड़ी और कठोर भूभागों में निर्माण से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने हेतु एक स्वायी और किरायाती समाधान प्रदान करती है। यह मशीन एक यांत्रिक उत्पादन प्रणाली का उपयोग करती है, जो प्रति बैच 2 ब्लॉक तैयार करती है और केवल दो ऑपरेटरों के साथ एक शिफ्ट में 1000 ब्लॉक तक उत्पादन करती है।



एवं (2) ऊर्जा-कुशल सौर-सहायता प्राप्त ऊष्मा पम्प वॉटर हीटर जो गर्म पानी की उपलब्धता को अधिक टिकाऊ और किरायाती बनाएगा जिसकी विस्तृत जानकारी डॉ. चन्दन स्वरूप मीना द्वारा दी गई। यह दूसरी उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पारंपरिक जल हीटिंग प्रणालियां ऊर्जा की दृष्टि से अत्यधिक खपत करने वाली होती हैं।



इस समस्या को हल करने के लिए, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने अत्यधिक मौसम परिस्थितियों के लिए एक समाधान पेश किया है, जैसे कि तेज-तदाश्, सियाचिन, हिमाचल, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र। यह प्रणाली अत्यधिक ठंडे पर्यावरण तापमान (10°C से -25°C तक) से गर्मी निकाल सकती है। यह तकनीक बिजली की खपत को 60% से 75% तक कम कर सकती है, जो स्थान और साइट के आधार पर इलेक्ट्रिक गीजरों की तुलना में होती है।





इसे एक बार निवेश के रूप में स्थापित किया जा सकता है, जिसके बाद यह लंबी अवधि के लाभ और पर्याप्त बिजली बचत प्रदान करती है। बढ़ती हुई बिजली की लागत और जलवायु परिवर्तन और कार्बन उत्सर्जन पर बढ़ती वैश्विक चिंताओं के साथ, यह नवाचारी तकनीक एक स्थिर समाधान पेश करती है जो जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करती है। इसके अलावा, इसका कम-कार्बन फुटप्रिंट और घटित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन इसे पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार समाधान बनाता है जो भारत के नवीनीकरण ऊर्जा और स्थिरता लक्ष्यों के अनुरूप है। इसके बाद मुख्य अतिथि का परिचय एस.के. नेगी द्वारा दिया गया।



मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में भारतीय विज्ञान और अनुसंधान के महत्व को रेखांकित किया। इसके बाद मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरण डॉ। राजेश कुमार के सहायता से किया गया, जिसमें विज्ञान कार्यक्रम का समापन डॉ. हेमलता द्वारा धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

**राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन**

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, छात्रों, शोधकर्ताओं, पेशेवरों और विज्ञान के प्रति उत्साही लोगों ने उत्साहपूर्ण भागीदारी की। उत्सव में विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के प्रति गहरी समझ और सराहना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आकर्षक गतिविधियों की श्रृंखला प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत बाल विद्या मंदिर स्कूल में नए भवन के उद्घाटन से हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. एमके गोयल, संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार, डॉ. अजय चौरसिया, एसके नेगी और कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. प्रकाश चंद्र थपलियाल ने दीप प्रज्ज्वलन कर की। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने दो नवीन तकनीकों को लोकजगत के क्षेत्र में उतारने के लिए प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने भारतीय विज्ञान और अनुसंधान के महत्व को रेखांकित किया। बाद में मुख्य अतिथि ने डॉ. राजेश कुमार की सहायता से पुरस्कार वितरण किया। कार्यक्रम का समापन डॉ. हेमलता के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

## सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने बनाई मड ब्लॉक मशीन, पहाड़ी क्षेत्रों के लिए साबित होगी 'मिल का पत्थर' - NATIONAL SCIENCE DAY 2025

रुड़की स्थित केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में विज्ञान दिवस आयोजित. मड ब्लॉक मशीन और सोलर असिस्टेड हीट पंप बेड वॉटर हिटर का हुआ उद्घाटन.



राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह (photo-ETV Bharat)



By ETV Bharat Uttarakhand Team  
Published : Mar 1, 2025, 6:52 PM IST

f x 3 Min Read

**रुड़की:** केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन किया गया. जिसमें वैज्ञानिकों, छात्रों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया. इस दौरान सीबीआरआई (Central Building Research Institute) के निदेशक आर प्रदीप कुमार ने मड ब्लॉक मशीन और सोलर असिस्टेड हीट पंप बेड वॉटर हिटर का उद्घाटन किया. मड ब्लॉक मशीन की तकनीकी से दूरस्थ और ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भवन बनाने में काफी फायदेमंद साबित होगी.

सीबीआरआई के निदेशक आर प्रदीप कुमार ने बताया कि मड ब्लॉक मशीन की तकनीक से उच्च ऊंचाई और पहाड़ी वाले क्षेत्रों में दूरस्थ और ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भवन बनाने में काफी फायदेमंद साबित हो सकेगी. उन्होंने बताया कि ऊंचाई वाले क्षेत्रों में मटेरियल पहुंचाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. इसलिए यह मशीन एक दिन में 1000 से ज्यादा ब्लॉक (ईंटें) बना सकती है.

आर प्रदीप कुमार ने बताया कि मड ब्लॉक मशीन से ब्लॉक यानी की ईंट बनाने में लागत भी कम आती है. सोलर असिस्टेड हीट पंप बेड वॉटर हिटर जो -20 से -30 डिग्री टेंपरेचर में वहां पर पानी जम जाता है, उसके लिए इस मशीन का प्रयोग किया जा सकता है. जिससे लोगों की समस्या का समाधान हो सकता है. उन्होंने बताया कि इसमें पानी को जल्द गर्म किया जा सकता है.

दरअसल, सीएसआईआर (Council of Scientific & Industrial Research) और सीबीआरआई (Central Building Research Institute) ने अत्यधिक मौसम परिस्थितियों के लिए एक समाधान पेश किया है. जैसे की लेह-ल्हाख, सियाचिन, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र. यह प्रणाली अत्यधिक ठंडे पर्यावरण तापमान (10°C से -25°C तक) से गर्मी निकाल सकती है. यह तकनीक बिजली की खपत को 60% से 75% तक कम कर सकती है, जो स्थान और साइट के आधार पर इलेक्ट्रिक गीजरो की तुलना में होती है.

इसे एक बार निवेश के रूप में स्थापित किया जा सकता है, जिसके बाद यह लंबी अवधि के लाभ और पर्याप्त बिजली बचत प्रदान करती है. बढ़ती हुई बिजली की लागत और जलवायु परिवर्तन और कार्बन उत्सर्जन पर बढ़ती वैश्विक चिंताओं के साथ यह नई तकनीक एक स्थिर समाधान पेश करती है, जो जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करती है. इसके अलावा इसका कम-कार्बन फुटप्रिंट और घटित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन इसे पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार समाधान बनाता है, जो भारत के नवीनीकरण ऊर्जा और स्थिरता लक्ष्यों के अनुरूप है.

### राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर सीबीआरआई ने विकसित प्रौद्योगिकियों का किया प्रदर्शन

जगरण संवाददाता, रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में शुक्रवार को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह मनाया गया। इस मौके पर जहां संस्थान ने विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया। विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाने विषय पर प्रतियोगिता भी हुई। इसके अलावा 'एक स्वास्थ्य, एक विश्व' और जलवायु अनुकूल भवन डिजाइन दिशा-निर्देश विचारणीयता का विषयों भी किया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान रुड़की के निदेशक डा. एमके गोयल और संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार ने दीप जलज्वर किया। इस मौके पर डा. एमके गोयल ने भारतीय विज्ञान और अनुसंधान के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान है मानव जीवन स्तर में सुधार लाया है। उन्होंने विज्ञानियों के योगदान को याद करते हुए जनीत में विज्ञान का अधिकाधिक प्रयोग करने पर जोर दिया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने विज्ञान और नवाचार के बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डाला। निदेशक ने दो नवीन तकनीकों का लोकप्रिय किया। इन्होंने एक टेकनॉलजी उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए मड ब्लॉक मशीन और दूसरा ऊर्जा-कुशल सौर-सहायता प्राप्त ऊष्मा पम्प वॉटर हिटर थी। जो गर्म पानी की उपलब्धता को अधिक दक्षता और किफायती बनाएगा। इस दौरान गुणवत्ता ऑडिट ईनाबलिंग प्रदीप और बाल विद्या मंदिर स्कूल में नए भवन का उद्घाटन भी किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. प्रकाश चंद्र थपलियाल, डा. अजय चौरसिया, एसके नेगी, डा. राजेश कुमार, डा. हेमलता, डा. किशोर, आशीष, चंद्रपवन पटेल आदि उपस्थित रहे।

उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों को स्थायी-किफायती मड ब्लॉक मशीन संस्थान के डा. रवींद्र हिंद ने उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए मड ब्लॉक मशीन के बारे में बताया हुए कहा कि यह मशीन तकनीक दूरस्थ, पहाड़ी और कठोर भूभाग में निर्माण से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए एक स्थायी और

किफायती समाधान प्रदान करती है। यह मशीन एक वार्षिक उत्पादन प्रणाली का उपयोग करती है। जो प्रति घंटे दो ब्लॉक उत्पादन करती है। केवल दो आउटलेटों के साथ एक हिटर में 1000 ब्लॉक तक उत्पादन करती है।

बिजली की खपत 75 प्रतिशत तक होगी कम

डा. चंदन स्वस्म मीना ने विकसित तकनीक के बारे में बताया कि उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में परंपरिक जल हीटिंग प्रणालियां ऊर्जा की दृष्टि से अत्यधिक खराब करने वाली होती है। इस समस्याओं को हल करने के लिए सीबीआरआई ने अत्यधिक मौसम परिस्थितियों के लिए एक समाधान पेश किया है। जैसे कि लेह-ल्हाख, सियाचिन, हिमाचल, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र। डा. प्रणाली अत्यधिक ठंडे पर्यावरण तापमान (10 से 25 तक) से गर्मी निकाल सकती है। उन्होंने बताया यह तकनीक

## Central institute unveils climate-resilient building in Roorkee

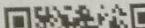
Tapán Susheel | TNN

**Roorkee:** The Central Building Research Institute (CBRI) in Roorkee has unveiled a climate-resilient building, the first of its kind in India, designed to minimise environmental impact while en-

hancing thermal comfort. Built using CBRI's in-house technologies, the structure emits 40 to 60% less carbon dioxide than conventional buildings.

On Friday, CBRI handed over the two-storey building to Bal Vidya Mandir, where it will serve as a testing ground

for data collection. Sensors in the structure will monitor thermal conductivity, climate conditions etc to provide key insights into sustainable construction. "This marks a significant step towards sustainable infrastructure in India," said Prof R Pradeep Kumar, CBRI director.





## Central Building Research Institute (CBRI) unveils climate-resilient building in Roorkee

TNN | Mar 1, 2025, 07:02 AM IST



Roorkee: The Central Building Research Institute (CBRI) in Roorkee has unveiled a climate-resilient building, the first of its kind in India, designed to minimise environmental impact while enhancing thermal comfort. Built using CBRI's in-house technologies, the structure emits 40 to 60% less carbon dioxide than conventional buildings.

On Friday, the institute handed over the self-developed two-story building to Bal Vidya Mandir, where it will serve as a testing ground for scientific data collection over the next year. Sensors and equipment installed in the structure will monitor thermal conductivity, climate conditions, building strength, load distribution, and acoustic performance, providing critical insights

into sustainable construction.

Designed specifically for regions with a "composite climate"—which includes areas from Delhi to Uttarakhand—the initiative is part of CBRI's national mission to develop climate-resilient buildings (CRBs) suited to various environmental conditions. As part of this mission, the institute is also constructing prototype CRBs in Leh-Ladakh, Rajasthan, Chennai, and Bengaluru, each tailored to distinct climatic zones: cold, hot and dry, warm and humid, and temperate.

CBRI, a national R&D institute under the Council of Scientific & Industrial Research (CSIR), officially handed over the building's keys to the school principal during National Science Day celebrations. Spanning 1,200 sq ft, the structure features two classrooms, each accommodating 30 students—one on each floor.

"This initiative marks a significant step towards sustainable and climate-resilient infrastructure in India," said Prof R Pradeep Kumar, director of CBRI. The project was spearheaded by senior scientists Dr Ajay Chourasia and Dr Surendra Kumar Negi, who emphasised its role in shaping future building standards.

Constructed with cutting-edge materials, the building incorporates cold-formed steel columns, expanded polystyrene (EPS) concrete panels, acoustic panels, agro-industrial waste concrete panels, and cellular lightweight concrete (CLC) blocks. These composite materials enhance structural integrity, optimise thermal efficiency, and reduce overall weight, making the building a model for climate-responsive construction.

To assess its energy efficiency, advanced monitoring systems have been installed, including an IoT-enabled node that continuously collects data on wall surface temperatures, lux levels, air temperature, humidity, and infrared readings. Equipped with RTD sensors, the system transmits real-time data to the cloud via Wi-Fi, facilitating remote monitoring and analysis.

"The data gathered across different seasons will be instrumental in evaluating the building's climate-responsive performance and will contribute to the development of Indian Standard Provisions for sustainable construction materials," said Chourasia.





## एटीएल टिकर फेस्ट में केवी रायवाला की टीम प्रथम

रायवाला, लोकसत्य ।

पीएम श्री केवी रायवाला विद्यालय रायवाला कैट में आयोजित एटीएल टिकर फेस्ट में छात्रों ने नवाचारी परियोजनाओं का प्रदर्शन किया। जिसमें केवी रायवाला की टीम को प्रथम स्थान मिला। इंटरनेशनल स्कुल प्रतियोगिता की टीम का प्रतिनिधित्व कर रही। इस दौरान प्रचारक रीत इंटरनेशनल सिंह ने कहा कि बाल वैज्ञानिकों की प्रशिक्षण को निखारने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रतियोगिता में छात्रों ने रचनात्मकता बढ़ाई है। वहीं फेस्ट में पहुंचे केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य



वैज्ञानिक नदीम अहमद, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. हेमलता व डा. तबिश आलम ने बाल विद्यार्थियों की रचनात्मकता और कौशल की सराहना की और नवाचार के प्रति उनकी रुचि को प्रोत्साहित किया।

अटल टिकरिंग लैब (एटीएल) प्रभारी रमेश खान ने बताया कि फेस्ट में केवी रायवाला सहित मां आनंदमयी स्कूल, रीडिंग रेनबो की टीम ने भाग लिया। लर्निंग लिंक्स

फाउंडेशन और डेल टेक्नोलॉजी इस कार्यक्रम में सहयोगी की भूमिका में रहे। यह संस्करण एटीएल लैब में छात्रों को नवाचार, प्रौद्योगिकी और तकनीकी कौशल सिखाने में योगदान दे रही है।

## पीएम श्री केवी रायवाला में एटीएल टिकर फेस्ट का आयोजन



### स्पष्ट एक्सप्रेस

रायवाला, 19 फरवरी 2025: सीएसआईआर-सीबीआरआई,

रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.

हेमलता व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. तबिश आलम के सान्निध्य में आज

पीएम श्री केवी रायवाला में एटीएल टिकर फेस्ट का आयोजन किया गया।

इस आयोजन में डीएसबी इंटरनेशनल ऋषिकेश, रीडिंग रेनबो श्यामपुर, और मां आनंदमयी मेमोरियल स्कूल रायवाला के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। STEAM प्रदर्शनी में छात्रों ने अपनी नवाचारी परियोजनाओं का प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता में पीएम श्री केवी रायवाला की दो टीमों ने पहला और तीसरा स्थान प्राप्त किया, जबकि डीएसबी इंटरनेशनल स्कूल की टीम ने दूसरा स्थान हासिल किया। मुख्य अतिथियों ने छात्रों की रचनात्मकता और तकनीकी कौशल की सराहना की और नवाचार के प्रति उनकी रुचि को प्रोत्साहित किया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती रीता इंटरजीत सिंह ने छात्रों के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच और नवाचार को बढ़ावा देते हैं। एटीएल प्रभारी श्रीमती रामाया खान ने बच्चों को बधाई दी।

इस आयोजन में लर्निंग लिंक्स फाउंडेशन और डेल टेक्नोलॉजीज का विशेष योगदान रहा, जो अपने एटीएल एडॉप्शन



दिनांक 20 फरवरी, 2025

नगर संस्करण

पृष्ठ 7/8

PG 10-4-22

www.loksatyia.com

# दैनिक जागरण

सत्य के संग, असत्य से जंग

अपने खर से से बर होंगे 10वीं की बंद परीक्षा 14

रक्षा निर्माण के लिए पहला कदम है मजदूर 14

## एटीएल टिकर फेस्ट में केवी रायवाला की टीम रही अव्वल

संवाद सूर, जागरण • रायवाला : पीएम श्री केवी रायवाला विद्यालय रायवाला कैट में आयोजित एटीएल टिकर फेस्ट में छात्रों ने नवाचारी परियोजनाओं का प्रदर्शन किया। जिसमें केवी रायवाला की टीम को प्रथम स्थान मिला।

इंटरनेशनल स्कुल प्रतियोगिता की टीम का प्रतिनिधित्व कर रही। इस दौरान प्रचारक रीत इंटरनेशनल सिंह ने कहा कि बाल वैज्ञानिकों की प्रशिक्षण को निखारने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रतियोगिता में छात्रों ने रचनात्मकता बढ़ाई है। वहीं फेस्ट में पहुंचे केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. हेमलता व डा. तबिश



केवी रायवाला में आयोजित एटीएल टिकर फेस्ट में शामिल छात्र व शिक्षक

आलम ने बाल विद्यार्थियों की रचनात्मकता और कौशल की सराहना की और नवाचार के प्रति उनकी रुचि को प्रोत्साहित किया। अटल टिकरिंग लैब (एटीएल) प्रभारी रमेश खान ने

बताया कि फेस्ट में केवी रायवाला सहित मां आनंदमयी स्कूल, रीडिंग रेनबो की टीम ने भाग लिया। लर्निंग लिंक्स फाउंडेशन और डेल टेक्नोलॉजी इस

कार्यक्रम में सहयोगी की भूमिका में रहे।

साईंस के प्रति बढ़ी रुचि : अटल टिकरिंग लैब प्रदर्शनी में शामिल छात्रों को इंटरनेशनल स्कुल के छात्र करण बोरिवाल व नीलेश नींदवाल ने ईको फ्रेंडली ईको सिस्टम बुक वेस्ट मैनेजमेंट खान का महत्व प्रदर्शित कर सक्ता मन मोह लिया। दोनों छात्रों ने बताया कि अटल टिकरिंग लैब से साईंस को लेकर उनकी सांघटनिक आगे और अधिक डेवलप हुई और उनकी सोचने-समझने का तरीका बदल है। वेस्ट मैनेजमेंट के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए उन्होंने खुद ईको फ्रेंडली माडल तैयार किया है।



## Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई ने मनाया 79वां स्थापना दिवस

Mansingh Kumar 2 months ago 352 minutes read



**रूड़की:** सीएसआईआर-केडीएम भवन अनुसंधान बोसदन सीबीआरआई, रूड़की ने राष्ट्रीय टैलेर **ऑटोटेरिन्स** से एक भव्य कार्यक्रम के साथ अपना 79वां स्थापना दिवस मनाया।



इस अवसर पर 1947 में अपनी स्थापना के बाद से भवन विज्ञान और अनुसंधान में संस्थान के उल्लेखनीय योगदानों को स्मरण किया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों, छात्रों और गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।



प्रो. एस.के. भट्टाचार्य, पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई और कुलपति, शिव नंदर विश्वविद्यालय, चेन्नई के प्रोफेसर मुन्ना अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जबकि इस अवसर पर सीएसआईआर-एचआरडीबी, नई दिल्ली के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विनोद कुमार, विशेष अतिथि और एनआईएच के निदेशक डा. एस.के. मेघवाल, भी उपस्थित रहे।



समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रूड़की के निदेशक ने स्वागत भाषण दिया।



अपने भाषण में उन्होंने सुरक्षा, स्थिरता, कार्यक्षमता और नैतिकता के क्षेत्रों में संस्थान के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान एवं विकास और गैर-अनुसंधान एवं विकास पहलों, भविष्य के लक्ष्यों, प्रमुख उपलब्धियों और चल रहे उद्देश्यों को भी रेखांकित किया। सम्मानित अतिथियों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया।



डॉ. अजय चौरसिया ने एक महत्वपूर्ण घोषणा की कि सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 20-22 नवंबर 2025 तक प्रतिष्ठित वन देव्य वन वर्ल्ड (ओपन-ओडब्ल्यू) सम्मेलन पर चौथे अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी करने का अवसर सफलतापूर्वक प्राप्त किया है। इसी के साथ श्री ए.के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया और अनूप कुमार ने अपनी पुस्तक "भारतीय पारंपरिक घरों की झलक" का विमोचन किया, जो सीएसआईआर मिशन मोड प्रोजेक्ट: क्लाउडमेट रेजिलिएंट बिल्डिंग के परिणामों में से एक है।



इसके पश्चात डा. डी.पी. कानूनगो ने श्री विनोद कुमार जी का परिचय प्रस्तुत किया। श्री विनोद कुमार ने अपने संबोधन में विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों में अपने कार्यकाल पर विचार किया और इस बात पर जोर दिया कि वैज्ञानिक और प्रशासक दो मूलभूत स्तंभ हैं, जिन्हें संस्थागत सफलता के लिए मिलकर काम करना चाहिए। इसके पश्चात डा. डी.पी. कानूनगो ने श्री विनोद कुमार जी का परिचय प्रस्तुत किया। श्री विनोद कुमार ने अपने संबोधन में विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों में अपने कार्यकाल पर विचार किया और इस बात पर जोर दिया कि वैज्ञानिक और प्रशासक दो मूलभूत स्तंभ हैं, जिन्हें संस्थागत सफलता के लिए मिलकर काम करना चाहिए।



प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने समारोह के मुख्य अतिथि एवं विशेष अतिथि को स्मृति विह्व और शॉल भेंट की गई। आज संस्थान में एक सांस्कृतिक संस्था का आयोजन किया गया। इसके अलावा इस अवसर पर राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) के तत्वाधान में दीवार पर आउट-ऑफ-प्लेन लॉडिंग परीक्षण सुविधा (ओओटीपी) सफलतापूर्वक राष्ट्र को सुविधा समर्पित की, जो भारत में अपनी तरह की पहली सुविधा है।



## CSIR-CBRI, Roorkee Celebrates Its 79th Foundation Day

**Roorkee (The Hawk):** CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, celebrated its 79th Foundation Day with a grand event at the Rabindranath Tagore Auditorium, CSIR-CBRI, Roorkee. The occasion honored the institute's remarkable contributions to building science and research since its inception in 1947.

The event saw enthusiastic participation from CBRI staff, students, and distinguished dignitaries. The function was graced by Prof. S.K. Bhattacharya, Former Director, CSIR-CBRI, and Current Vice Chancellor, Shiv Nadar University, Chennai, attended as the Chief Guest. While Shri Vinod Kumar, Senior Deputy Secretary, CSIR-HRDG, New Delhi, as a guest of honour. In this function NIO Director, Dr. M. K. Goel was also present.

The celebrations began with the ceremonial lighting of the lamp, followed by a welcome address by the Director, CSIR-CBRI, Roorkee. In his speech, he highlighted the institute's contributions in

### Kidzee School And Kids Planet Prem Public School's Annual Function Celebrated With Great Pomp

Jashir Singh Duggal

**Kurukshetra (The Hawk):** The annual function of Sirjanotav 2025 organized by Kidzee School and Kids Planet Prem Public School was celebrated with great pomp in the grand auditorium of Kurukshetra University. During this, eminent personalities from education, social service and various fields were present. The inaugural session of the program was inaugurated by former

augured their book "Glimpse of Indian Traditional Houses", which is one of the finest outcomes of the CSIR Mission Mode Project: Climate Resilient Building.

The best research papers in the year 2023 and 2024 were also announced. The event featured an awards ceremony recognizing winners of various

sented to the distinguished guests. The event concluded on a patriotic note with a vote of thanks by Dr. Soja, followed by the National Anthem.

The inauguration of the facility to the Nation for Out-of-plane loading on Wall Test Facility (OOTP) under the aegis of National Earthquake Engineering Testing Facility (NEETF),



secured the opportunity to host the 4th International Symposium on the prestigious One Health One World (OHOW) Conference from November 20-22, 2025, in CSIR-CBRI Roorkee. Additionally, Ar. S.K. Negi, Ar. Anup Kumar, and Dr. Ajay Chourasia in-

sports activities. Dr. D.P. Kanungo provided an introduction to the Guest of Honour, Shri Vinod Kumar. Mr. Vinod ji shared experiences of working with various scientific labs of CSIR and emphasized that scientists and administrators are two fundamental pillars that must work together for institutional success. Dr. Ajay Chourasia introduced the Chief Guest, Prof. S.K. Bhattacharya. In his address he commended the institute's R&D contributions, advanced research facilities, and its role in national development while also encouraging CSIR-CBRI to achieve its future goals. As a mark of appreciation, a shawl was pre-

first-of-its-kind in India. The facility was inaugurated by Prof. Sriman Kumar Bhattacharya, Vice-Chancellor, Shiv Nadar University, Chennai and Former Director, CSIR-Central Building Research Institute. OOTP enables full-scale testing of walls (3m wide x and 3m height) subjected to out-of-plane monotonic and cyclic loading, enhancing research on earthquake safety and retrofit technologies for walls. This facility was developed under the supervision of Dr. Ajay. Director Prof. R. Pradeep Kumar emphasized the institute's commitment to advancing seismic resilience and safe construction technologies.

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपना 79वां स्थापना दिवस मनाया

**रुड़की ( दैनिक हॉक ):** नगर विधिबिद्यालय, चेन्नई के सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की, ने अपनी 79वीं स्थापना दिवस का बड़ा कार्यक्रम (सीबीआरआई), उत्तरिष्ठ में, जहाँ इस अवसर को और चल रहे उद्घाटन को भी रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर पर सीएसआईआर-एचआरडीजी, रुड़की का किया। सम्पूर्ण अतिथि



ऑडिटोरियम में एक भाग्य कार्यक्रम के साथ अपना 79वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर, 1947 में अपनी स्थापना के बाद से भवन विज्ञान और अनुसंधान में संस्थान के उत्कृष्ट उपलब्धियों और चलाए गए कार्यक्रमों को स्मरण किया गया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों, छात्रों और गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, कुलपति प्रो. एसके भट्टाचार्य मुख्य अतिथि, सीएसआईआर-एचआरडीजी, नई दिल्ली के वरिष्ठ उपसचिव विनोद कुमार विशिष्ट अतिथि और एनआईएच के निदेशक डॉ. एमके गोयल, भी उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने अपनी 79वीं स्थापना दिवस का बड़ा कार्यक्रम (सीबीआरआई), उत्तरिष्ठ में, जहाँ इस अवसर को और चल रहे उद्घाटन को भी रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर पर सीएसआईआर-एचआरडीजी, रुड़की का किया। सम्पूर्ण अतिथि

नई दिल्ली के वरिष्ठ उपसचिव विनोद कुमार, विशिष्ट अतिथि और एनआईएच के निदेशक डॉ. एमके गोयल भी उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने अपनी 79वीं स्थापना दिवस का बड़ा कार्यक्रम (सीबीआरआई), उत्तरिष्ठ में, जहाँ इस अवसर को और चल रहे उद्घाटन को भी रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर पर सीएसआईआर-एचआरडीजी, रुड़की का किया। सम्पूर्ण अतिथि

रवींद्रनाथ टैगोर पर सीएसआईआर-एचआरडीजी, रुड़की का किया। सम्पूर्ण अतिथि अतिथि को स्मृति चिह्न और शॉल भेंट की गई। आज संस्थान में एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसके अलावा इस अवसर पर राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरी परीक्षा सुविधा (एनईईटीएफ) के 2023-24 के सर्वश्रेष्ठ शोध पत्रों को प्रशंसा के रूप में प्रशस्ति पत्रों के विभिन्न खेल गतिविधियों के विजेताओं को भी प्रशस्ति पत्र दिए गए। डॉ. अजय चौरसिया ने मुख्य अतिथि प्रो. एसके. भट्टाचार्य का परिचय कराया। प्रो. भट्टाचार्य ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी 79वीं वर्षगांठ पर बधाई दी। उन्होंने संस्थान के अनुसंधान एवं विकास केन्द्रों, अतिथि भवन अनुसंधान संस्थान के अलावा सुविधाओं और सीएसआईआर-सीबीआरआई को अपने भविष्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. डी.पी. कानुनगो ने विनोद कुमार का परिचय प्रस्तुत किया। विनोद कुमार ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी 79वीं स्थापना दिवस का बड़ा कार्यक्रम (सीबीआरआई), उत्तरिष्ठ में, जहाँ इस अवसर को और चल रहे उद्घाटन को भी रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर पर सीएसआईआर-एचआरडीजी, रुड़की का किया। सम्पूर्ण अतिथि

अतिथि को स्मृति चिह्न और शॉल भेंट की गई। आज संस्थान में एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसके अलावा इस अवसर पर राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरी परीक्षा सुविधा (एनईईटीएफ) के 2023-24 के सर्वश्रेष्ठ शोध पत्रों को प्रशंसा के रूप में प्रशस्ति पत्रों के विभिन्न खेल गतिविधियों के विजेताओं को भी प्रशस्ति पत्र दिए गए। डॉ. अजय चौरसिया ने मुख्य अतिथि प्रो. एसके. भट्टाचार्य का परिचय कराया। प्रो. भट्टाचार्य ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी 79वीं वर्षगांठ पर बधाई दी। उन्होंने संस्थान के अनुसंधान एवं विकास केन्द्रों, अतिथि भवन अनुसंधान संस्थान के अलावा सुविधाओं और सीएसआईआर-सीबीआरआई को अपने भविष्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. डी.पी. कानुनगो ने विनोद कुमार का परिचय प्रस्तुत किया। विनोद कुमार ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी 79वीं स्थापना दिवस का बड़ा कार्यक्रम (सीबीआरआई), उत्तरिष्ठ में, जहाँ इस अवसर को और चल रहे उद्घाटन को भी रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर पर सीएसआईआर-एचआरडीजी, रुड़की का किया। सम्पूर्ण अतिथि

अतिथि को स्मृति चिह्न और शॉल भेंट की गई। आज संस्थान में एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसके अलावा इस अवसर पर राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरी परीक्षा सुविधा (एनईईटीएफ) के 2023-24 के सर्वश्रेष्ठ शोध पत्रों को प्रशंसा के रूप में प्रशस्ति पत्रों के विभिन्न खेल गतिविधियों के विजेताओं को भी प्रशस्ति पत्र दिए गए। डॉ. अजय चौरसिया ने मुख्य अतिथि प्रो. एसके. भट्टाचार्य का परिचय कराया। प्रो. भट्टाचार्य ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी 79वीं वर्षगांठ पर बधाई दी। उन्होंने संस्थान के अनुसंधान एवं विकास केन्द्रों, अतिथि भवन अनुसंधान संस्थान के अलावा सुविधाओं और सीएसआईआर-सीबीआरआई को अपने भविष्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. डी.पी. कानुनगो ने विनोद कुमार का परिचय प्रस्तुत किया। विनोद कुमार ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी 79वीं स्थापना दिवस का बड़ा कार्यक्रम (सीबीआरआई), उत्तरिष्ठ में, जहाँ इस अवसर को और चल रहे उद्घाटन को भी रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर पर सीएसआईआर-एचआरडीजी, रुड़की का किया। सम्पूर्ण अतिथि

छात्र-छात्राओं ने मनोरंजक खेल प्रतियोगिताओं एवं इसलिये योजना बनाकर चुनौतियों का सामना करना आनन्द कुमार समेत सभी शिक्षक उपस्थित रहे। रजत बहुखंडी आदि मौजूद रहे।

# सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने मनाया 79वां स्थापना दिवस

### » मद्रलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में भव्य कार्यक्रम के साथ अपना 79वां स्थापना दिवस मनाया। इस दौरान 1947 में अपनी स्थापना के बाद से भवन विज्ञान और अनुसंधान में संस्थान के उत्कृष्ट उपलब्धियों को स्मरण किया गया। कार्यक्रम में कर्मचारियों, छात्रों और नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, कुलपति प्रो. एसके भट्टाचार्य मुख्य अतिथि, सीएसआईआर-एचआरडीजी, नई दिल्ली के वरिष्ठ उपसचिव विनोद कुमार विशिष्ट अतिथि और एनआईएच के निदेशक डॉ. एमके गोयल, भी उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने अपनी 79वीं स्थापना दिवस का बड़ा कार्यक्रम (सीबीआरआई), उत्तरिष्ठ में, जहाँ इस अवसर को और चल रहे उद्घाटन को भी रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर पर सीएसआईआर-एचआरडीजी, रुड़की का किया। सम्पूर्ण अतिथि

के निदेशक ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने सुरक्षा, स्थिरता, कार्यक्षमता और नैतिकता के क्षेत्रों में संस्थान के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान एवं विकास और गैर-अनुसंधान एवं विकास पहलों, भविष्य के लक्ष्यों, प्रमुख उपलब्धियों और चल रहे उद्देश्यों को भी रेखांकित किया। अतिथियों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया। डॉ. अजय चौरसिया ने सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 20-22 नवंबर 2025 तक प्रतिष्ठित वन हेल्थ वन वर्ल्ड सम्मेलन पर चैथे अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी करने का अवसर सफलतापूर्वक प्राप्त करने की घोषणा की। इसके नेगी, डॉ. अजय चौरसिया और अनूप कुमार ने अपनी



पुस्तक भारतीय पारंपरिक घरों की झलक का विमोचन किया, जो सीएसआईआर मिशन मोड प्रोजेक्ट रूकलाइमेट रजिस्ट्रार बिलडिंग के परिणामों में से एक है। 2023-24 के सर्वश्रेष्ठ शोध पत्रों की घोषणा भी की गई। कार्यक्रम में विभिन्न खेल गतिविधियों के विजेताओं को भी प्रशस्ति पत्र दिए गए। डॉ. अजय चौरसिया ने मुख्य अतिथि प्रो. एसके भट्टाचार्य का परिचय कराया। प्रो. भट्टाचार्य ने

संस्थान के अनुसंधान एवं विकास योगदान, उन्नत अनुसंधान सुविधाओं और राष्ट्रीय विकास में इसकी भूमिका की सराहना की। साथ ही सीएसआईआर-सीबीआरआई को अपने भविष्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. डी.पी. कानुनगो ने विनोद कुमार का परिचय प्रस्तुत किया। विनोद कुमार ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी 79वीं स्थापना दिवस का बड़ा कार्यक्रम (सीबीआरआई), उत्तरिष्ठ में, जहाँ इस अवसर को और चल रहे उद्घाटन को भी रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर पर सीएसआईआर-एचआरडीजी, रुड़की का किया। सम्पूर्ण अतिथि

इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) के तत्वावधान में दीवार पर आउट-ऑफ-प्लेन लोडिंग परीक्षण सुविधा सफलतापूर्वक राष्ट्र को सुविधा समर्पित की, जो भारत में अपनी तरह की पहली सुविधा है। इसका उद्घाटन शिव नादर विश्वविद्यालय, चेन्नई के कुलपति और सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. कुमार भट्टाचार्य ने किया। ओओटीपी आउट-ऑफ-प्लेन मोनोटोनिक और साइकिल लोडिंग के अधीन दीवारों का पूर्ण पैमाने पर परीक्षण करने में सक्षम बनाता है, जिससे दीवारों के लिए भूकंप सुरक्षा और रेट्रोफिट प्रौद्योगिकियों पर शोध को बढ़ावा मिलता है। इसका कार्य डॉ. अजय चौरसिया को देखरेख में हो रहा है। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भूकंपीय लचीलापन और सुरक्षित निर्माण प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।







# हवाई अड्डे की इमारतों और बुनियादी ढांचे की संरचनात्मक स्थिरता पर कार्यशाला आयोजित

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय उड्डयन मंत्रालय के सचिव वी. भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) ने उड्डयन मंत्रालय के सचिव वी. वुलानम ने किया। जिसमें एएआई के अध्यक्ष विपिन कुमार मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुये और नागरिक उड्डयन मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुश्री रुबीना अली भी मौजूद रही। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण दिया, जिसमें हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे में

नागरिक उड्डयन मंत्रालय (एमओसीए) के सहयोग से एएआई ऑफिसर्स इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली में 'हवाई अड्डे की इमारतों और बुनियादी ढांचे की संरचनात्मक स्थिरता' पर एक कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यक्रम का उद्घाटन नागरिक



# 'आपदा रोधी संरचनाओं की तत्काल आवश्यकता'

● जनवाणी संवाददाता, रुड़की

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में आउटरीच और प्रसार सेवाएं सीएसआईआर एकीकृत कौशल पहल के तत्वावधान में रणनीति में आपदा प्रतिरोधी भवन निर्माण पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रही हैं। यह कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एचपीएसडीएमए) द्वारा प्रायोजित है और यह हिमाचल प्रदेश के पंचायती राज और ग्रामीण निर्माण विभाग के जूनियर इंजीनियरों (जेई) और तकनीकी सहायकों (टीए) के लिए आयोजित किया जा रहा है, जिसमें बिलासपुर और किन्नौर जिले शामिल हैं। कार्यक्रम में कुल 25 प्रतिभागियों भाग ले रहे हैं, जो पहाड़ी क्षेत्रों में आपदा प्रतिरोधी भवनों के निर्माण के लिए बहुमूल्य जानकारी और कौशल प्राप्त कर रहे हैं। इंजीनियर आशीष पिपल, वरिष्ठ वैज्ञानिक और कार्यक्रम समन्वयक, सभी प्रतिभागियों का गम-गोश से स्वागत करते हैं और प्रशिक्षण कार्यक्रम का अवलोकन प्रदान करते हैं, पहाड़ी क्षेत्रों में आपदा प्रतिरोधी निर्माण प्रथाओं को बढ़ावा



देने में इसके महत्व पर जोर देते हैं। उन्होंने मंच पर उपस्थित समानित अतिथियों का भी स्वागत किया, जिनमें सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार, उप निदेशक और मुख्य वैज्ञानिक एआर. एस.के. नेगी, मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानूनगो और ओडीएसओ के मुख्य वैज्ञानिक और प्रमुख नदीम अहमद शामिल थे। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानूनगो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए प्राकृतिक आपदाओं के विनाशकारी प्रभावों और ऐसे जोखिमों को कम करने के लिए आपदा-रोधी संरचनाओं की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आपदाओं का प्रभावों ढंग से सामना करने के लिए मौजूदा और नई

दोनों संरचनाओं में सुधार के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. कानूनगो ने निर्माण सामग्री और प्रथाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में निजी उद्योगों और ठेकेदारों को महत्वपूर्ण भूमिका पर भी चर्चा की। मुख्य वैज्ञानिक एआर. एस.के. नेगी ने जोर दिया कि निर्माण में सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण मानदंड है, खासकर आपदा-प्रवण क्षेत्रों में उन्होंने आगे बताया कि निर्माण में सुरक्षा भूवैज्ञानिक कारकों से गहराई से जुड़ी हुई है, जो प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ लचीलापन और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करती है। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार भवन निर्माण

## पहाड़ों में आपदा प्रतिरोधी भवन निर्माण पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

के विभिन्न पहलुओं पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि साझा करते हैं, उचित सामग्री का चयन करने, तापमान भिन्नता को समझने और लचीले ढांचे को डिजाइन करने के लिए क्षेत्र के ज्ञान का लाभ उठाने के महत्व पर बल देते हैं। वह आपदाओं के गंभीर परिणामों को संबोधित करते हैं, जिसमें जानमाल की दुखद हानि और महत्वपूर्ण संपत्ति का नुकसान शामिल है, और इन जोखिमों को कम करने के लिए सक्रिय उपायों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। श्री नदीम अहमद ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता में सक्रिय भागीदारी और योगदान के लिए सभी गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिभागियों और आयोजकों को हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने प्रतिभागियों का गम-गोश से स्वागत किया और सीखने और कौशल विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को स्वीकार किया।

10 दैनिक जागरण देहरादून/हरिद्वार, 28 जनवरी, 2025

हरिद्वार

## निर्माण में सुरक्षा होता है सबसे महत्वपूर्ण मानदंड

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में पहाड़ों में आपदा प्रतिरोधी भवन निर्माण पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम सोमवार से शुरू हो गया है। इसमें संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भवन निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए उचित सामग्री का चयन करने,

तापमान भिन्नता को समझने व लचीले ढांचे को डिजाइन करने के लिए क्षेत्र के ज्ञान का लाभ उठाने के महत्व पर बल दिया।

सीबीआरआई में आयोजित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश के पंचायती राज और ग्रामीण निर्माण विभाग के जूनियर इंजीनियरों (जेई) और तकनीकी सहायकों (टीए) के लिए आयोजित हो रहा है।

इसमें बिलासपुर और किन्नौर जिले शामिल हैं। कार्यक्रम में मुख्य विज्ञानी डा. डीपी कानूनगो ने प्राकृतिक आपदाओं के विनाशकारी प्रभावों और ऐसे जोखिमों को कम करने के लिए आपदा-रोधी संरचनाओं की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। डा. कानूनगो ने निर्माण सामग्री और प्रथाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में निजी उद्योगों और ठेकेदारों की

महत्वपूर्ण भूमिका पर भी चर्चा की। मुख्य विज्ञानी एसके नेगी ने जोर दिया कि निर्माण में सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण मानदंड है। उन्होंने कहा कि निर्माण में सुरक्षा भूवैज्ञानिक कारकों से गहराई से जुड़ी हुई है। जो प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ लचीलापन और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करती है।



दिल्ली में हवाई अड्डे की इमारतों की संरचनात्मक स्थिरता जांचेगी सीबीआरआई रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सहयोग से एएआई ऑफिसर्स इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली में हवाई अड्डे की इमारतों और बुनियादी ढांचे की संरचनात्मक स्थिरता पर एक कार्यशाला आयोजित की। कार्यक्रम का उद्घाटन मख्य अतिथि एएआई के अध्यक्ष विपिन कुमार तथा नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव वी वुलनम ने किया। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे में संरचनात्मक सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया ने मौजूदा हवाई अड्डे की इमारतों में आम दोषों पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी और सुधार और सुधार के लिए व्यावहारिक समाधान प्रदान किए। इस अवसर पर नागरिक उड्डयन मंत्रालय की संयुक्त सचिव रुबीना अली सहित संस्थान के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

## हवाई अड्डों के बुनियादी ढांचे में संरचनात्मक सुरक्षा के महत्व पर चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय (एमओसीए) के सहयोग से एएआई ऑफिसर्स इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली में हवाई अड्डे की इमारतों और बुनियादी ढांचे की संरचनात्मक स्थिरता विषय पर कार्यशाला आयोजित की। इस दौरान विशेषज्ञों और हवाई अड्डा संचालकों के बीच संवादात्मक सत्र भी आयोजित किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव वी वुलनम ने किया। इस मौके पर सचिव वी वुलनम ने कार्यशाला आयोजित करने और सुरक्षित एवं लचीले हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे के निर्माण और रखरखाव में नागरिक उड्डयन मंत्रालय का समर्थन करने के लिए सीबीआरआई का आभार व्यक्त किया। उन्होंने जोर दिया कि इस तरह के विचार-विमर्श सत्र समय-समय पर आयोजित किए जाने चाहिए। वहीं कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष विपिन कुमार उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि कार्यशाला हवाई अड्डे के संचालकों के लिए परिचालन और संरचनात्मक

चुनौतियों का समाधान करने में अत्यधिक लाभकारी होगी। नागरिक उड्डयन मंत्रालय की संयुक्त सचिव रुबीना अली ने इस बात पर जोर दिया कि सुरक्षा न केवल अनिवार्य है, बल्कि टिकाऊ बुनियादी ढांचे के लिए एक पूर्व शर्त है। सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे में संरचनात्मक सुरक्षा के महत्व पर बल दिया। मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया ने मौजूदा हवाई अड्डे की इमारतों में आम दोषों पर विस्तृत प्रस्तुति दी। साथ ही सुधार के लिए व्यावहारिक समाधान प्रदान किए। इसके नेगी, डा. डीपी. कानूनगो, डा. किशोर कुलकर्णी, डा. आशीष कपूर, डा. प्रशांत, अनूप कुमार और डा. निर्मल ने टिकाऊ व लचीले हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे के लिए रेट्रोफिटिंग रणनीतियों और आधुनिकीकरण दृष्टिकोणों पर चर्चा की। कार्यशाला का समापन विशेषज्ञों और हवाई अड्डा संचालकों के बीच संवादात्मक सत्रों के साथ हुआ। जिससे विमानन बुनियादी ढांचे में सुरक्षा और स्थिरता के वैश्विक मानकों को प्राप्त करने के लिए नागरिक उड्डयन मंत्रालय और सीबीआरआई के बीच साझेदारी मजबूत हुई।

**10 दैनिक जागरण** देहरादून/हरिद्वार, 23 जनवरी, 2025 **रुड़की ज**

## भोजन, कपड़ा, मकान, वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति बढ़ाने में निभाते हैं अहम भूमिका

### केवि रायवाला के छात्रों ने 'सीबीआरआई' में आयोजित कार्यक्रम में किया प्रतिभाग

जागरण संवाददाता, रुड़की : केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में विज्ञान 2.0 पहल के तहत आयोजित कार्यक्रम में मुख्य विज्ञानी नदीम अहमद ने कहा कि भोजन, कपड़ा और मकान वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बताया कि संस्थान ऊर्जा-कुशल, टिकाऊ और विषयवर्ती प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। जो राष्ट्र को स्वस्थान्वित करती है। वर्ष 1942 में स्थापित सीएसआईआर-सीबीआरआई भवन विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी रहा है और भारत के प्रमुख अनुसंधान संस्थानों में से एक बनने को दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। कार्यक्रम में पौरुष श्री केवि, रायवाला के 220 छात्रों और छह शिक्षकों ने भाग लिया।

बुधवार को संस्थान में विज्ञानी-छात्र कनेक्ट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विज्ञानी संगठनों और शैक्षिक संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना है। ताकि छात्रों में विज्ञान को बढ़ावा जा सके और वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित किया जा सके। कार्यक्रम के उद्घाटन में मुख्य विज्ञानी नदीम अहमद ने विज्ञान परियोजना के उद्देश्य और लक्ष्यों पर चर्चा की। अगले सत्र में प्रधान विज्ञानी डा. सीमित्र मेठी ने "फेस्ट टू केल्विन" विषय पर व्याख्यान दिया। बताया कि किस तरह से अपशिष्ट पदार्थों को मूल्यवान संसाधनों में बदलने के लिए नवाचार रणनीतियों को अपनाया जा सकता है। उन्होंने टिकाऊ विकास और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए परस्पर

अर्थव्यवस्था के महत्व पर जोर दिया। जहां कचरे को बांध के बजाय संसाधन के रूप में देखा जाता है। बरिष्ठ विज्ञानी डा. तबिता आलम ने "जनजातीय गौरव वर्ष 2024-25" पर व्याख्यान देते हुए इसके महत्व, उद्देश्य, इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और भारत की प्रगति में जनजातीय समुदायों के योगदान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को उन नायकों की सराहना करने के लिए प्रेरित किया जिन्होंने बाधाओं को पार कर समाज को आकार दिया। इसके बाद छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी का दौरा किया। जहां डा. नवीन मिश्रा और डा. हेमलता ने अनुसंधान और विकास के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे कार्यों की जानकारी दी। परियोजनाओं में ऑर्गन परीक्षण सुविचार, अग्निरोधक पैन्ल, ऊर्जा-कुशल ग्रामीण आवास, बीम-कालम परीक्षण और राम मंदिर के संरचनात्मक और नौव डिजाइन शामिल थे।

कार्यक्रम के अंत में छात्रों ने अपनी प्रतिक्रियाएं साझा कीं। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम ने उनके ज्ञान और कौशल को बढ़ावा दिया और उन्हें विज्ञान के प्रति अधिक प्रेरित किया।

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में विज्ञान 2.0 पहल के तहत विज्ञानी-छात्र कनेक्ट कार्यक्रम में पौरुष श्री केवि, रायवाला के छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया • **रुड़की ज**

**जीजी निवाह में टंगती**



# Foundation stone laying ceremony of 'Adarsh Sushrut Gaon' held at Baddi, District Solan



**Himachal Pradesh:** A grand foundation stone laying ceremony was organized today at Sil/Sunani village, Baddi, District Solan, Himachal Pradesh under the 'Adarsh Sushrut Gaon' project. The project is being implemented by Bal Raksha Bharat and CSIR, New Delhi and supported is provided by 'Zee Media Entertainment Limited'. This program is an important step in the government's visionary schemes for rural development and community welfare.

Shri Ram Kumar Chaudhary, Member of Legislative Assembly (MLA) Doon, District - Solan Government of Himachal Pradesh and Director General of CSIR and Secretary, Department of Science and Technology graced the function as the Chief Guest. Addressing the occasion, she said, "The objective of the Adarsh Sushrut Gaon Project is to develop infrastructure in rural areas, improve education and health services, and promote sustainable development. The scheme seeks to improve

the quality of life of rural communities by prioritizing their needs." During the foundation stone laying ceremony, Shri Manmohan Sharma (IAS), Guest of Honour and Deputy Commissioner and Chairman, District Disaster Management Authority, District Solan, Himachal Pradesh also expressed his views and highlighted the importance of this project. He informed that under this scheme, infrastructure such as roads, drinking water supply, sanitation, health centre, and community hall will be developed in Sil/Sunani village. Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, gave detailed information about the contribution of CBRI in this project and assured CBRI's support in such projects in future as well.

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

**Solan:** A grand foundation stone laying ceremony of Model Resilient Village is organized at Sil/Sunani village, Baddi, District Solan, Himachal Pradesh. The Model Resilient Village project is being implemented by Bal Raksha Bharat and Council of Scientific and Industrial Research, New Delhi and supported by Zee Media Entertainment Limited. This program is an important step in the government's visionary schemes for rural development and community welfare.

The Chief Guest, Dr. (Mrs) N. Kalaiselvi, Secretary, CSIR, Government of India, and Guest of Honour Shri Ram Kumar Chaudhary, Member of Legislative Assembly (MLA) guest of Himachal Pradesh graced the Foundation stone laying ceremony of the function Model Resilient Village, Sil/Sunani at Bawasni Gram Baddi, District Solan.

The Chief Guest, Dr. (Mrs) N. Kalaiselvi, Secretary, Department of Science and Technology, Government of India, and Guest of Honour Shri Ram Kumar Chaudhary, Member of Legislative Assembly (MLA) guest of Himachal Pradesh graced the Foundation stone laying ceremony of the function Model Resilient Village, Sil/Sunani at Bawasni Gram Baddi, District Solan.

The Chief Guest, Dr. (Mrs) N. Kalaiselvi, Secretary, Department of Science and Technology, Government of India, and Guest of Honour Shri Ram Kumar Chaudhary, Member of Legislative Assembly (MLA) guest of Himachal Pradesh graced the Foundation stone laying ceremony of the function Model Resilient Village, Sil/Sunani at Bawasni Gram Baddi, District Solan.

ng Reacts To Trophy 2025

J-K: IMD Predicts Rain, Snowfall In Coming 5 As Bandipora Receives Fresh Snowfall

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan

Foundation Stone Laying Ceremony Of Model Resilient Village, Sil/Sunani At Bawasni Gram Baddi, District Solan



## Foundation Stone Laid for Model Resilient Village in Sil/Sunani, Himachal Pradesh

### CSIR Technologies to Contribute to Infrastructure like Shelters, Roads, Drinking Water Systems in the Model Village

Posted On: 20 JAN 2025 7:29PM by PIB Delhi

In a significant step toward rebuilding and strengthening resilience in disaster-affected areas, the foundation stone for a Model Resilient Village was laid on January 20, 2025, at Sil/Sunani in Bawasni Gram Panchayat, Baddi, District Solan, Himachal Pradesh. This initiative follows the devastating cloudburst-induced landslide that struck the region on August 14, 2023, causing extensive loss of property and livelihoods.

The project, a collaborative effort by the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), the Government of Himachal Pradesh, Bal Raksha Bharat, and Zee Entertainment, aims to redevelop the village and prepare it for future resilience through a comprehensive redevelopment plan. The initiative focuses on creating essential infrastructure such as housing, schools, anganwadis, healthcare facilities, community centres, and support systems for livelihoods and agriculture.



Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, DSIR, and Director General, CSIR, was the Chief Guest for the occasion, while Shri Ram Kumar Chaudhary, Member of Legislative Assembly, graced the event as the Guest of Honour. Key dignitaries, including Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI; Shri Avinash Singh, Bal Raksha Bharat; Ms. Shalini Kotiya, Zee Entertainment; Shri Manmohan Sharma, Deputy Commissioner, Solan; Shri Vinod Kumar Dhiman, Superintendent of Police, Baddi; and Shri Vivek Mahajan, Sub-Divisional Magistrate, Baddi, participated in the event. Directors of CSIR-CSIO and CSIR-IMTECH, Prof. Shantanu Bhattacharya and Dr. Sanjeev Khosla, respectively, were also present.

Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, DSIR, and Director General, CSIR, was the Chief Guest for the occasion, while Shri Ram Kumar Chaudhary, Member of Legislative Assembly, graced the event as the Guest of Honour. Key dignitaries, including Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI; Shri Avinash Singh, Bal Raksha Bharat; Ms. Shalini Kotiya, Zee Entertainment; Shri Manmohan Sharma, Deputy Commissioner, Solan; Shri Vinod Kumar Dhiman, Superintendent of Police, Baddi; and Shri Vivek Mahajan, Sub-Divisional Magistrate, Baddi, participated in the event. Directors of CSIR-CSIO and CSIR-IMTECH, Prof. Shantanu Bhattacharya and Dr. Sanjeev Khosla, respectively, were also present.

Dr. Kalaiselvi highlighted the initiative's transformative vision to uplift rural living standards by improving infrastructure, education, and healthcare facilities. She reiterated CSIR's commitment to providing technical expertise and knowledge support for similar projects across the country.

Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, detailed CSIR's technical contributions, including designing infrastructure like shelters, roads, drinking water systems, sanitation facilities, a health center, and a community hall.

An exhibition showcasing resilient, site-specific construction technologies for buildings and livelihoods, based on extensive post-disaster research, was a key highlight of the event. Visitors commended the innovations and the forward-looking habitat planning and design.

Dignitaries interacted with local residents, including women and children, to understand the specific needs of the community. Local administration representatives pledged continued support to ensure the success of the initiative.

The event witnessed enthusiastic participation from local residents and panchayat members, who described the program as a historic step toward rural development and disaster preparedness.

This collaborative endeavour is a testament to the Government of India's commitment to transforming disaster-hit areas into resilient communities, ensuring sustainable development and improved quality of life for its citizens.

मुंबई, 20 जनवरी 2025: भारत सरकार के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक विशेष समिति ने देश के विभिन्न हिस्सों में हुए बाढ़, सूखे, जलवायु परिवर्तन, आदि के कारण हुए नुकसान को दूर करने के लिए एक योजना तैयार की है।

## बेहतर एवं गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना सरकार का लक्ष्य - राम कुमार चौधरी

बड़ी 20 जनवरी सतीश जैन  
दुर्ग के विधायक राम कुमार चौधरी ने कहा कि प्रदेश सरकार पूरे राज्य के साथ-साथ दुर्ग विधानसभा क्षेत्र में लोगों को और बेहतर एवं गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए कृत संकल्प है। राम कुमार चौधरी आज नागरिक अस्पताल बड़ी के विस्तारिकरण तथा नई ओ.पी.डी. निर्माण का शुभि पुरजन करने के उपरान्त जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस कार्य पर 1.72 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। राम कुमार चौधरी ने कहा कि शीघ्र ही नागरिक अस्पताल बड़ी को 100 बिस्तरों के अस्पताल के रूप में परिवर्तित किया जाएगा। ताकि क्षेत्रवासियों को एक ही स्थान पर बेहतर इंडोर एवं आउटडोर सुविधाएं प्राप्त हो सकें। उन्होंने कहा कि नागरिक अस्पताल बड़ी में रोगियों के लिए



सभी प्रकार की और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाना उनकी प्राथमिकता है। विधायक ने कहा कि इस कार्य के लिए बजट की कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि नागरिक अस्पताल बड़ी

के विस्तारिकरण से बड़ी सहित 18 ग्राम पंचायतों के निवासियों सहित क्षेत्र के लोगों में कार्यरत श्रमिक बड़ी संख्या में लाभान्वित होंगे। उन्होंने कहा कि बड़ी उपमण्डल में खाद्य, चिकित्सा अधिकारी कार्यक्षेत्र ने कार्य करना आरम्भ कर दिया है और इसके साथ क्षेत्र के स्वास्थ्य संस्थानों को समर्थन दिया गया है। ताकि लोगों को सम्पत्ति का सम्मान न करना पड़े इस अवसर पर नगर परिषद बड़ी पूर्व अध्यक्ष सदन लाल चौधरी, हरसेन चौधरी, नगर परिषद बड़ी के अध्यक्ष सुरजीत चौधरी, उपमहानगरपालिका बड़ी विवेक महारजन, श्रमण चिकित्सा अधिकारी बड़ी योगेश गुप्त, लोक निर्माण विभाग के अधीनस्थ अधिकारी परबसर सिंह तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी, अन्य सम्मान्य व्यक्ति उपस्थित थे।





## राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना ही कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य

### सीबीआरआई ने किया हिंदी पर कार्यशाला का आयोजन

रुड़की, 9 जनवरी (अनिल) : सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना और संस्थान के कर्मचारियों को हिंदी के अधिकाधिक उपयोग के लिए प्रेरित करना था।

कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर भी है। विशेषज्ञ वक्ता नराकास

के सचिव पंकज शर्मा ने कार्यालयों का यह हिंदी का महत्व, भारत सरकार की राजभाषा नीति, आधुनिक हिंदी टूल्स का उपयोग जैसे विषयों पर व्याख्यान दिए।

वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी मेहर सिंह ने राजभाषा कार्यान्वयन के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की जानकारी दी। कार्यशाला में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के 20 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। कार्यशाला का संयोजन वरिष्ठ हिंदी अधिकारी मेहर सिंह ने किया। इस अवसर पर संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी, डा. पीसी थपलियाल, डा. ताबिश आलम, मोहम्मद रियाजुर रहमान, डा. वीणा चौधरी, दिनेश कुमार, भावना, सुगम कुमार, हिमांशु शर्मा तथा प्रदीप कुमार आदि उपस्थित रहे।





HOME संपादकीय उत्तराखंड हेल्थ संस्कृति दुनिया धार्मिक वीडियो ज्योतिष अपराध राजनीति

उत्तराखंड संपादकीय

## Roorkee News...जिज्ञासा 2.0 पहल के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम | Click कर पढ़िये पूरी News

December 26, 2024 Malkhit rauthan 0 Comments #citylive today media house, #roorkee news, #roorkee-news-haridwar

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 पहल के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, सेक्टर-51, नोएडा के लगभग 50 छात्रों और 7 शिक्षकों का स्वागत किया गया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हेमलता और डॉ. चंदन स्वरूप मीना ने छात्रों और उनके शिक्षकों का अभिवादन किया, जिससे एक प्रेरक शैक्षिक यात्रा की शुरुआत हुई। कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी का दौरा किया,



जहाँ वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्रदान की। डॉ. चंदन ने भारत भर में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के व्यापक नेटवर्क पर प्रकाश डाला, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की की विशेषज्ञता पर जोर दिया। छात्रों ने कोविड-19 महामारी के दौरान विकसित



सीबीआरआई की अभिनव वायु शोधन प्रणालियों और प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना (पीएमएवाई-जी) के तहत टिकाऊ आवास में इसके महत्वपूर्ण योगदान के बारे में भी जाना। कार्यक्रम में इन प्रौद्योगिकियों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों पर प्रकाश डाला गया, जिससे छात्रों को अनुसंधान और नवाचार के प्रभाव की सराहना करने के लिए प्रेरित किया गया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।



# Visit of School Students at CSIR- CBRI under Jigyasa 2.0 and Janjatiya Gaurav Varsh Lecture on 18<sup>th</sup> December, 2024

## सीबीआरआई में छात्र-वैज्ञानिक संवाद में जुटे छात्र



मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें के.बी. मेरठ कैंट और के.बी. मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 2.0 अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया। जहां वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने

सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवस्य प्रौद्योगिकियों का अवलोकन प्रदान किया। इनमें सीर जल तापन प्रणाली, दो-गड्डे वाली स्वच्छता प्रणाली, ऊर्जा-कुशल ग्रामीण आवस्य, नवीन छत तकनीक और ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल रही।

स्मटीकरण में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्धि और सुपरटेक टिचन टावर्स का नियंत्रित

विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान एपीईई विभाग एनर्जी बिल्डिंग की प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। ताबिश आलम ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का किया आयोजन

३५० छात्र-छात्राओं एवं २० अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया

रुड़की ( दैनिक हाक ) : सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में पीएम ओ केंद्रीय के.बी., मेरठ कैंट और पीएम ओ केंद्रीय के.बी., मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान, छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण

ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल थी। स्मटीकरण में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन

उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्धि और सुपरटेक टिचन टावर्स का नियंत्रित विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान एपीईई विभाग एनर्जी बिल्डिंग की प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। ताबिश आलम ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की, तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए



प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया,

## सीबीआरआई में छात्र-वैज्ञानिक संवाद में जुटे छात्र



मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें के.बी. मेरठ कैंट और के.बी. मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 2.0 अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया। जहां वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने

सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवस्य प्रौद्योगिकियों का अवलोकन प्रदान किया। इनमें सीर जल तापन प्रणाली, दो-गड्डे वाली स्वच्छता प्रणाली, ऊर्जा-कुशल ग्रामीण आवस्य, नवीन छत तकनीक और ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल रही।

स्मटीकरण में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्धि और सुपरटेक टिचन टावर्स का नियंत्रित

विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान एपीईई विभाग एनर्जी बिल्डिंग की प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। ताबिश आलम ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।

**Visit of School Students at CSIR- CBRI under Jigyasa 2.0  
and  
Janjatiya Gaurav Varsh Lecture on 18<sup>th</sup> December, 2024**

## छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

स्वतंत्र चेतना रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में पीएम श्री केंद्रीय केवी, डील, मेरठ कैंट और पीएम श्री केंद्रीय केवी, मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया, जहाँ वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों का अवलोकन प्रदान किया। इनमें सौर जल तापन प्रणाली, दो-गड्ढे वाली स्वच्छता प्रणाली, ऊर्जा-कुशल ग्रामीण



आवास, नवीन छत तकनीक और ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल थी। स्पष्टीकरण में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्धि और सुपरटेक टिवन टावर्स का नियंत्रित विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा, उन्होंने अपनी यात्रा

के दौरान एपीआई विभाग एनर्जी बिल्डिंग की प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। ताबिश आलम ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।

## शैक्षिक भ्रमण में छात्र वैज्ञानिक संवाद का उठाया लाभ

■ कार्यक्रम में 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने संस्थान का किया शैक्षिक भ्रमण

रुड़की (एसएनबी)। सीबीआरआई, रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में पीएम श्री केंद्रीय केवीडील मेरठ कैंट और पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने संस्थान का शैक्षिक भ्रमण किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान, छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया, जहाँ वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों का अवलोकन प्रदान किया। इनमें सौर जल तापन प्रणाली, दो-गड्ढे वाली स्वच्छता प्रणाली, ऊर्जा-कुशल ग्रामीण आवास, नवीन छत तकनीक और ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल थी। स्पष्टीकरण



रुड़की : विद्यार्थियों को सम्बोधित करते सीबीआरआई के वैज्ञानिक।

में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्धि और सुपरटेक टिवन टावर्स का नियंत्रित विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा, उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान एपीआई विभाग एनर्जी बिल्डिंग की प्रयोगशाला

का भी अवलोकन किया। ताबिश आलम ने सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।



सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का किया आयोजन

मुद्रा की दृष्टि से इसका प्रभाव १) अत्यंत नकारात्मक, २) सीमांत नकारात्मक, ३) मध्यम से विनाश २.० से तथा ४) मध्यम से विनाश ३.० तक का प्रभाव है।

[illegible]

**Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन**



Manoj kumar  · 12 hours ago

0 82 1 minute read



कार्यक्रम के दौरान, छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी का दौरा किया, जहाँ वैज्ञानिकों और स्टाफ समन्वयकों ने उन्हें विभिन्न विषयों पर गहन जानकारी प्रदान की। श्री नदीन अहमद ने सीएसआईआर- सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर एक आकर्षक प्रस्तुति दी, जिसमें भवन विज्ञान, वास्तुकला और योजना, ऊर्जा दक्षता, और अधिक सहित इसके विविध अनुसंधान एवं विकास प्रयासों और प्रभागों पर प्रकाश डाला गया।

Uttarakhand में राष्ट्रीय खेलों के लिए तैयारियां जोरों पर, 31 करोड़ की लागत से बने शूटिंग रेंज में खिलाड़ियों की प्रैक्टिस शुरू

© 18 hours ago



**Dehradun:** उत्तराखण्ड सरकार की कैबिनेट बैठक हुई खत्म, 30 प्रस्तावों में लगी कैबिनेट की मुहर, ऊर्जा विभाग को लेकर बड़ा फैसला

🕒 18 hours ago

Forwarded



Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन - Nazariya...

NAZARIYA 🌐 NEWS ... 📰 📰 📰

Roorkee:सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

देखें पूरी खबर। इस लिंक पर क्लिक करें।



<https://www.nazariyanews.com/16222/>

फेसबुक पर जडें -\*

FOLLOW US

<https://www.facebook.com/nazariyanewsindia/>

व्हाट्सऐप ग्रुप पर जुड़ें -

<https://chat.whatsapp.com/IIQCIG3B1X93PDYv6JxRff>

खबर 📺 एवं विज्ञापन 📢 के लिए संपर्क करें-----

9368932200,9927328328

08:22

# Brainstorming "Climate Change Impacts on Mountain Hazards with Special Reference to Rock Ice Avalanches, Debris & GLOF" (CCMH) on 27 Nov 2024 at IHC New Delhi

8 हरिद्वार: दैनिक हाक, बृहस्पतिवार, 28 नवम्बर 2024

रुड़की

## सीएसआईआर-सीबीआरआई ने एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला का किया आयोजन

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है

रुड़की (दैनिक हाक): सीएसआईआर-सीबीआरआई ने भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करने के लिए एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

## CSIR-CBRI, Roorkee Organised A One-Day Brainstorming Workshop



Roorkee (The Hawk): CSIR-CBRI, Roorkee organised a one-day brainstorming workshop on "Towards Developing a National Plan for Climate Change Impacts on Avalanches, GLOFs, and Landslides" at Indian Habitat Centre, New Delhi on 27th November 2024. The aim of this workshop is to appraise and discuss the emerging issues of avalanches, GLOFs and landslides in Indian Himalayas. The workshop is intended to address the proposal and initiative of CSIR-CBRI in order to draw attention to the need for increased funding for research and development, capacity building, specialized organizations and institutions on mountain hazards, and national and international collaboration to address such emerging issues.

The brainstorming workshop has been inaugurated in the gracious presence of the Chief guest, Dr. M. Ravichandran (Secretary, MoES, Govt. of India), Guest of Honor, Dr. R.K. Bhandari (Former Director, CSIR-CBRI, Roorkee), Prof. R. Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI, Roorkee), Ar. S.K. Negi (Chair, organising committee) and Dr. D.P. Kanungo (Co-Chair, organising committee).

Prof. R. Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI, Roorkee), during his inaugural address emphasized the importance and necessity of preparing a national plan for climate change induced mountain hazards in the country. If such plan are not formulated now, in future the disaster induced GDP loss can reach up to 15% from 8% by 2047. Dr. D.P. Kanungo Chief Scientist and co-organising committee member emphasized the potential application of InSAR technology for monitoring and modelling

mountain hazards. He also presented the emerging efforts of CSIR-CBRI with a special emphasis on national level plan for GLOF and debris flow. The guest of honour, Dr. R. K. Bhandari (former Director CSIR-CBRI) has mainly focused on multi-hazard assessment and domino effect based approaches for effective disaster risk reduction. He has also discussed the potentiality of Big Data, AI and ML for data-informed decision making under the climate change scenario. Dr. M. Ravichandran, Chief Guest (Secretary, MoES, Govt. of India) particularly focused on space-time approaches for better understanding and prediction of such mountain hazards. He has also emphasized the ongoing climate change phenomena which has potential to increase the frequency and magnitude of these high mountain hazards. He encourages for considering holistic approach to deal with such hazards and establish collaboration with National and International agencies for effective disaster control. He recommended the following to the gathering for better risk management, including monitoring and early warning, hazard zonation, application of Radar technology, engineering solutions for vulnerable slopes, ecological and environmental management, engage local community and social education, policy making, and finally research and innovation.

Ar. S.K. Negi (Chief Scientist and Chair, organising committee) gives the vote of thanks after the inaugural session. Dr. Rajesh Kumar Dash was the organising secretary of this event. The workshop conducted successfully in 4 technical sessions, including hazard assessment, Succession and Measure, Quantify and Forecast, Mitigate and Prepare, and a panel discussion towards developing a National Plan with national and international experts working in this domain. Prof. R. Pradeep Kumar moderated the Panel discussion after the last session. More than 80 delegates and experts representing different organisations/institutions across the country along with technical and administration staff members of CSIR-CBRI, Roorkee are present in this brainstorming workshop.

# एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला आयोजित

रुड़की बट्टी विशाल। मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना सीएसआईआर-सीबीआरआई ने बुधवार को भारतीय परिसरों में, नई दिल्ली में 'हिमस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना' का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

## पर्वतीय खतरों की बेहतर समझ पर ध्यान केंद्रित किया

अजय कुमार, रुड़की

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में बुधवार को भारतीय परिसरों में, नई दिल्ली में 'हिमस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना' का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने विचार-मंथन कार्यशाला में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों पर की चर्चा

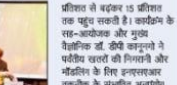
देश में जलवायु परिवर्तन को लेकर तैयार हो राष्ट्रीय योजना: प्रदीप

आयोजन समिति द्वारा

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने बुधवार को भारतीय परिसरों में, नई दिल्ली में 'हिमस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना' का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



# Janjatiya Gaurav Divas from 15th November to 26th November 2024 & Valedictory Function on 26<sup>th</sup> Nov., 2024

## छात्र-छात्राओं ने किया सीबीआरआई का शैक्षिक भ्रमण

अखंडता, चरित्र और नैतिकता, अच्छे इंसान के रूप में परिभाषित करते हैं: प्रो. प्रदीप कुमार

राष्ट्र की बढ़ती विशालता सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया गया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

news in literature in (L... (honore society), the in... ment of the state, in this... (university) the team to empty via in.

## CSIR-CBRI, Roorkhee, Organized The Valedictory Function To Mark The Culmination Of The Janjatiya Gaurav Divas Celebrations

Roorkhee (The Hawk): CSIR-CBRI, Roorkhee, organized the Valedictory function to mark the culmination of the Janjatiya Gaurav Divas celebrations. The event witnessed the active participation of around 100 students from Sheffield School, Piran Kalay and Government Secondary School, Roorkhee, along with faculty members. Dr. S. Maithi inaugurated the event with a brief and insightful introduction to the Janjatiya Gaurav Divas. Visiting students were introduced to the Cretaceous Exhibition Gallery, which showcased the cutting-edge research and innovations at CSIR-CBRI.

The event commenced with an inspiring inaugural address by the Prof. R. Pradyumn Kumar, Director, CSIR-CBRI, setting the tone for the celebration and emphasizing the importance of the event. The Director emphasized the importance of understanding humanity and cultivating three essential values: integrity, character, and morality, which define us as good human beings.

He further provided a brief historical overview of the struggles against British rule, highlighting how the tribal communities valiantly resisted oppression and made significant contributions to India's fight for freedom and also highlighted the significant contribution of CSIR-CBRI, Roorkhee, in designing and structuring EMBS schools across India. These schools are specifically designed to provide quality education to tribal students, ultimately fostering the upliftment of the tribal community and contributing to the nation's progress.

To commemorate Janjatiya Gaurav Divas, CSIR-CBRI, Roorkhee, organized a series of events from November 15

to November 26, 2024. These activities included drawing competitions, storytelling competitions, and school visits under the Jigyasa Program, aimed at fostering awareness and appreciation of tribal significance and explained why it is celebrated. He elaborated on its purpose to honor the history, cultural heritage, and contributions of tribal communities to India's progress and also provided a brief introduction of the Chief Guest, highlighting their achievements and contributions. His notable work focuses on the Jangam-Bhawan, where he has made significant contributions to water and environmental conservation. He also shared the slogan, "I am

movement. He was a legendary tribal leader, social reformer, and freedom fighter who played a pivotal role in India's history. Followed by the Chief Guest, Sh. Suresh Kumar, Head Master and Social Worker, delivered a motivational lecture. He highlighted the significance of Janjatiya Gaurav Divas and shared his 21-year journey as a teacher, highlighting his contributions to the upliftment of the tribal community. The program was enriched by the active participation of Mrs. Kuntal Singh, Mr. Avinash, Mr. Mohan Singh, Mr. Anan, Ar. S.K. Negi, Shri Khusendra Arora, Dr. Chandan, Swarnop Meena, Dr. Hemlata, Dr. Tahil Alam, Dr. Navin Nishant, were presented. The seamless coordination was gracefully handled by Sh. Nadeem Ahmad, Chief Scientist, ensuring its smooth execution and success.



Students and faculty members participating in the Valedictory Function.

## सी एस आई आर - केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।



Students and faculty members participating in the Valedictory Function.



Students and faculty members participating in the Valedictory Function.

## दैनिक भास्कर

जीवन के तीन मूल्य बनाते हैं अछा इंसान: प्रो. प्रदीप

● जिज्ञासा में 100 छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।



Students and faculty members participating in the Valedictory Function.

● हिंदुस्तान: दैनिक हाक, बुधवार, 27 नवंबर 2024

## सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा प्रोग्राम में 100 छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण आयोजित



Students and faculty members participating in the Valedictory Function.

## छात्र-छात्राओं ने किया शैक्षिक भ्रमण

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

## अत्याधुनिक तकनीक से रूबरू हुए छात्र-छात्राएं

प्रौद्योगिकी के प्रयोग से जीवन को अलग बनाने के तरीकों पर चर्चा



Students and faculty members participating in the Valedictory Function.

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।

मुख्यमंत्रालय के छात्र-छात्राओं ने सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान राड़की में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम का समापन किया।



Hon'ble Secretary, Shri K. Srinivas, Ministry of Housing & Urban Affairs, Govt of India  
New Delhi to CSIR-CBRI, on Nov. 24, 2024

## भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण प्रयोगशाला का उद्घाटन

उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग  
सुविधा के साथ देश की पहली  
प्रयोगशाला रुड़की में

रुड़की (एसएनबी)। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग सुविधा प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह भारत में अपनी तरह की अनूठी और अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। प्रयोगशाला का उद्घाटन आवास और शहरी मामलों के केंद्रीय मंत्रालय सचिव के श्रीनिवास ने किया। इस सुविधा के निर्माण के साथ सीबीआरआई रुड़की में 3 मंजिला प्रीकास्ट प्रीफिनिशड वॉल्यूमेट्रिक निर्मित भवन पर पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय परीक्षण और दो मंजिला, उड़ी कंक्रीट प्रिंटेड बिल्डिंग की छपाई भी शुरू करेगा। इस अवसर पर सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और



प्रयोगशाला का शुभारंभ करते केन्द्रीय सचिव।

आम आदमी तक किफायती कीमत पर सुरक्षित, उभरती, जलवायु अनुकूल और परंपरिक भवन प्रौद्योगिकियों के विकास और सुधार पर ध्यान केंद्रित करने की।

एनईईटीएफ परीक्षण सुविधा से किया जा सकेगा मूल्यांकन

एनईईटीएफ भारत में एक अनोखी और अत्याधुनिक परीक्षण सुविधा है, जिसमें अर्ध-स्थैतिक, रिवर्स साइकिल और छद्म-गतिशील लोडिंग स्थितियों के अंतर्गत 12 मीटर (4 मंजिला इमारतों) की ऊंचाई तक के इमारतों और संरचनाओं का पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय प्रदर्शन के मूल्यांकन किया जा सकेगा। नवाचारों और उभरती परंपरिक भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों के मटेनजर, एनईईटीएफ ऐसी संरचनाओं के परीक्षण के लिए प्लेटफॉर्म, चार मंजिला तक की पूर्ण-स्तरीय भवनों, महत्वपूर्ण उपकरणों और प्रणालियों की भूकंप नियमों के साथ उनके अनुपालन की जांच की जा सकेगी और भूकंपीय घटनाओं के दौरान नुकसान को कम करने और जीवन सुरक्षा के उद्देश्य से भूकंप रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को सत्यापित किया जा सके।

## सीबीआरआई में हुई भूकंप परीक्षण सुविधा एवं प्रयोगशाला की स्थापना

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह देश में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। जिसका उद्घाटन रविवार को आवास एवं शहरी मंत्रालय, नई दिल्ली के सचिव के, श्रीनिवास ने किया।

सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और आम आदमी तक किफायती कीमत पर सुरक्षित, उभरती, जलवायु अनुकूल तकनीकों को पहुंचाने के लिए यह प्रयोगशाला मददगार होगी।

डॉ. अजय चौधरी ने बताया कि एनईईटीएफ के जरिए 12 मीटर यानी 4

देश में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला

मंजिला इमारतों की ऊंचाई तक भूकंपीय प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जा सकेगा। भूकंपीय घटनाओं के दौरान नुकसान को कम करने के उद्देश्य से यह प्रयोगशाला महत्वपूर्ण साबित होगी। इससे रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को भी सत्यापित किया जा सकेगा।

पूर्वानुमान के लिए संख्यात्मक मॉडल विकसित करने में भी इसका उपयोग होगा। इसके साथ ही सीबीआरआई के इस कदम से अनुसंधान करने और आम आदमी के लिए उड़ी तकनीकी आधारित भवनों के निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। इस मौके पर डॉ. एसके नेनी, डॉ. डीपी कानुनगो, आशीष कपूर, जयजय पायशर, सुनम कुमार आदि मौजूद रहे। संवाद

शोध

सीएसआईआर-सीबीआरआई की अनूठी पहल

## राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट प्रयोगशाला का उद्घाटन

रुड़की, 24 नवंबर (प्रभात)। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग सुविधा की स्थापना की गई है, जो भारत में अपनी तरह की अनूठी और अत्याधुनिक है। इस प्रयोगशाला का उद्घाटन के, श्रीनिवास, सचिव आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार ने किया। इस सुविधा के निर्माण के साथ, सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में तीन मंजिला प्रीकास्ट प्रीफिनिशड वॉल्यूमेट्रिक निर्मित भवन पर पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय परीक्षण और दो मंजिला, उड़ी कंक्रीट प्रिंटेड बिल्डिंग की छपाई भी शुरू करेगा।

एनईईटीएफ भारत में एक अनोखी और अत्याधुनिक परीक्षण सुविधा है, जिसमें अर्ध-स्थैतिक, रिवर्स साइकिल और छद्म-गतिशील लोडिंग स्थितियों के अंतर्गत 12 मीटर (4 मंजिला इमारतों) की ऊंचाई तक के इमारतों और संरचनाओं का पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय प्रदर्शन के मूल्यांकन किया जा सकेगा। नवाचारों और उभरती परंपरिक भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों के मटेनजर, एनईईटीएफ ऐसी संरचनाओं के परीक्षण के लिए प्लेटफॉर्म, चार मंजिला तक की पूर्ण-स्तरीय भवनों, महत्वपूर्ण उपकरणों और प्रणालियों की भूकंप नियमों के साथ उनके अनुपालन की जांच की जा सकेगी और भूकंपीय घटनाओं के दौरान नुकसान को कम करने और जीवन सुरक्षा के उद्देश्य से भूकंप रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को सत्यापित किया जा सके।

रुड़की, 24 नवंबर (प्रभात)। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग सुविधा की स्थापना की गई है, जो भारत में अपनी तरह की अनूठी और अत्याधुनिक है। इस प्रयोगशाला का उद्घाटन के, श्रीनिवास, सचिव आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार ने किया। इस सुविधा के निर्माण के साथ, सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में तीन मंजिला प्रीकास्ट प्रीफिनिशड वॉल्यूमेट्रिक निर्मित भवन पर पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय परीक्षण और दो मंजिला, उड़ी कंक्रीट प्रिंटेड बिल्डिंग की छपाई भी शुरू करेगा।

रुड़की, 24 नवंबर (प्रभात)। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग सुविधा की स्थापना की गई है, जो भारत में अपनी तरह की अनूठी और अत्याधुनिक है। इस प्रयोगशाला का उद्घाटन के, श्रीनिवास, सचिव आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार ने किया। इस सुविधा के निर्माण के साथ, सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में तीन मंजिला प्रीकास्ट प्रीफिनिशड वॉल्यूमेट्रिक निर्मित भवन पर पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय परीक्षण और दो मंजिला, उड़ी कंक्रीट प्रिंटेड बिल्डिंग की छपाई भी शुरू करेगा।



शोध कार्य का अवलोकन करते प्रमुख अधिकारी।

## बिल्डिंग पर भूकंप का प्रभाव जानने में मददगार साबित होगी प्रयोगशाला : श्रीनिवास

रुड़की सीबीआरआई में उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला की हुई स्थापना

जयलाल महेशकर, रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह देश में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। जिसका उद्घाटन रविवार को आवास एवं शहरी मंत्रालय, नई दिल्ली के सचिव के, श्रीनिवास ने किया।



• आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्रीनिवास ने किया उद्घाटन

• मुख्य विज्ञानी डा. चौधरी ने भी इस तकनीक के बारे में विस्तार से दी जानकारी

सीबीआरआई में प्रयोगशाला में जयलाल का अवलोकन करते सचिव श्रीनिवास • सहायक निदेशक

जयलाल महेशकर, रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह देश में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। जिसका उद्घाटन रविवार को आवास एवं शहरी मंत्रालय, नई दिल्ली के सचिव के, श्रीनिवास ने किया।

जयलाल महेशकर, रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह देश में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। जिसका उद्घाटन रविवार को आवास एवं शहरी मंत्रालय, नई दिल्ली के सचिव के, श्रीनिवास ने किया।

जयलाल महेशकर, रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह देश में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। जिसका उद्घाटन रविवार को आवास एवं शहरी मंत्रालय, नई दिल्ली के सचिव के, श्रीनिवास ने किया।



# आयुर्वेद उतना ही पुराना है, जितने हमारे वेद : प्रो. प्रदीप

## ■ केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में मनाया गया आयुर्वेद दिवस

रुड़की, 12 नवम्बर (अनिल): सीएसआईआर- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में नौवां आयुर्वेद दिवस धूमधाम से मनाया गया। समारोह का उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने दीप प्रज्वलित जलाकर किया। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार ने कहा कि आयुर्वेद उतना ही पुराना है, जितने हमारे वेद। आयुर्वेद का वर्णन अथर्ववेद में मिलता है।

संस्थान की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा समिति के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश चंद्र थपलियाल ने बताया कि आयुर्वेदिक उपचार प्रणाली सबसे पुरानी और व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति में से एक है। आयुर्वेदिक



महिला चिकित्सक को सम्मानित करते हुए संस्थान के निदेशक।

उपचार में अधिकांश दवाएं हर्बल प्रकृति की होती हैं और इसलिए दुष्प्रभाव से मुक्त होती हैं। इस अवसर पर, आयुष्मान आरोग्य मंदिर, भंगेड़ी, सेपथरी डॉ. चित्रा वल्लिदया ने आयुर्वेद

के इतिहास और आस्टियोआर्थराइटिस के प्रबंधन पर जानकारी दी तथा डॉ. प्रियंका सिंह, आयुर्वेदशाला, बेलड़ी द्वारा आयुर्वेद के साथ स्वस्थ जीवनशैली और दैनिक दिनचर्या पर

रोचक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर एस.के. नेगी, डॉ. सुनील शर्मा, डॉ. बी.के. सुमन, डॉ. एम.के. सिन्हा, डॉ. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, सुशील आदि उपस्थित रहे।

## मानव जीवन में आयुर्वेद का विशेष महत्व : कुमार

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में नौवां आयुर्वेद दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि आयुर्वेद उतना ही पुराना है, जितने कि वेद। आयुर्वेद का वर्णन अथर्ववेद में मिलता है। मानव जीवन में इसके महत्व के कारण लोग अब आयुर्वेद को पांचवां वेद कहते हैं। दैनिक

दिनचर्या का पालन करने और जीवनशैली संबंधी बीमारियों को ठीक करने में आयुर्वेद महत्वपूर्ण है।

संस्थान की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा समिति के अध्यक्ष डा. प्रकाश चंद्र थपलियाल ने कहा कि आयुर्वेदिक उपचार प्रणाली सबसे पुरानी और व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति में से एक है। ऐसा माना जाता है कि आयुर्वेदिक उपचार में

अधिकांश दवाएं हर्बल प्रकृति की होती हैं और इसलिए दुष्प्रभाव से मुक्त होती हैं। साठ से अधिक स्टाफ और सेवानिवृत्त सदस्यों ने परिवार के साथ संस्थान के ओडीएस सभागार में मुख्य कार्यक्रम में भाग लिया और विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान का लाभ उठाया। इस अवसर पर आयुष्मान आरोग्य मंदिर, भंगेड़ी की डा. चित्रा वल्लिदया ने आयुर्वेद के इतिहास और

आस्टियोआर्थराइटिस के प्रबंधन पर जानकारी दी। वहीं, डा. प्रियंका सिंह, आयुर्वेदशाला, बेलड़ी की ओर से आयुर्वेद के साथ स्वस्थ जीवनशैली और दैनिक दिनचर्या पर रोचक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर एसके नेगी, डा. सुनील शर्मा, डा. बीके सुमन, डा. एमके सिन्हा, डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, सुशील आदि उपस्थित रहे।

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में जिज्ञासा 2.0 के तहत मेरठ के छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण

By ADMIN  
Nov 7, 2024



सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में जिज्ञासा 2.0 के तहत मेरठ के छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम के तहत मेरठ छावनी के पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय पंजाब ताईस के छात्रों के लिए एकदिवसीय शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया गया। इस भ्रमण में कक्षा 8 से 12 तक के करीब 400 छात्र-छात्राओं और 22 शिक्षकों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को सीबीआरआई के इतिहास, महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स, आधुनिक तकनीकों से ऐतिहासिक इमारतों के परीक्षण और संरक्षण, और देश के विकास में संस्थान के योगदान से परिचित कराना था। साथ ही, छात्रों को जीवन में प्रौद्योगिकी के उपयोग और भवन संरक्षण के तरीकों के बारे में जानकारी दी गई।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, और डॉ. नदीम अहमद के मार्गदर्शन में छात्रों को टेक्नोलॉजी पार्क, प्रयोगशालाओं, और प्रदर्शन गैलरी का भ्रमण कराया गया। वैज्ञानिक चंद्रभानु पटेल और डॉ. सोमिज मैथी ने 'वेस्ट टू वेल्थ' और 'आईओटी के अनुप्रयोग' जैसे विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर प्रदीप कुमार रामचर्ला ने अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर छात्रों को प्रेरित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चन्दन स्वरूप मीणा ने किया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों की टीम और ओडीएस टीम के सदस्य उपस्थित रहे।

दोरे के समापन पर, छात्रों और शिक्षकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की इस पहल की सराहना करते हुए प्रतिक्रिया दी और इस अनुभव को अपने शैक्षणिक विकास में महत्वपूर्ण बताया।



« हरिद्वार और आसपास के क्षेत्रों में हाथियों की दस्तक से दहशत, हरिद्वार के ग्रामीण क्षेत्रों में जंगली जानवरों का खतरा हाथियों को रोकना वन विभाग के लिए बड़ी चुनौती, देखे विडियो ,,,, बरकरार, हाथी की दस्तक से ग्रामीण भयभीत, »



## पहाड़ पर बोझ बन रहे मैदान

राज्य व्यूरो, जामरग • शिमला : पहाड़ों पर भूस्खलन के अलावा अन्य



आशीष पिपल  
• गजराण

प्राकृतिक आपदाओं का सबसे बड़ा कारण बढ़ता अतिरिक्त बोझ है। भवन निर्माण के लिए आज हर कोई परंपरागत तकनीक को छोड़कर आधुनिकता की दौड़ में शामिल हो रहा है। चुजगों को वैज्ञानिक आधार पता था और उसी आधार पर वह भवन निर्माण करते थे। यह कहना है कि सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के वरिष्ठ विज्ञानी आशीष पिपल का, जो हिमाचल के इंजीनियरों को भवन निर्माण का प्रशिक्षण देने के साथ आम लोगों को महत्वपूर्ण जानकारी दे रहे हैं। उनका कहना है कि पुराने समय में भवन निर्माण के लिए इस्तेमाल होने वाला पत्थर, मिट्टी और अन्य सामग्री आसपास की ही होती थी। वर्तमान में मकान का सारा सम्मान मैदानी क्षेत्रों से आ रहा है। इस कारण पहाड़ का बोझ और बढ़ाया जा रहा है। स्थानीय सामग्री से भवन निर्माण किया जाए तो हम अपनी जमीन का बोझ कम कर सकते हैं।

- भूस्खलन व आपदाओं का कारण बन रही मैदान से लाई जा रही भवन निर्माण सामग्री
- हिमाचल को तीन जोंन में बांटकर सुरक्षित भवन तकनीक पर किताब तैयार



आशीष ने बताया कि चाहे ऊंचे पहाड़ी क्षेत्र हों या मध्य और निचले, वहां एक जैसे भवनों का निर्माण हो रहा है। हालांकि सबकी ज़रूरतें और भौगोलिक स्थितियां अलग-अलग हैं। इंजीनियरों को इसी आधार पर प्रशिक्षित किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश भूकंप के लिए अति संवेदनशील है। ऐसे में भूकंपरोधी मकान बनाए जाना आवश्यक है। इसके लिए राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने सीबीआरआई रुड़की के इंजीनियरों के साथ मिलकर आम लोगों की सुविधा

### पेड़ों की वनावट बताती है जमीन का हाल

आशीष का कहना है कि भवन निर्माण के लिए कैसे जमीन की क्षमता की जांच होती है। लेकिन आम व्यक्ति पेड़ों की वनावट के आधार पर जमीन का हाल जान सकता है। पेड़ हमेशा सीधे आकाश की ओर जाते हैं। यदि पुराने पेड़ों में तिरछापन है तो भूमि घंसाव के कारण ऐसे होने की संभावना रहती है। यदि नए पेड़ों में भी ऐसा है तो वहां भूमि घंसाव जारी है।



के लिए भवन निर्माण पर पुस्तक तैयार की है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू सोमवार को समर्थ 2024 कार्यक्रम के तहत इस पुस्तक का विमोचन करेंगे। इसमें समझाया गया है कि कैसे आम व्यक्ति बिना इंजीनियर की मदद के भूकंपरोधी मकान बना सकेगा। इसमें बहुत सरल तरीके से डिजाइन के साथ मकान बनाने की तकनीक बताई गई है। हिमाचल को तीन जोंन में बांटकर भवन निर्माण की तकनीक भौगोलिक स्थिति के आधार पर बताई गई है।





<https://www.financialexpress.com/business/infrastructure-after-delhi-airport-canopy-collapse-government-enlists-cbri-to-advise-airport-operators-on-structural-safety/3632035/>

## After Delhi Airport canopy collapse, government enlists CBRI to advise airport operators on structural safety

The decision to engage CBRI follows several concerning incidents, including canopy collapses at Jabalpur and Rajkot airports in June. A senior official from the Ministry of Civil Aviation confirmed that the CBRI will guide the structural aspects of airport infrastructure, ensuring operators take necessary precautions to prevent such occurrences in the future.

Written by [FE Online](#)

Updated: October 6, 2024 16:24 IST



After Delhi Airport canopy collapse, government enlists CBRI to advise airport operators on structural safety.

In response to a series of structural failures at various airports, including the partial collapse of a canopy at Terminal 1 (T1) of Delhi's Indira Gandhi International Airport in June, the Indian government has enlisted the expertise of the Central Building Research Institute (CBRI). The Roorkee-based CBRI has been tasked with advising airport operators across the country on structural safety and integrity.

The decision to engage CBRI follows several concerning incidents, including canopy collapses at Jabalpur and Rajkot airports in June. A senior official from the Ministry of Civil Aviation confirmed that the CBRI will guide the structural aspects of airport infrastructure, ensuring operators take necessary precautions to prevent such occurrences in the future.

In addition to CBRI's involvement, the ministry is also organizing a technical workshop for airport operators, where experts from the institute will provide specialized training on structural safety and resilience.

### Also Read



**Chandigarh-Dibrugarh Express derailment...**



**Inflation calculator: What will be the value of Rs...**



**India breaks the mould, signs liberal treaty with UAE**



**Based on Japan's Shinkansen technology, wi...**

### Incident at Delhi Airport

On June 28, a partial collapse of a canopy at the old departure forecourt of T1 in Delhi resulted in one fatality and injuries to nine others. Heavy rains at the time of the incident were a significant contributing factor. The structural failure prompted an immediate review by structural engineers from IIT Delhi. The ministry is now reviewing the report from IIT Delhi and is continuing to examine the structural integrity of the rest of T1.

### Broader Inspection and Study

In the aftermath of the incident at Delhi's Terminal 1, the ministry ordered the Airports Authority of India (AAI) to conduct inspections of all major and minor airports across the country. This comprehensive review is aimed at identifying any structural vulnerabilities and ensuring that airports can withstand extreme weather conditions and other stressors.

According to ministry sources, a detailed structural study of Terminals 2 and 3 at the Delhi airport is also underway, conducted by a team from IIT Madras. However, DIAL (Delhi International Airport Ltd), which operates the Delhi airport, has yet to provide an official comment on the study's progress.

### Nationwide Review of Airport Infrastructure

The CBRI's advisory role is part of a broader initiative to safeguard India's airport infrastructure. The structural study at airports managed by AAI is ongoing, with a focus on both minor and major facilities. Following the June 28 incident, the AAI was directed to issue a circular instructing all airports under its jurisdiction to conduct thorough inspections of their structural strength.

The ministry emphasised the importance of these inspections in its statement, noting that findings from the studies would inform future safety measures and long-term policies to prevent similar incidents. These measures are seen as crucial as India's aviation sector continues to expand, with 157 operational airports, heliports, and waterdromes currently in service and more expected to open in the coming years.

In June, Minister of State for Civil Aviation Murlidhar Mohol informed Rajya Sabha that the tensile fabric canopies at Jabalpur and Rajkot airports had torn during incidents on June 27 and 29, respectively. Investigations into the causes of these failures are underway.

As air travel continues to rise, ensuring the safety and reliability of airport infrastructure is a key priority for both the government and airport operators. With the involvement of CBRI, IIT Delhi, and IIT Madras, authorities aim to address structural vulnerabilities and restore confidence in airports.

[Market Data](#)

(With PTI inputs)

# Uttarakhand: सीबीआरआई रुड़की की देखरेख में होगा तृतीय केदार तुंगनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार, सीएम ने दी अनुमति

अमर उजाला ब्यूरो, देहरादून Published by: अलका खामी Updated Mon, 30 Sep 2024 07:38 PM IST

सार

42309 Followers देहरादून

बदरीनाथ केदारनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अध्यक्ष अर्जुन अजय ने तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्य के लिए अनुमति देने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया है।



तुंगनाथ मंदिर - फोटो : अमर उजाला फाइल फोटो



विस्तार

Follow Us

विश्व में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित तृतीय केदार के नाम से विख्यात तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण और सुरक्षात्मक कार्यों के लिए प्रदेश सरकार ने अनुमति दे दी है। इस संबंध में सचिव धर्मस्व हरिचंद्र सेमवाल ने बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति को पत्र जारी किया। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की (सीबीआरआई) की देखरेख में मंदिर के संरक्षण कार्य किए जाएंगे। बदरीनाथ केदारनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अध्यक्ष अर्जुन अजय ने तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्य के लिए अनुमति देने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया है।

उन्होंने गत वर्ष भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के महानिदेशक को पत्र लिखकर समुद्र तल से 11,942 फीट की ऊंचाई पर स्थित तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

विज्ञापन



इस पर दोनों विभागों के विशेषज्ञों ने मंदिर का अध्ययन कर रिपोर्ट बीकेटीसी को सौंपी थी। रिपोर्ट के बाद बीकेटीसी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से भी इस संबंध में राय मांगी है। सीबीआरआई के वैज्ञानिक पिछले दिनों तुंगनाथ का भ्रमण कर चुके हैं। उनकी रिपोर्ट भी जल्दी ही बीकेटीसी को मिल जाएगी।

**Kedarnath Yatra: सोनप्रयाग में पैदल बाईपास का कार्य फिर शुरू, भूस्खलन जोन से मिलेगी निजात, 70 मजदूर जुटे**

इस बीच बीकेटीसी के अध्यक्ष अर्जुन ने शासन को एएसआई व जीएसआई की रिपोर्ट का हवाला देते तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्यों के लिए सहमति देने का आग्रह किया था। इस पर सचिव धर्मस्व व संस्कृति हरिचंद्र सेमवाल ने बीकेटीसी को पत्र लिखकर इसकी अनुमति प्रदान कर दी है।

शासन ने मंदिर की पौराणिकता को देखते हुए इसकी विस्तृत योजना रिपोर्ट (डीपीआर) और संपूर्ण कार्य सीबीआरआई रुड़की के माध्यम से कराने के निर्देश दिए हैं। शासन ने यह भी निर्देश दिए कि संपूर्ण कार्य एएसआई और जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए किए जाएंगे।

## सीबीआरआई रुड़की की देखरेख में होगा तुंगनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार

प्रदेश की धामी सरकार ने दी मंदिर के संरक्षण के कार्य को कराने की अनुमति

अमर उजाला ब्यूरो



तुंगनाथ मंदिर। कल

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के प्रधानदेशक को पत्र लिखकर समुद्र तल से 11,942 फीट की ऊंचाई पर स्थित तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

इस पर दोनों विभागों के विशेषज्ञों ने मंदिर का अध्ययन कर रिपोर्ट बीकेटीसी को सौंपी थी। रिपोर्ट के बाद बीकेटीसी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से भी इस संबंध में राय मांगी है। सीबीआरआई के वैज्ञानिक पिछले दिनों तुंगनाथ का भ्रमण कर चुके हैं। उनकी रिपोर्ट भी जल्दी ही

एएसआई, जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों संग समन्वय बना होगा कार्य

बीकेटीसी को मिल जाएगी।

इस बीच बीकेटीसी के अध्यक्ष अर्जुन ने शासन को एएसआई व जीएसआई की रिपोर्ट का हवाला देते तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्यों के लिए सहमति देने का आग्रह किया था। इस पर सचिव धर्मस्व व संस्कृति हरिचंद्र सेमवाल ने बीकेटीसी को पत्र लिखकर इसकी अनुमति प्रदान कर दी है।

शासन ने मंदिर की पौराणिकता को देखते हुए इसकी विस्तृत योजना रिपोर्ट (डीपीआर) और संपूर्ण कार्य सीबीआरआई रुड़की के माध्यम से कराने के निर्देश दिए हैं। शासन ने यह भी निर्देश दिए कि संपूर्ण कार्य एएसआई और जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए किए जाएंगे।



# अपने विचार हिंदी में अभिव्यक्त करें : गोयल

## सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े का समापन, प्रतियोगिता के विजेताओं को किया सम्मानित

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े के समापन पर अतिथियों ने सरकारी कामकाज के साथ ही अपने विचार व्यक्त करने में भी हिंदी के उपयोग पर बल दिया। इस मौके पर हिंदी पखवाड़े के दौरान हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया।

मंगलवार को सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ किया गया। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय जल संस्थान के निदेशक डॉ. मनमोहन कुमार गोयल ने कहा कि हिंदी हमारे गर्व की भाषा है। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हम सबका दायित्व है। हिंदी एक ऐसी सरल भाषा है जो देश के जनसामान्य से जुड़ी है और प्रयोग करने



रुड़की स्थित सीबीआरआई में आयोजित हिंदी पखवाड़े के समापन पर पुस्तिका का विमोचन करते संस्थान के निदेशक व अन्य। श्रेष्ठ : संस्थान

में आसान है।

इस अवसर पर सीबीआरआई की ओर से प्रकाशित वार्षिक पत्रिका निर्माणका का विमोचन भी किया गया। बताया कि राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए संस्थान में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी, हिंदी लेखन प्रतियोगिता, नोटिंग एवं

डाफ्टिंग प्रतियोगिता, हिंदी आशु भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन अवसर पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इनमें सुधीर कुमार को प्रथम, सुशील कुमार और अरुण कुमार को द्वितीय व अमन कुमार को तृतीय पुरस्कार

प्राप्त हुआ।

इसी तरह वैज्ञानिक तकनीकी कार्य के लिए प्रोत्साहन योजना में डॉ. प्रदीप चौहान को प्रथम, सुशील कुमार को द्वितीय, आईए सिद्धिकी को तृतीय और डॉ. ताबिश आलम, राकेश कुमार, डॉ. रविन्द्र बिष्ट, डॉ. सीमित्र मैती, विनीत कुमार सेनी और डॉ. सिद्धार्थ सिंह को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

इसके अलावा हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में अमन कुमार को प्रथम, हुमैरा अदहर को द्वितीय, पूजा को तृतीय और विश्वास त्यागी को प्रोत्साहन पुरस्कार मिला। आशु भाषण प्रतियोगिता में अर्पण महेश्वरी को प्रथम, विनीत कुमार सेनी को द्वितीय, शान मोहम्मद को तृतीय और धीरज कुमार को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस मौके पर प्रशासन निबंधक कुमुद सिंह, भूमिका, दीप्ति कर्माकर, अमन कुमार आदि मौजूद रहे।

# स्वच्छता ही सेवा व स्वच्छ भारत दिवस अभियान के तहत रुड़की रेलवे स्टेशन के आस-पास सफाई कार्यक्रम - दिनांक 30.09.2024 दिन सोमवार

## स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम

### रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा आयोजित किया गया स्वच्छता कार्यक्रम

रुड़की बंदी विशाल। आज आकर्षक बनाना एवं लोगों को वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। सेवा पखवाड़े के निमित्त रुड़की स्वच्छता के प्रति जागरूक करना होता, अपितु समाज को भी लाभ रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की था। इस अवसर पर सीबीआरआई होगा। उन्होंने स्टेशन अधीक्षक अरुण और रेलवे विभाग द्वारा एक रुड़की के उप-निदेशक हरपाल कुमार को सलाहना करते हुए कहा कि स्वच्छता हमारी संस्कृति का हिस्सा है और हमें अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। उन्होंने रेलवे विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाने के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड सदस्य और रोटरी आरसीसी अध्यक्ष पूजा नंदा ने कहा कि हमें अपने आसपास के प्रति जागरूक किया।



Harpal  
Forwarded

**समर्थ भारत न्यूज़**

रुड़की रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा एक स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन\* ----  
आज सेवा पखवाड़े के निमित्त रुड़की रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा एक स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन  
[www.samarthbharatnews.com](http://www.samarthbharatnews.com)

रुड़की रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा एक स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन\*  
<https://www.samarthbharatnews.com/latest/19733/>  
11:50 AM

Harpal  
Forwarded

**Pooja Classes**  
Pooja Classes was live.  
[www.facebook.com](http://www.facebook.com)

<https://www.facebook.com/share/v/qwcco7uZwmd8iw5b/?mibextid=qizOmg> 11:51 AM



## विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिए समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर रहा सीएसआईआर : शंकर

रुड़की, 27 सितम्बर (अनिल) : सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का 83वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। स्थापना दिवस का मुख्य समारोह संस्थान के रविन्द्रनाथ टैगोर सभागार में दीप-प्रज्वलन के साथ शुरू हुआ। इस अवसर पर केरल के आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सलाहकार ने मुख्य अतिथि श्री शंकर ने कहा कि सीएसआईआर देश की विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिये समाधान प्रस्तुत कर रहा है। आप सभी को इतने बड़े वैज्ञानिक और अनुसंधान संगठन का हिस्सा होने पर गर्व करना चाहिए। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने



समारोह को संबोधित करते केरल के आपदा प्रबंधन सलाहकार।

कहा कि हमें विशेष रूप से युवा वैज्ञानिकों को अनुसंधान के अपने लक्ष्य तय करने होंगे। सीएसआईआर में 25 वर्षों से अधिक की सेवा देने वाले कर्मिकों को सम्मानित किया गया। इसके अलावा पिछले एक वर्ष की

अवधि में सेवानिवृत्त होने वाले वैज्ञानिकों और अधिकारियों को भी सम्मानित किया गया। इंटर की परीक्षा में तीन विज्ञान विषयों में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले राहुल अरोड़ा पुत्र डॉ. हरीश चन्द्र अरोड़ा को सम्मानित किया गया।



## सीएसआईआर में स्थापना दिवस पर रही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम

» मद्रलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का 83वां स्थापना दिवस मनाया गया। मुख्य समारोह सुबह साढ़े दस बजे संस्थान के रविन्द्रनाथ टैगोर सभागार में हुआ। समारोह का शुभारम्भ दीप-प्रज्वलन के साथ शुरू हुआ। केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सलाहकार शंकर ने मुख्य अतिथि के रूप में बोले हुए कहा कि सीएसआईआर देश की विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिये समाधान प्रस्तुत कर रहा है। सभी को इतने बड़े वैज्ञानिक और अनुसंधान संगठन का हिस्सा होने पर गर्व करना चाहिए। सीएसआईआर की तरह ही सीबीआरआई भी भवन निर्माण से संबंधित विभिन्न प्रौद्योगिकियों के माध्यम से समाधान दे रहा है। सीबीआरआई की प्रौद्योगिकियों द्वारा लोगों के लिए आवास निर्माण की लागत में कमी आ रही है।



भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दीं। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि हमें विशेष रूप से युवा वैज्ञानिकों को अनुसंधान के अपने लक्ष्य तय करने होंगे। ताकि हम सामाजिक मुद्दों की पहचान करके कार्य कर सकें। चूँकि युवा वैज्ञानिकों को 2-3 दशकों तक संस्थान की सेवा करनी है, इसलिए उपलब्ध संसाधनों के अनुसार अपने लक्ष्यों तक पहुंचें। सीएसआईआर में 25 वर्षों से अधिक सेवा देने वाले कर्मिकों को हाथ घड़ी देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा पिछले एक वर्ष की

वर्ष की अवधि में सेवानिवृत्त होने वाले वैज्ञानिकों और अधिकारियों को घड़ी, शॉल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इंटर की परीक्षा में तीन विज्ञान विषयों में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले राहुल अरोड़ा पुत्र डॉ. हरीश चन्द्र अरोड़ा को 3 हजार रुपये देकर सम्मानित किया गया। स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में सीबीआरआई परिवार के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इसमें विजेता बच्चों को पुरस्कार दिए गए। इसके अलावा संस्थान के द्विवार्षिक प्रतिवेदन का विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया। समारोह का स्वागत संबोधन संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी ने दिया। डॉ. डीपी कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। डॉ. अजय चैरसिया, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। गरिमा सिंह ने मंच संचालन किया। इस अवसर पर संस्थान की प्रशासन नियंत्रक कुमुद सिंह, डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. पीसी थपलियाल, विनीत सेनी, नवल किशोर, किशोर कुलकर्णी, चंदन स्वरूप मीना, मेहर सिंह, अमन कुमार, विक्रम सिंह आदि उपस्थित रहे।



## मातृभाषा को अपनाने वाले देश बढ़ रहे आगे : डा. हरपाल

जामरग संवाददाता रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगाकर किया गया। वहीं, संस्थान में एक अक्टूबर तक हिंदी पखवाड़े के तहत कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर विज्ञानी डा. हरपाल ने कहा कि मातृभाषा को अपनाने से ही देश आगे बढ़ेगा।

संस्थान में शुक्रवार को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए वरिष्ठतम विज्ञानी डा. हरपाल सिंह ने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा को अपनाया है। चाहे वे चीन, जापान, स्पेन या फिर फ्रांस हों।



- सीबीआरआई रुड़की में हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगाकर किया गया हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ
- हिंदी टिप्पण आलेखन, आशु भाषण, हिंदी प्रश्नोत्तरी व हिंदी लेखन प्रतियोगिता होगी आयोजित

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगाकर किया गया।

उन्होंने सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हमें हिंदी में कामकाज करने की प्रवृत्ति को गंभीरता के साथ अपनाना होगा।

राजभाषा विभाग की ओर से बनाए गए नियमों का पालन करके अपने दायित्वों का निर्वाह कर राजभाषा हिंदी के प्रति अपना स्वाभाविक प्रेम दर्शाना होगा। मुख्य विज्ञानी डा.

थपलियाल ने संस्थान में चल रहा 'पुस्तक पर चर्चा' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादमी पुरस्कृत लेखक आरके नारायण की पुस्तक

की।

हिंदी अधिकारी मेहर सिंह ने बताया कि हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण आलेखन, आशु भाषण, हिंदी प्रश्नोत्तरी और हिंदी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इसके साथ ही कर्मियों के बच्चों के लिए भी हिंदी कविता पाठ तथा भाषण प्रतियोगिता आयोजित होगी। हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण एक अक्टूबर को होगा। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। इस अवसर पर डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, डा. प्रदीप चौहान, अखीश कुमार, योगी चौधरी, हुमरा अतार, सुप्रेम अरोड़ा, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, विनोद



## ‘मातृभाषा को अपनाने वाले देश ही दुनिया में आगे’

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई में शुक्रवार को हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ संस्थान के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डा. हरपाल सिंह ने किया। एक अक्टूबर तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर डा. सिंह ने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा को अपनाया है। मैं सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का आग्रह करता हूँ। इसके अलावा हमें हिन्दी में कामकाज करने की प्रवृत्ति को गंभीरता के साथ अपनाना होगा। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन कर अपने दायित्वों का निर्वाह

करना होगा। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डा. प्रकाश चन्द थपलियाल ने संस्थान में चलाए जा रहे ‘पुस्तक पर चर्चा’ कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादमी पुरस्कृत लेखक आरके नारायण की पुस्तक ‘मालगुडी का चलता पुर्जा’ पर चर्चा की। हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। सीबीआरआई के हिन्दी अधिकारी मेहर सिंह ने बताया कि हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता, हिन्दी प्रश्नोत्तरी, हिन्दी लेखन प्रतियोगिता कराई जाएगी। हिन्दी पखवाड़े का समापन और पुरस्कार वितरण एक अक्टूबर को होगा। इस अवसर पर डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, डा. प्रदीप चौहान थे।

## सीबीआरआई में शुरू हुआ हिन्दी पखवाड़ा, पुस्तक प्रदर्शनी

» मदारलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई में शुक्रवार से हिन्दी पखवाड़े का आयोजन शुरू हो गया। संस्थान में हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ किया गया।

हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. हरपाल सिंह द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा को अपनाया है। चीन, जापान, स्पेन, फ्रांस इसके उदाहरण हैं। वह सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का आग्रह करते हैं। इसके अलावा, हमें हिन्दी कामकाज करने की प्रवृत्ति को गंभीरता के साथ अपनाना होगा तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन कर अपने दायित्वों का निर्वाह कर राजभाषा हिन्दी के प्रति अपना स्वाभाविक प्रेम दर्शाना होगा। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डा. प्रकाश चन्द



थपलियाल ने संस्थान में चलाए जा रहे हिन्दी पुस्तक पर चर्चा के तहत साहित्य अकादमी पुरस्कृत लेखक आरके नारायण की पुस्तक मालगुडी का चलता पुर्जा पर चर्चा की। हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। सीबीआरआई के हिन्दी अधिकारी मेहर सिंह ने बताया कि हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता, हिन्दी प्रश्नोत्तरी, हिन्दी लेखन प्रतियोगिता की जाएगी। इसके साथ कर्मियों के बच्चों के लिए भी हिन्दी कविता पाठ तथा भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की जाएगी। हिन्दी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण 1 अक्टूबर को होगा। इस अवसर पर डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, डा. प्रदीप चौहान, अखीश कुमार, योगी चौधरी, अतार, सुप्रेम अरोड़ा, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, विनोद सैनी, डा. चन्दन मीना आदि उपस्थित रहे।



## घर बनाते समय स्थान चयन में बरतें सावधानी

## शहरी निकायों में सुरक्षित भवन निर्माण को लेकर कनिष्ठ अभियंताओं को लिए टिप्स

शिमला, 15 सितम्बर (भूविज्ञ): हिमचल प्रदेश में घर बनाने समय लोगों को स्थान का चयन करने में सावधानी बरनी चाहिए। इसके लिए जहाँ स्थान ऐसा होना चाहिए, जहाँ पर भूस्खलन व भूमि के धंसने का खतरा न हो।

यहाँ निर्माण में कई तरह की जाली का विशेष ध्यान देना चाहिए। शहरी निकायों में सुरक्षित भवन निर्माण को लेकर कनिष्ठ अभियंताओं को टिप्स

दिए गए। राहुबवार को शिमला के प्रदेश स्वीचलव में शहरी विकास विभाग तथा टी.सी.पी. के तहत आने वाले अभियंताओं के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का आयोजन हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रतिकारण (एच.पी.एस.डी.एम.ए.) द्वारा किया गया, जिसकी अध्यक्षता निदेशक एवं मुख्य अभियंता विरोध सचिव राज्य आपदा प्रतिकारण टी.सी.पी. राणा ने की। इस मौके पर सी.डी.आर.आई. रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक अजय चौरसिया और एस.के. नेगी ने अभियंताओं को सुरक्षित भवन निर्माण को लेकर टिप्स दिए। उन्होंने कहा कि घर बनाने समय लोकेशन का

ध्यान रखना होगा। इसके लिए ऐसे स्थान पर भूमि का चयन किया जाए, जहाँ पर भूस्खलन का खतरा न हो तथा वह धंसने वाली भूमि न हो। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि नदी-तालों के समीप भवन निर्माण न किया जाए।

साथ ही भवन भूकंपरोधी कैसे बनाया जाए, इसकी भी कार्यशाला में जानकारी दी गई। अब कार्यशाला में भाग लेने वाले अभियंता अपने अपने क्षेत्र में निर्माण कार्य से जुड़े लोगों तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियों को जागरूक करेंगे। कार्यशाला में टाउन एंड कंट्रोल प्लानिंग (टी.सी.पी.) और शहरी विकास (यू.डी.) विभाग के 61 शहरी स्थानीय निकायों के



शिमला : राज्य स्तरीय कार्यशाला में भाग लेते शहरी विकास और नगर एवं ग्राम निवेशन विभाग के इंजीनियर्स। (रंज)

इंजीनियर्स ने भाग लिया।

आगले माह पूरे प्रदेश में चलाना

जाएगा जागरूकता अभियान

आगले माह यानि अक्टूबर में

समस्त योजना के तहत पूरे प्रदेश में

एक विशेष जागरूकता अभियान

चलाया जाएगा। इसमें शहरी विकास

विभाग तथा टी.सी.पी. के अमीन

आने वाले कनिष्ठ अभियंता व अन्य

अभियंता अपने-अपने क्षेत्र में लोगों

को जागरूक करेंगे। वे सुरक्षित भवन

निर्माण को लेकर सार्वजनिक

प्रतिनिधियों, इंजीनियर्स, वास्तुकारों,

राजमित्रियों और आम जनता को

जागरूक करेंगे।



सौरसंज्ञा  
CSIR  
भारत का नवाचार इंजन  
The Innovation Engine of India

CSIR Daily News Bulletin  
[15-09-2024]

## Roorkee institute to retrofit 20 British-era buildings in Shimla

The Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, will undertake retrofitting of the British-era buildings in Shimla district, including the landmark colonial heritage properties, to make these earthquake-resistant. The buildings that will be retrofitted in the first phase include Raj Bhawan, Oak Over, Secretariat, Deputy Commissioner's Office, Superintendent of Police's Office, All India Radio Building and Doodhghat. A two-day workshop was organised by the District Disaster Management Authority (DDMA) here today, which was presided over by Additional District Magistrate (Protocol) Jyoti Rana. There are many old buildings in Shimla district, which need to be retrofitted so that disaster risk can be reduced. In the first phase, 20 old government buildings have been selected for retrofitting in Shimla district. Rana said it was the buildings that cause maximum loss of life during an earthquake, for which we need to make them quake-resistant. Himachal Pradesh falls in the most vulnerable seismic zones four and five, which make these areas highly prone to earthquakes, she added.

Source: TribuneIndia

Science Communication and Dissemination Directorate  
(SCDD)  
Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)  
Ministry of Science & Technology, Govt. of India  
Anusandhan Bhawan, 2 Rofi Marg, New Delhi - 110001  
Tel: +91 11 23714249; 23470121

## सचिवालय और राजभवन बनेंगे भूकंप प्रतिरोधक

जामरन संवाददाता, शिमला : शिमला जिला के भवनों को भूकंप प्रतिरोधक बनाने के उद्देश्य से वीरवार को बचत भवन में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी (प्रोटोकॉल) ज्योति राणा ने की। एडीएम ने कहा कि भूकंप के दौरान जीवन को हानि हमारे भवन ही पहुंचाते हैं। भवनों को भूकंप प्रतिरोधक बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश भूकंप की दृष्टि से सिस्मिक जोन चार व पांच में आता है। इसके चलते यहाँ पर भूकंप का अत्यधिक खतरा बना रहता है। जिला शिमला में कानूनी सारे पुराने भवन हैं। इनकी रेट्रोफिटिंग करना आवश्यक है ताकि आपदा जोखिम में कमी लाई जा सके। सीएम आवास, सचिवालय सहित राजभवन की रेट्रोफिटिंग केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) करेगा।



शिमला में वीरवार को आयोजित भूकंप प्रतिरोधक भवन निर्माण की दो दिवसीय कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी व अन्य। (जब)

भूकंप प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए सीबीआरआई करेगा काम शिमला में पहले चरण में 20 सरकारी भवनों का चयन

इसके तहत पहले चरण में 20 सरकारी भवनों का चयन किया गया है। इसमें राजभवन, ओक ओवर, हिमाचल प्रदेश सचिवालय, उपायुक्त कार्यालय, पुलिस अधीक्षक कार्यालय, आल इंडिया रेडियो बिल्डिंग एवं

दूरदर्शन बिल्डिंग, रोहडू उपमंडल के अंतर्गत उपमंडल दंडाधिकारी कार्यालय भवन, तहसील कार्यालय चिड़गांव, संयुक्त कार्यालय कॉलेक्स चिड़गांव, पुराना भवन नागरिक अस्पताल रोहडू एवं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भवन रोहडू, जुबल उपमंडल के अंतर्गत नागरिक अस्पताल जुबल, तहसील कार्यालय जुबल, पुलिस स्टेशन जुबल तथा राजकीय (छात्र) वरिष्ठ माध्यमिक

पाठशाला जुबल, कोटखाई उपमंडल के अंतर्गत राजकीय (छात्र) वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कोटखाई, तहसील कार्यालय कोटखाई एवं पुलिस स्टेशन कोटखाई तथा कुल्वा उपमंडल के अंतर्गत सीएससी कुल्वा के भवन प्रस्तावित हैं। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की से चौफ सॉफ्टवेस्ट एस्कै नेगी एवं सॉफ्टवेस्ट एस्कै नेगी विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए।

## ददाहू के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में घरों का रिस्क आकलन सर्वेक्षण किया

**सी.बी.आर.आई. रुड़की के वैज्ञानिकों और तकनीकी टीम ने किया सर्वेक्षण**

नाहन, 11 सितम्बर (चंद्र) : जिला सिरमौर के नाहन, पच्छाद व पांवटा साहिब उपमंडल क्षेत्रों में भूकंप, बाढ़ आदि आपदाओं के मद्देनजर राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, नई दिल्ली की अधिकृत परियोजना अनुसार लगभग 2000-2200 घरों का रिस्क आकलन सर्वेक्षण कार्य आरंभ हो चुका है। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सी.बी.आर.आई.) रुड़की उत्तराखंड से लगभग 30 सदस्यों में वैज्ञानिक एवं अन्य तकनीकी स्टाफ की टीम द्वारा यह सर्वेक्षण किया जा रहा है।

बुधवार को टीम ने नाहन उपमंडल के ददाहू के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के करीब 1 हजार घरों के सर्वेक्षण का कार्य किया। इस सर्वेक्षण में सिरमौर जिला के स्थानीय



नाहन : असुरक्षित भवन का सर्वेक्षण करने पहुंचे सी.बी.आर.आई. रुड़की की टीम व (नीचे) रिस्क आकलन करते हुए। (अवतल)

अभियंताओं, पंचायत प्रतिनिधियों, राजस्व अधिकारियों, खंड विकास अभियंताओं एवं अन्य स्टाफ द्वारा सहायता की जा रही है। टीम ऐसे असुरक्षित भवनों को भी चिह्नित कर रही है जोकि भूकंप एवं भूस्खलन के कारण अत्यधिक संवेदनशील एवं कमजोर हैं।

जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर डी.सी. कार्यालय नाहन के प्रभारी राजन कुमार शर्मा ने बताया कि सिरमौर जिला के नाहन, पांवटा साहिब और पच्छाद उपमंडल के करीब 2200 घरों

का रिस्क आकलन सर्वेक्षण किया जा रहा है। बुधवार को ददाहू में करीब 1 हजार घरों का रिस्क आकलन सर्वे टीम द्वारा किया गया।







**CSIR-Central Building Research Institute  
Roorkee (Uttarakhand)  
Scientists and Students Interaction Program  
10<sup>th</sup> September, 2024**



### स्मार्ट प्रौद्योगिकी पर विचार साझा किए

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में जिज्ञासा पहल के तहत वैज्ञानिक और छात्रों के बीच एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका विषय स्मार्ट प्रौद्योगिकी का भविष्य रोबोटिक एवं आईओटी रहा। कार्यक्रम में केंद्रीय विद्यालय एक के करीब 150 छात्रों और 10 सकाया सदस्यों ने हिस्सा लिया। संवाद कार्यक्रम में छात्रों को रोबोटिक और आईओटी जैसी उभरती हुई स्मार्ट तकनीकों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र सिंह बिष्ट, चंद्रभान पटेल, मुख्य वैज्ञानिक एआर एसके नेगी, डॉ. ताबिश आलम, आशीष पिप्पल, डॉ. नवीन निशांत, गुंजन जोशी, प्राची ढींगिया, पूजा, नमिता शाह, अमजद, विकास और महेश आदि मौजूद रहे।



## Technology Transfer Meeting with Laghu Udyog Bharati (LUB)

# आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए नई तकनीक अपनाएं उद्यमी

100 दिन-100 प्रौद्योगिकी पर सेमिनार आयोजित

रुड़की, 4 सितम्बर (अनिल) : सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेटेंटिलियम संस्थान देहरादून तथा लघु उद्योग भारती ने एक दिवसीय प्रौद्योगिकी सेमिनार '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' का आयोजन किया। सेमिनार में उद्योग, सीबीआरआई और लघु उद्योग भारतीय मिलकर इन तकनीकों का आदान-प्रदान करें, जिससे न केवल उद्योगों का नया होश, बल्कि समाज और देश के विकास में तेजी भी आएगी।

सेमिनार का उद्घाटन करते हुए सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि लघु उद्योग भारतीय देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन कर रहा है। चाँद दूसरी और सीएसआईआर-सीबीआरआई नई-नई



सेमिनार में भाग्यशाली अतिथि।



सेमिनार में अतिथि को सम्मानित करते लघु उद्योग भारती के पदाधिकारी।

प्रौद्योगिकी का अनुसंधान एवं विकास का देश के विकास में योगदान दे रहा है। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए उद्यमी नई तकनीक अपनाएँ।

लघु उद्योग भारती के सचिव ओम प्रकाश गुप्ता ने कहा कि सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेटेंटिलियम संस्थान देहरादून तथा लघु उद्योग भारती का यह संयुक्त प्रयास देश के विकास में ग्लोबल का पावर साबित होगा। सीएसआईआर-आईआईपी देहरादून के डा. अतुल रंजन ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर

सीएसआईआर मुख्यालय के वैज्ञानिक डा. मोरेश कुमार ने सीएसआईआर के '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' के संकल्प के बारे में जानकारी दी। पीबीई समूह के प्रमुख डा. डीपी कानुंगो ने कहा कि यह सेमिनार सभी उद्यमियों की समस्याओं और अपेक्षाओं का समाधान देने में अत्यंत ही सफल होगा। सेमिनार का संयोजन किर्लोस्कर इन्फ्रास्ट्रक्चर्स ने किया।

सेमिनार में लघु उद्योग भारती के प्रदेश अध्यक्ष विनय सिंह तोमर, सचिव रावीश गुप्ता, कोषाध्यक्ष मयंक गर्ग,

लघु उद्योग प्रबोध के प्रदेश संयोजक राजेश देवदत्त, चन्दन वर्मा, राजेश शर्मा, प्रिंक्स पैम्पर्स, मोहन, राजेश नाथ, देहरादून छात्रों के लिए अभ्यास सेंटर, स्टेट, मिन्स चक्रवर्ती, उमेश मेहता, प्रोफेसर हरिद्वार किता अग्रवाल, मनोज पुडौर, अमित ल्यार, दिनेश टेंटे सैक्रेटरी आरती साहान, सीबीआरआई में नवीन सैनी, डॉ. डीपी कानुंगो, भाग्य



## ‘तकनीकों का होगा आदान-प्रदान’

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में हुआ औद्योगिक सेमिनार

साईं सिटी रिपोर्टर

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेटेंटिलियम संस्थान देहरादून और लघु उद्योग भारती उत्तराखंड की ओर से औद्योगिक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार का आयोजन '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' के लिए किया गया। इससे सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती मिलकर उन तकनीकों का आदान-प्रदान करेंगे। इनसे न केवल उद्योगों को लाभ होगा बल्कि समाज और देश के विकास में तेजी भी आएगी।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि लघु उद्योग भारतीय देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन कर रहा है। चाँद दूसरी और सीएसआईआर-सीबीआरआई नई-नई प्रौद्योगिकियों का अनुसंधान और विकास करके देश के विकास में अपना योगदान दे रहा है।

लघु उद्योग भारती के सचिव ओम प्रकाश गुप्ता ने कहा कि सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेटेंटिलियम संस्थान देहरादून और लघु उद्योग भारती उत्तराखंड



रुड़की स्थित सीबीआरआई में आयोजित सेमिनार में उपस्थित वैज्ञानिक। स्रोत: संस्थान

लघु उद्योग भारती देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। प्रो. कुमार

का यह संयुक्त प्रयास देश के विकास में ग्लोबल का पावर साबित होगा। सीएसआईआर-आईआईपी देहरादून से पहुंचे डॉ. अतुल रंजन ने भी अपने विचार रखे। सीएसआईआर मुख्यालय के वैज्ञानिक डॉ. मोरेश कुमार ने सीएसआईआर के '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' के संकल्प के बारे में जानकारी दी।

पीबीई समूह के प्रमुख डा. डीपी कानुंगो ने कहा कि हमें विश्वास है कि आज का सेमिनार सभी उद्यमियों की समस्याओं और अपेक्षाओं का समाधान देने में अत्यंत ही सफल होगा। सेमिनार का संयोजन किर्लोस्कर इन्फ्रास्ट्रक्चर्स ने किया। इस अवसर पर डा. हरपाल सिंह, डॉ. मिन्की मेकान दिव्यबेहा, प्रो. एसके सिंह, डॉ. नीरज जैन, डॉ. रविन्द्र सिंह बिष्ट, डॉ. शिव विद्यन्मर, डॉ. ताविश आलम, डॉ. देवदत्त घोष आदि सम्मिलित रहे।

देहरादून, हरिद्वार, रुड़की, ऋषिकेश, एवं अन्य

newsdesk@motherlandvoice.org  
editor@motherlandvoice.org

उत्तराखंड

## एक दिवसीय औद्योगिक सेमिनार में किया उद्योगों पर विचार

मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेटेंटिलियम संस्थान, देहरादून तथा लघु उद्योग भारती उत्तराखंड के संयुक्त प्रयास से एसआईए पर एक दिवसीय औद्योगिक सेमिनार का आयोजन किया गया। 100 दिन, 100 प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखकर सेमिनार का आयोजन आयोजित किया गया। सेमिनार का उद्देश्य सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती द्वारा मिलकर उन तकनीकों का आदान-प्रदान करना है, जिससे उद्योग, समाज और देश के विकास में तेजी आएगी।

सेमिनार में सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेटेंटिलियम संस्थान, देहरादून तथा लघु उद्योग भारती, देहरादून के वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा उद्यमियों ने भाग लिया। सेमिनार का उद्घाटन करते हुए सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि लघु उद्योग भारती देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन कर रहा है। दूसरी ओर सीएसआईआर-सीबीआरआई नई-नई प्रौद्योगिकियों का अनुसंधान एवं विकास कर देश के विकास में अपना योगदान दे रहा है। इस अवसर पर लघु उद्योग भारती के सचिव ओम प्रकाश



गुप्ता ने कहा कि सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेटेंटिलियम संस्थान, देहरादून तथा लघु उद्योग भारती, उत्तराखंड का यह संयुक्त प्रयास देश के विकास में एक मील का पावर साबित होगा। सीएसआईआर-आईआईपी, देहरादून से पहुंचे डॉ. अतुल रंजन ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर सीएसआईआर

मुख्यालय के वैज्ञानिक डॉ. मोरेश कुमार ने अपने संबोधन में सीएसआईआर के 100 दिन, 100 प्रौद्योगिकी के संकल्प के बारे में जानकारी दी। पीबीई समूह के प्रमुख डा. डीपी कानुंगो ने कहा कि हमें विश्वास है कि सेमिनार सभी उद्यमियों की समस्याओं और अपेक्षाओं का समाधान देने में सफल होगा तथा हम

भारिय में भी उद्योगों की अपेक्षाओं के अनुरूप प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करेंगे। सेमिनार का संयोजन किर्लोस्कर इन्फ्रास्ट्रक्चर्स ने किया। सीबीआरआई और भारतीय पेटेंटिलियम संस्थान, देहरादून के वैज्ञानिकों ने उद्यमियों के समक्ष अपनी-अपनी प्रौद्योगिकियां प्रस्तुत कीं। इसमें डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. मिन्की मेकान दिव्यबेहा, प्रो. एसके सिंह, डॉ. नीरज जैन, डॉ. रविन्द्र सिंह बिष्ट, डॉ. शिव विद्यन्मर, डॉ. ताविश आलम, डॉ. देवदत्त घोष शामिल रहे। उद्यमियों ने वैज्ञानिकों से बन-बन प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी ली तथा प्रौद्योगिकी टीम का अवलोकन एवं प्रयोगशाला का प्रयोग भी किया। सेमिनार में रुड़की, हरिद्वार, देहरादून, मेरठ, मुजफ्फर नगर, गाँववाबाद, उत्तरप्र, कोटा आदि जगह से उद्यमी शामिल हुए, जिसमें चन्दन वर्मा, फंजन गोयल, अंकित सैनी, मनोज पुडौर, उमेश कुमार, अशोक शुक्ला, राजकुमार शर्मा, निमित्त नर, नीरज साहल रावेंद्र जैन आदि शामिल रहे। सेमिनार में सीबीआरआई और से एसके नेगी, डॉ. अजय वैरिमा, डॉ. पीसी बर्वालिया, डॉ. एसके पाणिगुप्ता, प्रो. एसके सिंह, हित गुप्ता, राजीव शर्मा, अमित कुंआ आदि शामिल रहे।



देहरादून, हरिद्वार, रुड़की, ऋषिकेश, एवं अन्य

newsdesk@motherlandvoice.org  
editor@motherlandvoice.org

उत्तराखंड

## नई दिल्ली में हुआ एक सप्ताह-एक थीम कार्यक्रम का आयोजन

» मंदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली तथा सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की द्वारा संयुक्त रूप से इंडिया हेबिटाट सेंटर, नई दिल्ली में एक सप्ताह-एक थीम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का थीम 'सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग' रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रविंद्र कुमार गोयल, प्रधान कार्यकारी निदेशक, पुल, भारतीय रेलवे ने कहा कि हम जो भी अनुसंधान करें, वे चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष तथा लागत प्रभावी हों, जो समाज को प्रत्यक्ष रूप में लाभ दें। समारोह के गेस्ट आफ ऑनर यूके भट्टाचार्य, पूर्व निदेशक, एनटीपीसी लि. तथा अध्यक्ष, अनुसंधान परिषद,

सीएसआईआर-एसईआरसी ने कहा कि विकसित भारत-2047 को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई के निदेशक एवं सीआईई के थीम निदेशक डॉ. एन. आनन्दवल्लू ने स्वागत भाषण दिया। आयोजक सीएसआईआर के निदेशक प्रो. मनोरंजन परिदा ने हवन वीक-वन थीम का बारे में जानकारी दी। सीएसआईआर, भोपाल के निदेशक डॉ. अवनीश कुमार श्रीवास्तव, सीएसआईआर-सीएमआईआरआई, दुर्गापुर के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू और सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भी इस दौरान सम्बोधित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य सिविल इंजीनियरी के क्षेत्र में शोध कार्य में

लगी सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालों को एक मंच पर लाना था। कार्यक्रम में सीआरआईआई, नई दिल्ली; सीबीआरआई, रुड़की; एएमपीआरआई, भोपाल; एसईआरसी, चेन्नई तथा सीएमआईआरआई, दुर्गापुर ने शिरकत की। इस अवसर पर सीबीआरआई रुड़की के डॉ. अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक ने भवन भौतिकी और सामग्री निर्माण रसायन समेत पर, सीएसआईआर-सीआरआईआई, नई दिल्ली के डॉ. एमल्लू मधु, मुख्य वैज्ञानिक ने मोबिलिटी इंफ्रास्ट्रक्चर और प्लानिंग पर, सीएसआईआर-एएमपीआरआई, भोपाल के डॉ. प्रदीप राजन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने ऑटोमेशन और रोबोटिक्स पर, डॉ. पी. अशोकन ने अपशिष्ट से सम्पदा, सीएसआईआर-एसईआरसी चेन्नई के डॉ. एस. सतर्ष, मुख्य वैज्ञानिक ने

संरचना निगरानी और उसका जीवन विस्तार पर तथा सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई के डॉ. पी. हरिकृष्णा मुख्य वैज्ञानिक ने आपदा न्यूनीकरण संरचना विषय पर व्याख्यान दिए। सीएसआईआर-एएमपीआरआई, भोपाल के निदेशक डॉ. अवनीश कुमार श्रीवास्तव ने मुख्य अतिथि रविंद्र कुमार गोयल, विशिष्ट अतिथि, गेस्ट आफ ऑनर यूके भट्टाचार्य ने प्रयोगशालाओं के निदेशकों, वक्ताओं, वैज्ञानिकों का धन्यवाद किया। आज ही सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने दिल्ली में सीबीआरआई उद्योग समामग का आयोजन किया गया। जिसमें सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम के मोडरेटर प्रो. आर. प्रदीप कुमार और संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक, डॉ. अजय

चौरसिया ने संरचनात्मक रेट्रोफिटिंग, स्वास्थ्य निगरानी और जलवायु-लचीले भवन भारतीय परिदृश्य पर पैनाल चर्चा की। उद्योगों प्रतिनिधियों ने कहा कि उद्योगों की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप काम करने पर बल दिया तथा कोड ऑफ कंडक्ट को अद्यतन करने पर भी जोर दिया। डॉ. एसके सिंह ने कहा कि हम उद्योगों की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए कार्य करेंगे। डॉ. हरपाल सिंह ने अग्नि अनुसंधान कार्यक्रम पर चर्चा की। डॉ. पीसी थपलियाल ने धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. खीपी कानुनगो, डॉ. एसके सिंह, नदीम अहमद, डॉ. एसके पाणिगुहि, डॉ. गणेश बाबु बालम, डॉ. सोमिंद्र मैत्री, डॉ. किशोर कुलकर्णी, डॉ. शिवा चिदम्बरम, डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, डॉ. तावश आलम आदि उपस्थित रहे।

## चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष व लागत प्रभावी हों अनुसंधान : रविंद्र



दिल्ली में सीबीआरआई रुड़की की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि। स्रोत : संस्थान

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली एवं सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की की ओर से संयुक्त रूप से इंडिया हेबिटाट सेंटर, नई दिल्ली में 'सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एक सप्ताह तक यह कार्यक्रम चलेगा। इसमें सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में भारतीय रेलवे के प्रधान कार्यकारी निदेशक रविंद्र कुमार गोयल वतीर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने कहा कि हम जो भी अनुसंधान करें, वे चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष और लागत प्रभावी हों, जो समाज को प्रत्यक्ष रूप में लाभ दें। समारोह के गेस्ट

ऑफ ऑनर एनटीपीसी लिमिटेड के पूर्व निदेशक यूके भट्टाचार्य रहे। उन्होंने विकसित भारत-2047 को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस मौके पर सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई के निदेशक एवं सीआईई के थीम निदेशक डॉ. एन. आनन्दवल्लू, सीएसआईआर-सीआरआईआई के निदेशक प्रो. मनोरंजन परिदा द्वारा 'वन वीक-वन थीम' के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। सीएसआईआर-एएमपीआरआई, भोपाल के निदेशक डॉ. अवनीश कुमार श्रीवास्तव, सीएसआईआर-सीएमआईआरआई, दुर्गापुर के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू और सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भी विचार रखे। संपाद

**हिन्दुस्तान**  
www.livehindustan.com

### विकसित भारत का लक्ष्य लेकर करें अनुसंधान कार्य: भट्टाचार्य

रुड़की, संवाददाता। केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली (सीएसआईआर) और केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की की ओर से संयुक्त रूप से इंडिया हेबिटाट सेंटर नई दिल्ली में एक सप्ताह-एक थीम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का थीम 'सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग' रहा। कार्यक्रम में भारतीय रेलवे पुल के कार्यकारी निदेशक रविंद्र कुमार गोयल मुख्य अतिथि रहे। मुख्य अतिथि ने कहा कि हम जो भी अनुसंधान करें वे चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष और लागत प्रभावी हों। जो समाज को प्रत्यक्ष रूप में लाभ दें। समारोह के गेस्ट ऑफ ऑनर एनटीपीसी के पूर्व निदेशक यूके भट्टाचार्य ने कहा कि विकसित भारत-2047 को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया। सीएसआईआर-एसईआरसी चेन्नई के निदेशक और सीआईई के थीम निदेशक डॉ. एन. आनन्दवल्लू ने स्वागत भाषण दिया। आयोजक सीएसआईआर सीआरआईआई के निदेशक प्रो. मनोरंजन परिदा की ओर से 'वन वीक-वन थीम' के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का उद्देश्य सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में शोध कार्य में लगी सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं को एक मंच पर लाना था। सीबीआरआई रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया ने भवन भौतिकी और सामग्री पर व्याख्यान दिए।

**उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार करें काम: प्रो. प्रदीप**

सीबीआरआई रुड़की ने दिल्ली में सीबीआरआई उद्योग समामग का आयोजन किया गया। जिसमें सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। उद्योगों प्रतिनिधियों ने उद्योगों की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप काम करने पर बल दिया। कोड ऑफ कंडक्ट को अद्यतन करने पर भी जोर दिया। डॉ. एसके सिंह ने कहा कि हम उद्योगों की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए काम करेंगे। डॉ. हरपाल सिंह ने अग्नि अनुसंधान के कार्यक्रम पर चर्चा की। इस दौरान डॉ. थपलियाल, डॉ. सिंह, डॉ. कानुनगो, डॉ. एसके सिंह, नदीम अहमद, डॉ. पाणिगुहि, विनीत सेनी, डॉ. बालम, डॉ. मैत्री, डॉ. कुलकर्णी, डॉ. चिदम्बरम, डॉ. मीना, डॉ. तावश आलम आदि मौजूद रहे।

## Post-Disaster Needs Assessment team begins study on Chooralmala landslides



A study team of the National Disaster Management Authority (NDMA) visited the landslip-hit areas in Vilangad in Kozhikode on Saturday (August 31, 2024). The team that had earlier assessed the situation in Wayanad was in Vilangad upon the request of MLA E.K. Vijayan. The four-member team comprising R. Pradeep Kumar, Director of Scientists D.P. Kanungo, Ajay Chaurasia and Member Secretary of Kerala State Disaster Management Authority Shekhar. L. Krurikose visited areas such as Vayad, Panniyeri, Malayangadu and Vilangad town, some of the worst hit areas in the landslip that took place on July 30, 2024. They spoke to survivors and collected data from the local authorities. A Post-Disaster Needs Assessment (PDNA) report will be submitted to the Central Government within two weeks, comprising the information gathered from Chooralmala, Mundakkai and Vilangad. The team was accompanied by MLA E.K. Vijayan and representatives of Vanimal Grama Panchayat. The Tamil Nadu government has inked a pact with US-based Ohmium to set up a new green hydrogen and electrolyser gigafactory in Chengalpattu district of the state. The Memorandum of Understanding (MoU) was signed in the presence of Chief Minister M K Stalin in San Francisco, on the second day of the CM's US trip, on Saturday. State Minister for Industries, Investment Promotions and Commerce TRB Rajaa and Ohmium Co-Founder and CEO Arne Ballantine were present. Ohmium's proposed Chengalpattu plant will be set up at an estimated cost of Rs 400 crore. The plant is expected to generate 500 jobs, a state government release said. Green hydrogen, a clean energy source that only emits water vapour and leaves no residue in the air, unlike coal and oil, is expected to enable India's transition to clean energy. Ohmium has existing R&D partnerships with the IIT Madras Research Park (IITMRP) and the ICSIR- in Karaikudi.

— Team SCDD

Science Communication and Dissemination  
Directorate  
(SCDD)  
Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)  
Ministry of Science & Technology, Govt. of India  
Anusandhan Bhawan, 2 Rafi Marg, New Delhi - 110001  
Tel: +91 11 23714249; 23470121



## Gurgaon: More trouble in Paradiso, 7th tower at Chintels condo declared unsafe

Rao Jaswant Singh / TNN / raojaswantsingh / Updated: Aug 21, 2024, 07:05 IST

SHARE PRINT AA FOLLOW US

CBRI deemed Tower C of Chintels Paradiso uninhabitable due to severe structural issues, similar to six other towers previously declared unsafe after a tragic collapse in 2022. The institute identified high chloride content and substandard concrete as the main causes. Demolition has been advised for safety.



GURGAON: The Central Building Research Institute (CBRI) has declared Tower C of Chintels Paradiso unsafe for habitation, following a structural analysis.

This is the seventh tower in the condominium of nine towers - where a vertical collapse of living rooms killed two residents in Feb 2022 - to be declared unfit.

### 60 FAMILIES LIVING IN TOWER C

9 towers in Chintels Paradiso  
➤ D, E, G and H (phase 1) and A, B, C, J (phase 2)

7 towers declared unsafe  
By HT Delhi, dist admin | D, E, F, G, H and J (total 340 flats)  
By CBRI | C (64 flats)

**What CBRI report says**  
Unsafe for habitation | Tower C is declared unsafe for habitation due to severe structural deficiencies, including extensive corrosion of reinforcement in almost all structural elements, primarily caused by high chloride content in concrete.

**High cost of repairs** | The cost of necessary repairs, retrofitting, and rehabilitation would exceed 50% of the original construction cost, making retrofitting economically unfeasible.



**Razing recommended** | Demolition of Tower C is recommended due to widespread structural failures and high maintenance requirements.

60 families living in Tower C

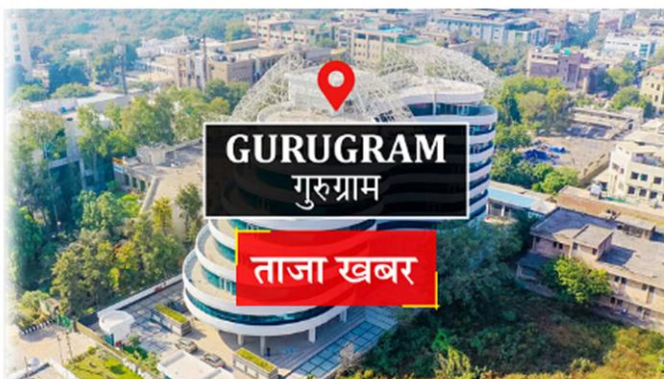


CBRI's findings uncovered extensive structural deficiencies, primarily due to severe corrosion caused by high chloride content and substandard concrete.

## Gurugram News: अब तक सात... चिंटल्स पराडिसो का सी-टावर भी असुरक्षित घोषित

नोएडा ब्यूरो

Updated Wed, 21 Aug 2024 04:35 AM IST



सीएसआईआर-सीबीआरआई की रिपोर्ट में रहने योग्य नहीं है सी-टावर

₹10 Lakh

C

Games & Puzzles

Real Estate

India

World

Live Updates

Duleep Trophy 2024 Live Score

Videos

Photos

+ 10 mo

## Gurugram real estate news: Audit declares 7th tower at Chintels Paradiso as unsafe

By Abhishek Behl

Aug 21, 2024 06:22 AM IST



The structural audit, undertaken by experts from the Central Building Research Institute (CBRI), was commissioned by Chintels India Ltd.



Tower C of Chintels Paradiso, which has been deemed unsafe by experts of CBRI, who conducted the structural audit of the building at Sector-109 near Dwarka Expressway, in Gurugram. (HT PHOTO)

A structural audit of the Chintels Paradiso condominium at Gurugram Sector 109 has deemed a seventh tower in the complex — Tower C — to be unsafe, and has recommended that it be demolished, people aware of the development said on Tuesday.

10:02



india.indiatimes.com



Now Playing

Badlapur: Mob Pelts School, Storms Railway Tracks Over Abuse Of Two Kids

iciencies, including extensive corrosion of reinforcement in almost all structural elements, primarily caused by high chloride content in concrete.

**High cost of repairs** | The cost of necessary repairs, retrofitting, and rehabilitation would exceed 50% of the original construction cost, making retrofitting economically unfeasible.

**Razing recommended** | Demolition of Tower C is recommended due to widespread structural failures and high maintenance requirements.

60 families living in Tower C

CBRI's findings uncovered extensive structural deficiencies, primarily due to severe corrosion caused by high chloride content and substandard concrete.



## सीबीआरआई ने हरी प्रोजेक्ट को किया लांच

सीएसआईआर की महानिदेशिका डॉ. एन. कलैसेल्वी ने सीबीआरआई में हरी का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में सीआरबी की आधारशिला

[www.livehindustan.com](http://www.livehindustan.com)

<https://www.livehindustan.com/uttarakhand/roorki/story-csir-director-inaugurates-high-altitude-regions-initiative-at-cbri-highlights-climate-resilient-buildings-201723814110271.html>

## सीबीआरआई ने हरी प्रोजेक्ट को किया लांच

सीएसआईआर की महानिदेशिका डॉ. एन. कलैसेल्वी ने सीबीआरआई में हरी का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में सीआरबी की आधारशिला रखी गई। उन्होंने उद्घाटन वाले शेषों के लिए ऊर्जा कुशल समाधानों की सराहना की। सीबीआरआई...



Newsrap • हिन्दुस्तान, राउरी

Fri, 16 Aug 2024 06:45 PM



सीएसआईआर की महानिदेशिका और विज्ञान और औद्योगिक अनुसंधान विभाग की सचिव डॉ. एन. कलैसेल्वी ने केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में हरी एलीक्यूट रीजन ऑफ इंडिया (एएसआईआर, हरी) का औपचारिक शुभारंभ किया। शुक्रवार को सीबीआरआई के सभागार में कार्यक्रम के शुभारंभ सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का स्वागत करने के साथ किया। बात विद्या मंदिर सीबीआरआई स्कूल के छात्रों ने एक मृदा प्रदर्शनी से मुख्य अतिथि का स्वागत किया। इसके बाद क्लाइमेट रिजिलिएंट बिल्डिंग्स (सीआरबी) की आधारशिला रखी गई। यह आयोजन जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा, सेवा, स्थिरता, अर्थव्यवस्था, सौंदर्य, आराम और सामाजिक स्वीकार्यता को ध्यान में रखकर भवन निर्माण के प्रति सीएसआईआर की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। डॉ. कलैसेल्वी ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सीएसआईआर-सीबीआरआई की विभिन्न अत्याधुनिक सुविधाओं का दौरा किया। उन्होंने हरी की रणनीतिक और सामाजिक महत्ता पर जोर दिया। कहा कि यह लड़ाकू जैसे शेषों के लिए स्थाई बुनियादी ढांचे, ऊर्जा समाधान और पर्यावरण प्रबंधन रणनीतियों को प्रदान कर सकता है। उन्होंने सीबीआरआई के बुनियादी अनुसंधान और विकास आरएचडी कार्य पर ध्यान केंद्रित करने और एकूट एवं अनूठी तकनीकों के निर्माण के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने उद्घाटन वाले शेषों के लिए प्रस्तुत ऊर्जा-कुशल समाधानों और एक्सचेंज सोलर वाटर हीटर और सीबीआरआई की प्रोटीन प्रिंटर्स का उपयोग करके 3-मंजिला इमारत बनाने की पद्धत की भी प्रशंसा की।

प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने हरी प्रोजेक्ट कि चुनौतियों और सीबीआरआई की क्षमता के बारे में बताया। कहा कि यह पहल न केवल उच्च-ऊँचाई वाले अनुसंधान में तकनीकी प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। बल्कि भारत की रणनीतिक और सामाजिक भलाई में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है।

सीबीआरआई के वैज्ञानिकों द्वारा हरी पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी गई। जिसमें उन्होंने लैंड लैंडस्काप के लोगों द्वारा किन वर्तमान चुनौतियों का सामना किया का रुझा है उनपर विशेष चर्चा की। इसमें ड्राई टॉपोग्राफी, पानी की कमी, वाटर हीटर की इफिशिएन्सी में कमी के कारण ज्यादा ऊर्जा का प्रयोग और उद्घाटन वाले शेषों में बिजली की कम उपलब्धता जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। डॉ. नवीन, डॉ. विट, डॉ. मैथी, डॉ. चन्दन, निर्मल, डॉ. नागेश, डॉ. किशोर ने प्रोजेक्ट की विस्तृत जानकारी दी। वैज्ञानिक एचके मेग्रा द्वारा धन्यवाद प्रस्तुत किया गया। उन्होंने यह आश्वासन दिया कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. कामनगो, डॉ. हरपाल, डॉ. धरमियाल, महीम, डॉ. लीना, डॉ. अरोड़ा, डॉ. राजेश, डॉ. एके सिंह, अविनाश, परवेश, डॉ. जीशान, डॉ. गणेश, डॉ. आशीष, कुमुद सिंह, आदि मौजूद रहे।



# सूर्य तिलक अभिनंदन समारोह का आयोजन

## ■ भारत विकास परिषद अविरल गंगा शाखा रुड़की ने किया कार्यक्रम

रुड़की, 11 अगस्त (अनिल) : भारत विकास परिषद अविरल गंगा शाखा रुड़की ने त्योहारों का महाउत्सव मनाया और सूर्य तिलक अभिनंदन समारोह का भी आयोजन किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण सीबीआरआई वैज्ञानिकों द्वारा भगवान राम की प्रतिमा को सूर्य तिलक का पीपीडी के माध्यम से प्रस्तुति देना रहा।

नगर के एक मोटल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सीबीआरआई निदेशक आर प्रदीप कुमार ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। परिषद की अध्यक्ष प्रीति अग्रवाल ने सभी सदस्यों और अतिथियों का



सम्मानित किए गए सीबीआरआई के वैज्ञानिक।

स्वागत कर कार्यक्रम की शुरुआत की। इस अवसर पर सावन मास के त्योहार शिवरात्रि, तीज, 15 अगस्त, राखी, जन्माष्टमी को नृत्य और नाटकों के द्वारा इनकी महिमा और महत्व को दर्शाया गया।

शाखा ने इस वर्ष से शुरू हुआ प्रथम

अविरल रमेश चंद्र मित्तल उत्कृष्ट अनुसंधान सम्मान मुख्य अतिथि सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार एवं टीम सदस्यों वी. चक्रधर, डॉ. देवदत्ता घोष, डा. रविंद्र, डा. सूरज कुमार, ई. कांतिलाल, ई. दिनेश कुमार और समीर को दिया। इन्होंने

अयोध्या में नवनिर्मित राम मंदिर में भगवान राम की मूर्ति के माथे पर सूर्य की रोशनी से तिलक लगाया था। इस अवसर पर वैज्ञानिकों ने अपने द्वारा लगाए सूर्य तिलक की पीपीडी के माध्यम से प्रस्तुति दी और बताया इस कार्य के लिए अयोध्या में कितनी मुश्किल स्थितियों का सामना करना पड़ा। शाखा संरक्षक डा. सत्येंद्र मित्तल ने प्रोफेसर आर प्रदीप सम्मान पत्र, शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

मंच का संचालन महिला संयोजिका विमलेश गिरी और डा. संगीता सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रदीप वधावन, संजय कालरा, अनिल महेश्वरी, नीरज मित्तल, डा. संगीता सिंह, पीयूष गर्ग, संदीप गुप्ता, मुकुल गर्ग, राधेश्याम गुप्ता, विजय कुमार, संजय, भारत, प्रदीप अग्रवाल, ब्रह्मपाल सैनी, दीपाली, ममता आदि उपस्थिति रहे।

इलैक्ट्रॉनिक यंत्र ले जाने का अनुमति नही देना।

विस्तार से जानकारी दी। रेटोर्नग हान के लिए कहा। उन्होंने बताया कि आरओ टवल लम्बई जाएगी। इस दौरान

उद्घाटन

नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करना है उद्देश्य

## सीबीआरआई में दो दिवसीय 'नैनो जत्था' का शुभारंभ

रुड़की, 12 जुलाई (अनिल) : सीएसआईआर-सीबीआरआई में सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के सहयोग से 'नैनो जत्था' नामक माहत्वपूर्ण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। 'नैनो जत्था' के आयोजन का उद्देश्य नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करना है।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में उद्घाटन सत्र का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया। इस अवसर पर संस्थान निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी के माध्यम से बहुत सी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। हमारा संस्थान विभिन्न प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान एवं विकास

में नैनो प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहा है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी में दुनिया को बदलने की ताकत है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के निदेशक प्रो. वीएसवी प्रसाद का इस नैनो जत्था के आयोजन में नोडल अधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रशंसा की।

सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के डा. आशुतोष सिंह ने सीईएनएस के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के समन्वयक एवं मुख्य वैज्ञानिक डा. एसआर कराडे ने इस दो दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। कार्यक्रम का संयोजन संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद द्वारा



कार्यक्रम में मंचालीन अतिथि। (लौपक)

किया गया और इंजीनियर आशीष पिप्पल ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक,

विभिन्न क्षेत्रों के छात्रों, परियोजना स्टाफ, शोधार्थी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर डा. पीसी थपलियाल, डा.

प्रदीप चौहान, सौरभ जैन, डा. ताबीश आलम, सिद्धार्थ सिंह, राजीव शर्मा, मेहर सिंह, समीर आदि उपस्थित रहे।

## सीबीआरआई में शुरू हुआ दो दिवसीय नैनो जत्था कार्यक्रम

» मंदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई में सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज, बेंगलुरु के सहयोग से 'नैनो जत्था' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। 'नैनो जत्था' आयोजन का उद्देश्य नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करना है। नैनो जत्था कार्यक्रम का उद्घाटन सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार द्वारा रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में किया गया। उद्घाटन सत्र का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। संस्थान निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी के माध्यम से बहुत सी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। हमारा संस्थान विभिन्न प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान एवं विकास में नैनो प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहा है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज, बेंगलुरु के निदेशक प्रो. वीएसवी प्रसाद की नैनो जत्था के आयोजन में नोडल अधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका की प्रशंसा की। सेंटर फॉर नैनो एंड



सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के डा. आशुतोष सिंह ने सीईएनएस के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दो दिवसीय कार्यक्रम के समन्वयक एवं मुख्य वैज्ञानिक डा. एसआर कराडे ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। कार्यक्रम का संयोजन संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद द्वारा किया गया। इंजीनियर आशीष पिप्पल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। नैनो जत्था में प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के आकर्षक व्याख्यान, वीडियो शो,

दर्शकों के साथ संवाद सत्र और एक ज्ञानवर्धक प्रदर्शनी शामिल होगी। प्रदर्शनी में लाइव प्रदर्शन होगा जो नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, विभिन्न क्षेत्रों के छात्रों, परियोजना स्टाफ, शोधार्थी शामिल हुए। इस अवसर पर डा. पीसी थपलियाल, डा. प्रदीप चौहान, सौरभ जैन, डा. ताबीश आलम, सोज अलेग्जेंडर, सिद्धार्थ सिंह, राजीव शर्मा, मेहर सिंह, समीर आदि उपस्थित रहे।



# SCIENCE REPORTER

Exploring Science & Technology

[Home](#) [About Us](#) [COVID-19](#) [Features](#) [S&T News](#) [Previous Issues](#) [Competitions](#) [Subscribe](#)

## Highlights

Unveiling the Genius behind Hepatitis C Virus Breakthroughs In Conversation with N

Charles M Rice

## CSIR Initiates the "One Week One Theme" Campaign

Staff



After the successful conduct of the "One Week One Lab" programme by all CSIR laboratories in 2023, Hon'ble Dr Jitendra Singh, the Minister of State (Independent Charge) for Science and Technology and Vice President of CSIR launched the "One Week One Theme" (OWOT) campaign by unveiling its logo on 24 June 2024 at India Habitat Centre, New Delhi. Built on the achievements of the "One Week One Lab", "One Week One Theme" is the brainchild of Dr Jitendra Singh to bring together the efforts at CSIR labs working on similar themes/projects. This will help reduce the overlapping of work, making the best use of the resources.

The main objective of the "One Week One Theme" programme is to highlight the innovative approaches and technological developments of all CSIR labs. The weeklong activities under OWOT focus on each of the eight themes of CSIR. Over the years, CSIR has undertaken various initiatives to transform laboratory research into marketable, value-added...[read more on NOPR](#)

# Dr. Jitendra Singh Launches “One Week One Theme” (OWOT) Campaign

*Dr. Jitendra Singh on June 24, launched "One Week One Theme" (OWOT) campaign showcasing recent success stories of India in different streams of science and technology.*

Posted by [trilok](#) Published On June 25th, 2024



Union Minister of State (Independent Charge) for Science and Technology, Minister of State (Independent Charge) for Earth Sciences, MoS PMO, Department of Atomic Energy, Department of Space, Personnel, Public Grievances and Pensions **Dr. Jitendra Singh on June 24**, launched “**One Week One Theme**” (**OWOT**) campaign showcasing recent success stories of India in different streams of science and technology.

## **Aim of the campaign**

Dr. Jitendra Singh said, **Our aim** is to integrate the efforts of all CSIR labs working on similar projects to reduce overlap and optimize resources. ‘One Week One Theme’ initiative under Council for Scientific and Industrial Research (CSIR) aims to make innovation inclusive for all. Pertinent to mention, ‘One week One Theme’ is the brainchild of Minister Dr. Jitendra Singh. ‘OWOT’ is built on the **legacy and success of the ‘One Week One Lab’ (OWOL)** initiative started last year. OWOL was also made possible under his guidance.

- The **Science and Technology minister** highlighted the aim and objective behind this initiative is to **create awareness among citizens** about the progress and development in Labs, to benefit them giving them new avenues and opportunities for employment, empowering stakeholders such as **MSMEs, Startups, SHGs, scientists**, researchers by integration and collaboration with Industry.



सीएसआईआर-सीबीआरआई में योग करते निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, एसके नेगी, एसके सिंह, हरपाल सिंह व अन्य। -संवाद

महाशय्या प्रताप इंटर कॉलेज सूरजनगर पंचायत वंडेड नगर पंचायत में आयोजित कार्यक्रम में योग शिक्षा के योगाभ्यास कराया। कार्यक्रम में कॉलेज प्रबंधन कुपूर संजोय कुशवाहा, प्रधानाचार्य रंजीता ठाकुर, मनु प्रताप सिंह, राजेंद्र राय, प्रवीण कुशवाहा आदि मौजूद रहे।



## CSIR-CBRI Hosts Industry Meet on Sustainable Construction Using C&D Waste

The Industry Meet organized by CSIR-CBRI emphasized the urgent need for proper coordination, accountability, and awareness in the effective collection, segregation, recycling, and utilization of Construction and Demolition (C&D) wastes, bringing together 75 professionals (government and industry people) to discuss sustainable construction practices and address the challenges posed by India's rapidly growing C&D waste.



The event, held at the India Habitat Center in New Delhi, was graced by esteemed dignitaries including Ar. Rajesh K. Kaushal, Director General of CPWD, as the Chief Guest, and Dr. Sanjay Pant, Deputy Director General of BIS, as the Guest of Honour. In his inaugural address, Ar. Kaushal emphasized the importance of sustainable construction practices that leverage C&D waste, while Dr. Pant highlighted critical standards and regulatory frameworks necessary for sustainable construction, underlining the need for adherence to guidelines for environmental sustainability.

Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI, welcomed participants and stressed the importance of achieving 100% utilization of C&D waste to foster a circular economy. Dr. D.P. Kanungo provided a comprehensive overview of the meet, outlining its agenda and objectives. The event was coordinated by Prof. S.K. Singh, ensuring smooth execution and engagement of participants.

The sustainable management of C&D waste has become a pressing concern in India due to its large volume, negative environmental and societal impacts, lack of recycling infrastructure, and inadequate stakeholder coordination. Despite the annual demand of 45,000 - 50,000 million tonnes of aggregates for infrastructure projects (roads, railways, etc.), and the proven quality of recycled C&D materials, India recycles only 1% of its C&D waste, according to the Center for Science and Environment.



In response to this challenge, the Government of India introduced the Construction and Demolition Waste Management Rules in 2016, the first initiative of its kind to specifically address C&D waste. These rules mandate local authorities to use recycled C&D materials in municipal and government contracts, establish waste management facilities, and encourage proper waste segregation at the source and its channelling to recycling facilities. However, implementation remains inconsistent across states and cities due to financial constraints, lack of technical expertise, and limited public awareness.

Conference discussions revealed that although India has over 70 recycling facilities for C&D debris, the unavailability of waste at plant sites is a concern due to transportation costs and illegal dumping. The supply chain costs of waste acquisition, transportation, and processing are significant challenges owing to the lack of stringent regulations and enforcement.



The Industry Meet featured three panel discussions covering various dimensions of C&D waste management and sustainable construction practices. Experts in the respective fields, including Dr. Shailesh K. Agrawal, ED of BMTPC; Dr. L.P. Singh, DG of NCCBM; and Dr. S.R. Karade, Chief Scientist of CSIR-CBRI, moderated these discussions, fostering insightful exchanges and idea-sharing among participants.

Estimates indicate that India's construction industry generates about 150-500 million tonnes of C&D waste annually, posing challenges such as unauthorized dumping, lack of disposal space, and environmental hazard. Rapid urbanization, booming construction activities, and subsequent demolition processes significantly contribute to this waste generation.



Additional issues include the lack of incentives and awareness about recycling techniques, unavailability of guidelines and enforcement rules, and inadequate coordination among stakeholders (C&D contractors, government engineers, architects, RMC producers, recycling plant owners, etc.). There is also a gap between policy formulation and implementation with local bodies often facing challenges due to limited funds, lack of expertise, and insufficient enforcement mechanisms. Awareness about the importance of C&D waste management and recycling is low among stakeholders, leading to illegal dumping and non-compliance with regulations.



A key suggestion from the event was the creation of a portal for accountability and awareness, where government officials and stakeholders can update information regarding C&D waste generation, utilization, techniques, and recycling plants, making it accessible to all. Proper coordination among stakeholders and increased awareness are essential for the effective collection, segregation, recycling, and utilization of C&D wastes.

Overall, the Industry Meet served as a vital platform for stakeholders to converge, exchange knowledge, and chart a path towards sustainable construction practices leveraging C&D waste effectively.



## सीबीआरआई में दिया पर्यावरण संरक्षण की महत्ता पर जोर



» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीबीआरआई रुड़की में विश्व पर्यावरण दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उत्तराखंड राज्य आपदा न्यूनीकरण प्राधिकरण के सचिव आईएस डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सीबीआरआई के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. नौरज जैन ने सभी के साथ विश्व पर्यावरण दिवस से संबंधित जानकारी साझा की तथा कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप

कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि इस बार पर्यावरण दिवस की थीम, लैंड रेस्टोरेशन डिजिटलफिकेशन और ड्राफ्ट रेसिलियंस है। इसलिए जो जमीन बंजर हो गई है या जो पानी की कमी से रेगिस्तान बन रही है या सूखा पड़ रहा है उसे पुनः ठीक करने की आवश्यकता है। ताकि हम आने वाली पीढ़ियों को एक हरा-भरा प्लेनेट दे सकें। यह तभी संभव हो पाएगा जब हम पर्यावरण संरक्षण की महत्ता को समझेंगे और जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान को बचाने की दिशा में काम करेंगे। मुख्य अतिथि डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा ने

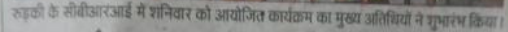
बताया कि बच्चा जब जन्म लेता है तभी से उसे ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है और हम जीवन भर इस पर निर्भर रहते हैं। अतः मनुष्य का जन्म और जीवन पर्यावरण से जुड़ा है और उसे बचाने के लिए हमें पेड़ों की गुलामी भी करनी पड़े तो उसमें कोई गलत बात नहीं है। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण को बचाना है। इस अवसर पर सीबीआरआई ने यूएसडीएमए के साथ एक समझौता पत्र पर भी हस्ताक्षर किया। जिसके अंतर्गत दोनों सरकारी तंत्र आपदा प्रबंधन से संबंधित समस्याओं पर भविष्य में मिलकर काम करेंगे। संस्थान के पूर्व वैज्ञानिक डॉ. शांतनु सरकार ने निदेशक उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक के तौर पर

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस दौरान संस्थान द्वारा निदेशक के नेतृत्व में करीब 200 से अधिक फलदार वृक्ष कैपस में लगाए गए। डॉ. आरके वर्मा ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. सीमित्र मैती, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी, डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. डीपी कानुनगो, डॉ. एसआर कराडे, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. लीना चौरसिया, डॉ. चन्दन मीना, डॉ. नवल किशोर, मेहर सिंह, अपर्ण महेश्वरी आदि उपस्थित रहे।

रहूकी। केन्द्रीय भवन अनुसन्धान संस्थान में शनिवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। संस्थान के रविन्द्र नाथ टैगोर सम्भार में आयोजित समारोह में आईआईटी मद्रास के प्रो. अश्विनीधर मूर्ति मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में मुख्य महा प्रबंधक, एनआरडीसी, कामांडर (सैन) अमिताभ रेस्तोगी रहे। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर समारोह का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस

हमारे देश में पर फोकस करते तथा अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करते जगमगसते तट पट्टेवाले का अवसर देता है। विशिष्ट अतिथि कर्मांडर अमित रस्तोगी ने अपने विकास चक्र करते हुए कहा कि मैं देश के विकास में सीबीआईआई के महत्व को बहुत मानता हूँ। उन्होंने कहा कि सीबीआईआई और उद्योगिका-दूसरे के पूरक हैं। हमें उद्योगों की अपेक्षाओं और जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी होगी। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर

प्रदीप कुमार ने कहा कि आज के दिन हमें यह देखना है कि पिछले वर्ष में हमने क्या पाया है। उन्होंने कहा कि देश ने हमें देश की मूलभूत आवश्यकताओं में से भवन अनुसंधान का विषय दिया है। हमें अपने इस दायित्व को बेहतर ढंग से निभाना है। प्रौद्योगिकी दिवस आजीवन समिति के अध्यक्ष डॉ. पी. कानुनगो ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस माना जाने के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर आर्यो पब्लिक स्कूल-2, माराडी की कनस्थाला पाठशाला तथा वृत्तियुवाविद्यालय के 190 से अधिक छात्रों ने अपने अध्यापकों एवं प्रोफेसर्स के साथ संस्थाओं की प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया तथा संस्थान द्वारा विकसित अनेक प्रौद्योगिकियों से रुबरु हुए। समारोह में संस्था द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों के लाइसेन्सधारियों का भी अभिनन्दन किया गया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप चहान के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी पशवे चन्द, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पीकेएस चेहान, एस्केटी नं.4 की चन्दन स्वरूप मीना, डॉ. वीणा घैथरी, रवीन निजामुल्ला, हुमरा, डॉ. अमन मिस्तान, डॉ.एसएस अली, डॉ. हरपाल शर्मा, नवीन अहमद, किरांती शर्मा, गायत्री, देबेन्द्रा घोष, अवंतीरा कुमार, अमन कुमार, अपर्णा महेश्वरी, मेहर शर्मा, राजेश शर्मा, हुमरा अहसर आदि उपस्थित रहे।



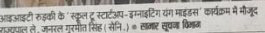
रङ्गकी, संवाददाता। सीबीआरआई में शनिवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस रविन्द्र नाथ टैगोर सभागार में कार्यक्रम हुआ। आईआईटी मद्रास के प्रो. सीबीआर मूर्ति को मुख्य अतिथि आमंत्रित किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में एनआरडीसी से सेवानिवृत्त मुख्य महाप्रबंधक कमांडर अमित रस्तोगी मौजूद रहे।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर सीवीआर मूर्ति ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस हमें अपने लक्ष्यों पर फोकस करने का अवसर देता है। ताकि हम प्रौद्योगिकियों को विकसित करने पर ध्यान दे सकें। साथ ही हमें इस दिन अपने प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करके जनमानस तक पहुंचाना। संस्थान के निदेशक प्रो. आर.प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। विश्व अतिथि कमिटी अमित रतनजी ने कहा कि मेरे क्षेत्र के विश्व ने सीवीआरआई के महत्व को बहुत जाना है। हमें उद्योगों की अपेक्षाओं और मांगों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करने

होगी। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि आज के दिन हमें बड़ा देश बना है। कि पिछले हमें हमने क्या पाया है। उन्होंने कहा कि देश ने हमें देल की मूल्य तुलना आश्चर्यकताओं ने से एक आकाश का जिम्मा दिया है। हमें अपने इस दायित्व को बेहतर ढंग से निभाना है। इस दायित्व आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. डीपी कानुनगो, संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैसाकि प्रो. प्रदीप चौहान, प्रशासक अधिकारी परवेश चन्द, डॉ. अवल मितल, डॉ. एस आर कारी, डॉ. हरपाल सिंह, नदीम अहमद, विनीत सैनी, गावड़ी, देवदत्त शर्मा, अनीश कुमार, अमन कुमार, अरवि महेश्वरी, मेहर सिंह, राजेश शर्मा, हुसैन अतहर आदि उपस्थित थे। मौके पर अमर पब्लिक स्कूल-2, मारवाड़ी कन्वन्शन्स पाठशाला, क्वार्टर यूनिवर्सिटी के 190 से अधिक छात्रों ने अपने अध्यापकों व प्रोफेसरों के साथ संस्थान की वरिष्ठ प्रशासकालय में भी भाग लिया।



भारी व  
रोके, न  
वाहनों



ये विवर्तित किन्ना जू संकेत। इस अवसर पर रायचव्हाल में भारतीय समाज के धार्मिक कर्माचारों के सम्मेलन-इन्हीं परिधिमें उद्भव अन्तर अन्तर किन्ना हमें उनमें उन्के बहुराज्य के लिए सम्मानित किन्ना। इसके बाद उद्भव छात्रों बाद बनारस विविध प्रकार के तकनीकी माला और बाद सोवियत बाद तैयार अन्तर हाथों की प्रदर्शन का अनुवर्तित किन्ना।

इस दृष्टि आइअवटी रङ्गनी दिनेशिक प्रो कृष्ण कुमार उद्भवदिनेशिक प्रो वृष्ण कुमार प्रो वृष्ण कुमार नमनी प्रो अन्तर किन्ना नमवाप और उद्भवदिनेशिक केन्द्र अन्तर हा आ अन्तर, उद्भव सोव हाव के जीअसी मेजर अन्तर अन्तर मेराज उद्भव अन्तर पकि रङ्ग के प्रधानाचार्य संदीप पात रङ्ग लोव नैरुदु।

महाप्रबंधक कमांडर अमित रस्तोगी ने कहा कि नवाचार और तकनीकी के



सिबीआरआइ की ओर से आयोजित कार्यक्रमों  
बखूबी समझ रहे हैं। इस दौरान  
सिबीआरआइ के निदेशक प्रो. आर.  
प्रदीप कुमार, वॉशिंग्टन विश्वविद्यालय  
का प्रदीप चौहान, डा. पिकेयस  
चौहान, डा. चन्दन स्वरूप मीना, डा. फकिरेस  
घोषा चौधरी, नवीन, निरंजन, हुमैया,  
डा. दीपी कानुंगो, डा. अक्लत  
मित्तल, डा. एसआर करंडे, डा.

हरपाल सिंह, नदीम अहमद, विजय  
सैनी, गायत्री, देवदत्त घोष, अमन  
कुमार, अमन कुमार, अर्पण महेर  
मेहर सिंह, राजेश शर्मा समेत  
लोग मौजूद रहे।

हरिद्वार की ओर भी खबरें पड़े

www.jagran.com

कै  
तैना  
होने



INAL TEX



प्रयोगशालाओं का भ्रमण

समारोह संस्थान के रविंद्र नाथ टैगोर

मूर्ति मुख्य आतिथ और विराष्ट आतिथ  
कमांडर अमित रस्तोगी (सेन) मौजूद रहे।

विकसित करनी होगी।

सीवीआर मूर्ति ने कहा कि प्रौद्योगिकी  
कुमार आदि मौजूद रहे।

प्रो. आर प्रदीप कुमार ने मुख्य आतिथ्य का परिचय दिया।

कहा कि हम उद्योगों को अपेक्षाओं और मूलभूत आवश्यकताओं में से एक आवश्यकताओं के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करने दिया है।





# सर्वे करने पहुंची रुड़की की टीम

सिरमौर जिले में भूस्खलन और भूमि धंसाव को लेकर 22 स्थलों का करेगी दौरा

संवाद न्यूज एजेंसी

नाहन। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की उत्तराखंड से मुख्य वैज्ञानिक एवं आचार्य डॉ. डीपी कानूनगो व उनकी वैज्ञानिक टीम जिला सिरमौर में एक सप्ताह के लिए पहुंची है। टीम की ओर से समस्त उपमंडलों पर चिह्नित 22 अति संवेदनशील स्थलों की प्रारंभिक अध्ययन व सर्वेक्षण कार्य किया जाना है ताकि इन स्थलों व उनके आसपास बसी हुई जन आबादी की भविष्य में सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

उपस्थित सिरमौर सुमित खिमटा ने बताया कि टीम की ओर से शुरूआत करते हुए उपमंडल पांवटा साहिब, कफौटा व पच्छाद में चिह्नित स्थलों का सर्वेक्षण व प्रारंभिक अध्ययन कार्य किया गया है। बता दें कि गत वर्ष जिला सिरमौर में मानसून में विभिन्न स्थलों पर बाढ़ फटने, भूस्खलन



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की की टीम चिह्नित स्थलों का दौरा करते हुए। खबर

और भूमि धंसाव के मामले संज्ञान में आए थे जिससे जानमाल एवं पर्यावरण को भारी नुकसान सामने आया था। जिला प्रशासन की ओर से समस्त उप-मंडलों से इस संदर्भ में जानकारी मांगी गई तथा जिसमें की समस्त उपमंडलों की ओर से लगभग 22 ऐसे भूस्खलन और भूमि धंसाव के

स्थलों को चिह्नित करके प्रशासन को भेजा। इसमें उपमंडल नाहन में ग्राम पंचायत नेहली धौड़ा के अंतर्गत ग्राम मलगांव, ग्राम जरग, पंचायत, जरग, ग्राम अगड़ौवाला, ग्राम पंचायत, मातर, ग्राम सिरमाली दयार, ग्राम पंचायत, बिड़ला, उप मंडल-पच्छाद में ग्राम पंचायत नैना टिक्कर (ग्राम मझगांव

शामलाटी) के अंतर्गत थलपा, ग्राम पंचायत नेरी नवा के अंतर्गत भ्रमण स्थल लाना रीना, ग्राम पंचायत नेरी नवा के अंतर्गत चुनार, उप मंडल-राजगढ़ के तहत ग्राम पंचायत शलवाणा के अंतर्गत शलाणा के पास स्थल का निरीक्षण करेगी।

इसके अलावा ग्राम पंचायत, कोटला बंगी के अंतर्गत शलेच कांची, ग्राम पंचायत, कोटिया झाहर (ग्राम कोट-धनमेर) के अंतर्गत कोट, खैरी-ग्राम पंचायत, डिम्बर के अंतर्गत दाक, उपमंडल शिलाई के तहत ग्राम पंचायत, मिस्ताह के अंतर्गत अनेवाला स्थल गनाली, बिंदोली निकट गुमराह (सोलन-मीनस रोड) के अंतर्गत ग्राम पंचायत, अजगैली व उप मंडल-संगड़ के तहत ग्राम पंचायत, राजना के अंतर्गत स्थल उंगरवांडो, ग्राम पंचायत, श्रीनल काकोग के अंतर्गत स्थल बीनाल, ग्राम पंचायत, सांगना के अंतर्गत भ्रमण स्थल गट्टा मंडवाच भी टीम जाएगी।



रुड़की सीबीआरआई में शनिवार को स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन करते अतिथि।

## सीबीआरआई में स्वास्थ्य परीक्षण कैंप

रुड़की। सीबीआरआई में चार दिवसीय स्वास्थ्य परीक्षण कैंप का शनिवार को समापन हो गया। फिनोम इंडिया- सीएसआईआर हेल्थ कोहोर्ट नॉलेजबेस प्रोजेक्ट के अंतर्गत इसका आयोजन किया गया था। कैंप का उद्घाटन मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी ने किया। स्वास्थ्य परीक्षण के अंतर्गत बॉडी कम्पोजिशन एनालिसिस, ब्लड प्रेशर, ब्लड केमिस्ट्री, लिवर फाइब्रो स्कैन, ईसीजी की गई।



from Jaunpur

Neha Shukla  
@timesgroup.com

**Lucknow:** Bahujan Samaj Party is all set to add more spice to the electoral battle in Jaunpur by fielding local strongman and former MP Dhananjay Singh's wife Shrikala from the seat. Earlier, Samajwadi Party had fielded former minister and NRHM scam accused Babu Singh Kushwaha to face BJP's Kripshankar Singh, who was a minister in Congress-led Maharashtra govt.



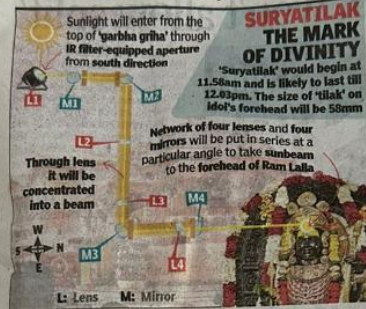
Shrikala is the chairperson of Jaunpur zila panchayat

Kushwaha was a confidante of BSP chief Mayawati before he was arrested for his role in the NRHM scam in 2012.

While Shrikala's candidature is yet to be officially announced, reliable sources told TOI that she had been given the nod by the top party leadership. A picture in which she is standing in front of BSP state headquarters in Lucknow went viral on Monday. Shrikala Reddy, as she was known before marriage, comes from an industrialist family from the South. At present, she is the chairperson of Jaunpur zila panchayat from Apna Dal (S), an alliance partner of the BJP. It was Dhananjay who was planning to contest elections from Jaunpur till he was convicted in a case related to abduction and is now serving a seven-year jail term. Political analysts say that Shrikala's candidature may split the Rajput vote in the constituency and make it a keen triangular contest. Dhananjay Singh as been a former BSP MP from Jaunpur.

**Samal Lari is BSP pick**

## No electronic device or battery used in Ram's 'Suryatilak'



Continued from P 1

The decision would protect the deity from exposure to unwanted heat and irritation.

While muhurta to celebrate the birth of Ram Lalla has been fixed at 12pm and 40 seconds on April 17, the 'Suryatilak' would begin at 11.58am and is expected to last till 12.03 pm.

On Monday, trials were conducted yet again at the Ram temple. The size of the tilak on the forehead of the idol

### TRIALS CONDUCTED AT RAM TEMPLE

would be 58 millimetres.

Bengaluru-based Indian Institute of Astrophysics and private company Optics & Allied Engg (Optica) have collaborated on the project with the group of scientists from CBRI.

Led by Dr SK Panigrahi from CBRI, Dr RS Bisht, professor R Pradeep Kumar among other experts worked on the project. The team from CBRI arrived in Ayodhya ear-

ly on Monday and would remain stationed here till April 17 evening.

The opto-mechanical system would provide the best results during the 'Suryatilak' for a period of 3.5 minutes at the centre of the lord's forehead, while post that, concentrated light would start fading a bit.

Comprising four mirrors and four lenses that have been adjusted inside the brass pipes, black powder has been coated on the inner surface of the pipes, elbows and joints to avoid scattering of the sunlight.

Facing the south direction, the first tilt mechanism placed over the slab on the first floor would divert the sun rays towards the north before being deflected towards the ground floor of the sanctum sanctorum.

Forehead of Ram Lalla faces the east direction. No battery or electronic device has been used in the entire system and it could be operated manually with slight adjustments year after year to organise 'Suryatilak' of the lord on Ram Navami.

## Be alert for Ram Navami: DGP to cops

TIMES NEWS NETWORK

**Lucknow:** Director general of police (DGP) Prashant Kumar has issued comprehensive guidelines to ensure effective police management and traffic arrangements for the upcoming Chaitra Ram Navami celebrations.

The directives aim to maintain peace and order during the festivities and are addressed to all zonal additional director generals of police, police commissioners, inspector generals of police, deputy inspectors general of police and senior superintendents of police across the state. Kumar said that following a review of past festival records, any existing or historical problems should be promptly addressed. Designated police officers with magistrates are in-



An artist giving final touch to an idol of Lord Ram

structed to visit problematic areas and resolve issues. "All gazetted officers are mandated to visit sensitive locations, including temples, fairgrounds and procession routes and make necessary arrangements. Vigilance against mischievous elements is emphasised, with a focus on preventive actions," he said.

He said riot control plans must be rehearsed and anti-sabotage checks are to be conducted at key fairgrounds and temple entrances, with men and women police personnel briefed and assigned duties. Firefighting equipment and vehicles must be available and CCTV cameras, videography teams and drones should be deployed as needed.

# All set for 'Surya tilak' of Ram Lalla in Ayodhya on Ram Navami

[Arunav Sinha](#)

16 April, 2024 08:15 pm IST



Follow Us :  

Lucknow, Apr 16 (PTI) At noon on Ram Navami Wednesday, the Sun's rays will fall on the forehead of Ram Lalla in Ayodhya, a 'Surya tilak' of the deity made possible by an elaborate mechanism involving mirrors and lenses.

This would be the first Ram Navami since the consecration of the Ram idol at the new temple, inaugurated by Prime Minister Narendra Modi on January 22. The system was tested by the scientists on Tuesday.

"The basic objective of the Surya Tilak project is to focus a 'tilak' on the forehead of Shri Ram idol on every Shri Ram Navami day. Under the project, sunlight will be brought on the forehead of Lord Ram at noon on Shri Ram Navami in the Chaitra month every year," Dr S K Panigrahi, scientist at CSIR-CBRI Roorkee, who was associated with the project told PTI.

Elaborating further, Panigrahi said, "The position of the Sun changes every year on the day of Shri Ram Navami. Detailed calculations show that the date of Shri Ram Navami repeats every 19 years." According to a senior scientist of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, the planned tilak size is 58 mm. The exact period of tilak on the forehead centre is about three to three-and-a-half minutes, with two minutes of full illumination, he said.

Meanwhile, a member of Shri Ram Janmabhoomi Teerth Kshetra Trust, Anil Mishra, told PTI, "During the Surya tilak, devotees will be allowed inside the Ram temple. Around 100 LEDs are being put up by the temple



trust, and 50 by the government, which will show the Ram Navami celebrations. People will be able to see the celebrations from where they are present.” Sharing his personal experience in installing this unique mechanism, Dr D P Kanungo, chief scientist at CSIR-CBRI, Roorkee said, “Actually this is meticulously planned, designed and implemented to achieve utmost accuracy.” This will be a testament to our scientific acumen and indigenous technological development to showcase before our countrymen who have all the faith in and support to our scientific community, he said.

Asked what will happen to Surya tilak in case of a cloudy sky, Kanungo said, “That’s the limitation. We don’t wish to do with artificial light because of the faith and belief of our people.” In consultation with the Indian Institute of Astrophysics (IIA), Bangalore, the CSIR-CBRI, Roorkee team has developed a mechanism for a 19-year period to steer the sunlight from the third floor of the temple to the ‘garbhagriha’.

The detailed complete design to bring the sunlight to the garbhagriha is developed by CBRI, with the IIA providing consultancy for the optical design.

The fabrication of optical elements, pipes, tilt mechanism and other related components are carried out by Optics and Allied Engg Pvt Ltd (Optica), a Bangalore-based company.

Before implementing the opto-mechanical system in the Ram temple for Surya tilak, a scaled down model suitable for the Roorkee locality has been successfully validated. A full scale model has been successfully validated at Optica site at Bangalore in March 2024.

The CSIR-CBRI, Roorkee team along with IIA Bangalore and Optica Bangalore completed the installation in the first week of April, and repeated trials have been done, Panigrahi said.

Meanwhile, explaining the opto-mechanical system for Surya tilak, Panigrahi said, “The opto-mechanical system consists of four mirrors and four lenses fitted inside the tilt mechanism and piping systems. The complete cover with aperture for the tilt mechanism is placed at the top floor to divert the Sun rays through mirrors and lenses to the garbhagriha.” “The final lens and mirror focus the Sun rays to the forehead of Shri Ram facing towards the east. The tilt mechanism is used to adjust the first mirror tilting for sending the Sun rays towards the north direction to the second mirror for making the Surya tilak every year on Shri Ram Navami day,” he said.

“All the piping and other parts are manufactured using the brass material. The mirrors and lenses which are used are of very high quality and durable to sustain for a long period.

“The inner surface of pipes, elbows and enclosures are black powder coated to avoid scattering of sunlight. Also at the top aperture, IR (infra red) filter glass is used to restrict the Sun heat wave to fall on the forehead of the idol,” Panigrahi said.

He said the team from CSIR-CBRI Roorkee includes Dr S K Panigrahi, Dr R S Bisht, Kanti Solanki, V Chakradhar, Dinesh and Sameer. Prof R Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI) mentored the project.

From IIA Bangalore side, Dr Anna Purni S (Director IIA), Er S Sriram and Professor TusharPrabhu are the consultants. RajinderKotaria, managing director, Optica, and his team Nagraj, Vivek, Thava Kumar were actively involved in fabrication and installation part. PTI NAV KSS KSS

## All set for 'Surya tilak' of Ram Lalla in Ayodhya on Ram Navami

**PTI Updated: April 16, 2024 20:11 IST**

Lucknow, Apr 16 (PTI) At noon on Ram Navami Wednesday, the Sun's rays will fall on the forehead of Ram Lalla in Ayodhya, a 'Surya tilak' of the deity made possible by an elaborate mechanism involving mirrors and lenses.

This would be the first Ram Navami since the consecration of the Ram idol at the new temple, inaugurated by Prime Minister Narendra Modi on January 22. The system was tested by the scientists on Tuesday.

"The basic objective of the Surya Tilak project is to focus a 'tilak' on the forehead of Shri Ram idol on every Shri Ram Navami day. Under the project, sunlight will be brought on the forehead of Lord Ram at noon on Shri Ram Navami in the Chaitra month every year," Dr S K Panigrahi, scientist at CSIR-CBRI Roorkee, who was associated with the project told PTI.

Elaborating further, Panigrahi said, "The position of the Sun changes every year on the day of Shri Ram Navami. Detailed calculations show that the date of Shri Ram Navami repeats every 19 years."

According to a senior scientist of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, the planned tilak size is 58 mm. The exact period of tilak on the forehead centre is about three to three-and-a-half minutes, with two minutes of full illumination, he said.

Meanwhile, a member of Shri Ram Janmabhoomi Teerth Kshetra Trust, Anil Mishra, told PTI, "During the Surya tilak, devotees will be allowed inside the Ram temple. Around 100 LEDs are being put up by the temple trust, and 50 by the government, which will show the Ram Navami celebrations. People will be able to see the celebrations from where they are present."

Sharing his personal experience in installing this unique mechanism, Dr D P Kanungo, chief scientist at CSIR-CBRI, Roorkee said, "Actually this is meticulously planned, designed and implemented to achieve utmost accuracy." This will be a testament to our scientific acumen and indigenous technological development to showcase before our countrymen who have all the faith in and support to our scientific community, he said. Asked what will happen to Surya tilak in case of a cloudy sky, Kanungo said, "That's the limitation. We don't wish to do with artificial light because of the faith and belief of our people."

In consultation with the Indian Institute of Astrophysics (IIA), Bangalore, the CSIR-CBRI, Roorkee team has developed a mechanism for a 19-year period to steer the sunlight from the third floor of the temple to the 'garbhagriha'.

The detailed complete design to bring the sunlight to the garbhagriha is developed by CBRI, with the IIA providing consultancy for the optical design. The fabrication of optical elements, pipes, tilt mechanism and other related components are carried out by Optics and Allied Engg Pvt Ltd (Optica), a Bangalore-based company.

Before implementing the opto-mechanical system in the Ram temple for Surya tilak, a scaled down model suitable for the Roorkee locality has been successfully validated. A full scale model has been successfully validated at Optica site at Bangalore in March 2024.

The CSIR-CBRI, Roorkee team along with IIA Bangalore and Optica Bangalore completed the installation in the first week of April, and repeated trials have been done, Panigrahi said. Meanwhile, explaining the opto-mechanical system for Surya tilak, Panigrahi said, "The opto-mechanical system consists of four mirrors and four lenses fitted inside the tilt mechanism and piping systems. The complete cover with aperture for the tilt mechanism is placed at the top floor to divert the Sun rays through mirrors and lenses to the garbhagriha." "The final lens and mirror focus the Sun rays to the forehead of Shri Ram facing towards the east. The tilt mechanism is used to adjust the first mirror tilting for sending the Sun rays towards the north direction to the second mirror for making the Surya tilak every year on Shri Ram Navami day," he said.

"All the piping and other parts are manufactured using the brass material. The mirrors and lenses which are used are of very high quality and durable to sustain for a long period. "The inner surface of pipes, elbows and enclosures are black powder coated to avoid scattering of sunlight. Also at the top aperture, IR (infra red) filter glass is used to restrict the Sun heat wave to fall on the forehead of the idol," Panigrahi said. He said the team from CSIR-CBRI Roorkee includes Dr S



K Panigrahi, Dr R S Bisht, Kanti Solanki, V Chakradhar, Dinesh and Sameer. Prof R Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI) mentored the project.

From IIA Bangalore side, Dr Anna Purni S (Director IIA), Er S Sriram and Professor TusharPrabhu are the consultants. RajinderKotaria, managing director, Optica, and his team Nagraj, Vivek, Thava Kumar were actively involved in fabrication and installation part.

# भूकंप के मद्देनजर घर बनाने के तरीके बताए

नाहन में केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञों ने दी उपयोगी जानकारी, संभावित आपदा पर दिए टिप्स

दिव्य हिमाचल ब्यूरो - नाहन

जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर द्वारा मंगलवार को नाहन में संभावित आपदा के दृष्टिगत भवनों की रिपेयर और रेट्रोफिटिंग पर एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एलआर वर्मा ने इस कार्यशाला की अध्यक्षता बतौर मुख्यातिथि की। एलआर वर्मा ने इस अवसर पर कहा कि केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में चलाए जा रहे इस एक दिवसीय कार्यशाला से सिरमौर जिला में विस्तृत संभावित



आपदा के दृष्टिगत नए भवनों के निर्माण और पुराने भवनों की रेट्रोफिटिंग पर अच्छी और मूल्यवान जानकारी साझा की गई है। एलआर वर्मा ने कहा कि हिमाचल आज भी चार अप्रैल,

1905 को कांगड़ा में आया भूकंप नहीं भूला है, जिसमें करीब 20 हजार लोगों की जानें गई थी। इसके साथ ही लगभग 50 हजार मवेशी तथा एक लाख से अधिक घर पूरी तरह से नष्ट हो गए थे तथा लाखों

रुपए का नुकसान आंका गया था। उन्होंने कहा कि आज के संदर्भ में यदि बात करें तो जानमाल के नुकसान का यह आंकड़ा लाखों में हो सकता है। एलआर वर्मा ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से आए विशेषज्ञों का सिरमौर पधारने पर आभार जताया और आशा जताई कि उनके मार्गदर्शन में जिला में विभिन्न विभागों में इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कार्यरत तकनीकी अधिकारियों को इस कार्यशाला से लाभ मिलेगा। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से इस कार्यशाला का लाभ उठाने का आग्रह किया तथा सभी से इस

बहुमूल्य जानकारी को अपने सहयोगियों एवं विभाग के विशेषज्ञों के साथ भी साझा करने का आग्रह किया।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञ आर्किटेक्ट एसके नेगी, डा. अजय चौरसिया, आशीष कपूर ने आपदा के दृष्टिगत नए भवनों की निर्माण प्रक्रिया के विभिन्न तकनीकी स्तरों जैसे प्लान, मैटीरियल आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। उन्होंने पुराने भवनों की रिपेयर और रेट्रोफिटिंग के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके साथ ही उन्होंने भूकंप के दृष्टिगत जिला में विस्तृत

परियोजना रिपोर्ट बनाने के संबंध में भी तकनीकी ज्ञान प्रतिभागियों को प्रदान किया, ताकि एक अच्छी एवं प्रभावशाली विस्तृत परियोजना रिपोर्ट जिला में तैयार की जा सके। जिला राजस्व अधिकारी चेतन चौहान ने कार्यशाला का संचालन करते हुए विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान की। कार्यशाला में आपदा प्रबंधन, लोक निर्माण, जल शक्ति विभाग, नगर एवं ग्राम योजनाकार, विद्युत विभाग, स्वास्थ्य, हिमूडा, ग्रामीण विकास, शहरी निकाय, पंचायती राज विभागीय अधिकारियों ने भाग लिया। जानकारी हासिल की।

## नए भवनों की निर्माण प्रक्रिया के बारे में दी विस्तृत जानकारी

नाहन में भवनों की मरम्मत और निर्माण तकनीक पर हुई कार्यशाला



नाहन में जिला स्तरीय कार्यशाला की अध्यक्षता करते अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एलआर वर्मा। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

**नाहन।** जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर ने मंगलवार को नाहन में संभावित आपदा के दृष्टिगत भवनों की मरम्मत और निर्माण तकनीक पर एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया।

इसकी अध्यक्षता बतौर मुख्यातिथि अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एलआर वर्मा ने की।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में चलाई जा रही इस कार्यशाला से जिले में विस्तृत संभावित आपदा के दृष्टिगत नए भवनों के निर्माण और

**केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से आए विशेषज्ञ हुए शामिल**

पुराने भवनों की मरम्मत पर अच्छी और मूल्यवान जानकारी साझा की गई।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञ आर्किटेक्ट एसके नेगी, डा. अजय चौरसिया, आशीष कपूर ने आपदा के दृष्टिगत नए भवनों की निर्माण प्रक्रिया के विभिन्न तकनीकी स्तरों जैसे प्लान, सामग्री आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

उन्होंने पुराने भवनों की मरम्मत और निर्माण तकनीक के बारे में भी

विस्तार से बताया। इसके साथ ही उन्होंने भूकंप के दृष्टिगत जिले में विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने के संबंध में भी तकनीकी ज्ञान प्रतिभागियों को प्रदान किया ताकि एक अच्छी एवं प्रभावशाली विस्तृत परियोजना रिपोर्ट जिले में तैयार की जा सके।

जिला राजस्व अधिकारी चेतन चौहान ने कार्यशाला का संचालन करते हुए विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान की। इस मौके पर आपदा प्रबंधन, लोक निर्माण, जल शक्ति विभाग, नगर एवं ग्राम योजनाकार, विद्युत विभाग समेत अन्य विभागों के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।